तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष-7, अंक- 4, मार्च 2019, मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

महकी बगिया खिल गए फूल
आओ हम सब चलें स्कूल

सरस्वती वंदना

हे माँ शारदे, हे माँ शारदे।
हे माँ शारदे, हे माँ शारदे।।
हे विद्यादायिनी, हे वीणापाणि।
हे माँ शारदे, हे माँ शारदे।।
चिंतन का सार रूप, ज्ञान का आधार रूप
श्वेत-वस्त्र धारण कर, अज्ञान का संहार रूप
हे श्वेतांबरी, हे वागेश्वरी।
हे माँ शारदे, हे माँ शारदे।।
मुस्कान से उल्लास बोध, वीणा से भाव संचार
पुस्तक से ज्ञान बोध, माला से ईश-सत्कार
हे ज्ञान प्रदायिनी, हे अक्षरादायिनी।
हे माँ शारदे, हे माँ शारदे।।
वेद की पावन ऋचाओं में, रामायण-महाभारत में
प्रकृति के वरदान में, देव निर्मित धरा में
हे अन्नवती, हे उदकवती।
हे माँ शारदे, हे माँ शारदे।।
कलम-शब्दसृजन, भाव-अनूपसृजन
शक्ति-सत्यसृजन, नवल-रूपसृजन
हे वेद स्मृति, हे वेदवती।
हे माँ शारदे, हे माँ शारदे।।

मनोज कुमार लाकड़ा
हिंदी अध्यापक
रा व मा विद्यालय, बजघेड़ा
जिला गुरुग्राम

तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

मार्च 2019

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल खट्टर
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
रामबिलास शर्मा
शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
पी के दास
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
डॉ.राकेश गुप्ता
महानिदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

डी के बेहेरा
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

के के भादू
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन-II),
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिज़ाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Dilbag Singh on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by delhi press patra prakahsna Pvt. Ltd. at its printing press PSPC Press 50, DLF Industrial Estate,

Faridabad- 121003,(Haryana)

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"जीवन में बस वही वास्तविक असफलता है जिससे आपने सीख नहीं ली"

- विज्ञान के प्रति रुझान बढ़ा रही हैं अटल टिंकरिंग लैब्स 5
- म्हारा हरियाणा सक्षम हरियाणा 6
- सफलता की नई इबारत लिखी 'स्पोर्ट्स फॉर ऑल' कार्यक्रम ने 8
- मधुर यादें दे गया अन्तरराष्ट्रीय एडवेंचर कैंप 10
- अविस्मरणीय रहा विज्ञान नगरी कपूरथला का भ्रमण 14
- एक कर्मयोगी शिक्षक सियाराम शास्त्री 15
- 'बेटी बचाओ और पर्यावरण संरक्षण' की अनूठी पहल 16
- सोच समझ कर करें संकाय का चयन 17
- पर्यायवाची और विलोमार्थी शब्दों की अवधारणा : एक प्रयोग 18
- भाषा शिक्षण में डिकोडिंग एक अहम तत्त्व 21
- बच्चे और किताबों की दुनिया 22
- नृत्य कला ने जगाया गज़ब का आत्मविश्वास : नेहा रानी 25
- खेल-खेल में सिखाएँ विज्ञान 26
- जैसे संस्कार वैसा जीवन 30
- माइक्रोस्कोप 31
- How Haryana transformed dismal student learning... 32
- HOW JHAJJAR BECAME HARYANA'S FIRST SAKSHAM... 36
- Enlighten the greatness hidden inside you... 39
- Here comes the sun(set) 40
- Examinations- A part of Life 44
- A Soldier 45
- What are the benefits of Soorya Namaskar... 46
- Aerial Yoga: The latest way to stay strong... 47
- Quiz 49
- आपके पत्र 50

मुखपृष्ठ चित्र: प्रदीप मलिक

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

कोई न रहे शिक्षा के अधिकार से वंचित

प्रदेश सरकार ने शिक्षा के संबंध में यही लक्ष्य रखा है कि हर बालक को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले और इसके साथ ही कोई भी बालक अपने शिक्षा के अधिकार से वंचित न रहे। इस लक्ष्य की ओर ध्यान केंद्रित करते हुए अब प्रदेश के शत-प्रतिशत बालकों का विद्यालयों में दाखिला सुनिश्चित करने तथा बच्चों के शिक्षा के अधिकार को साकार रूप देने के लिए 'प्रवेश उत्सव' नामक व्यापक दाखिला अभियान आरंभ किया जा रहा है। इस उत्सव का मुख्य उद्देश्य पहली कक्षा में शत-प्रतिशत बच्चों का दाखिला, पाँचवीं से छठी, आठवीं से नौवीं तथा दसवीं से ग्यारहवीं कक्षाओं में उनका प्रवेश सुनिश्चित करना है।

इसके अलावा सत्र के आरंभ में ही कैचअप कार्यक्रम, गुणवत्ता संवर्धन कार्यक्रम, कक्षा तत्परता कार्यक्रम भी चलाए जाने हैं। 1 से 15 मई तक कैचअप कार्यक्रम चलेगा, जिसे स्किल पास बुक के आधार पर चलाया जाएगा। सत्रारंभ में विद्यार्थियों की सीखने संबंधी कमियों को पहचान कर उन्हें दूर करने के लिए व्यापक प्रयास किए जाएँगे। यह एक प्रकार का गुणवत्ता संवर्धन कार्यक्रम होगा। इस बार तो मंडल स्तर पर भव्य समारोह आयोजित हो रहे हैं जहाँ विद्यालयों के द्वारा बनाए गए मॉडल, चित्र आदि प्रदर्शित किए जा रहे हैं। माननीय अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय, माननीय महानिदेशक माध्यमिक शिक्षा, माननीय निदेशक मौलिक शिक्षा तथा अन्य अधिकारीगण इन मंडल स्तरीय कार्यक्रमों में जॉयफुल सैटरडे, प्रवेश उत्सव, स्किल पास बुक, कैचअप कार्यक्रम, क्विज़ क्लब और दस्तक आदि कार्यक्रमों के नव सत्र में सार्थक आयोजन के विषय में जागरूक कर रहे हैं। यानी, सत्र के आरंभ में ही विभाग ने पूरी कटिबद्धता से शिक्षा में गुणवत्ता लाने, शिक्षा को मनोरंजक बनाने तथा नवाचार के द्वारा विद्यार्थियों के सीखने के स्तर को उन्नत करने का विशद कार्यक्रम बना लिया है। आशा है उतनी ही प्रतिबद्धता, जोश व उत्साह के साथ आप भी अपने विद्यालयों में इन्हें लागू करेंगे। अपने अनुभव, विचार हमें नियमित रूप से भेजते रहें। आपकी प्रतिक्रियाओं की हमें सदा प्रतीक्षा रहती है।

-संपादक

विज्ञान के प्रति रुझान बढ़ा रही हैं अटल टिंकरिंग लैब्स

प्रदेश के विद्यालयों के विद्यार्थी अटल टिंकरिंग लैब से लाभान्वित हो रहे हैं। प्रदेश के लगभग दो सौ विद्यालयों में ये लैब या तो स्थापित हो चुकी हैं या स्थापना की प्रक्रिया में हैं। इस सुविधा का लाभ हाई स्कूलों के साथ-साथ सीनियर सैकेंडरी स्कूलों को भी दिया जा रहा है। बीते दिनों नूँह जिले के फिरोजपुर में स्थित जेबीटी संस्थान में जिले में इस कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

निदेशालय के कार्यक्रम अधिकारी डॉ.अजय कुमार ने 'शिक्षा सारथी' को बताया कि नीति आयोग द्वारा नूँह जिले को शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़े जिलों में रखने के कारण यहाँ के विद्यार्थियों को इस सुविधा ने लाभान्वित किया गया है। वैसे यह योजना प्रदेश में पहले से चल रही है। 2017-18 से पहले बहुत कम राजकीय विद्यालयों में ये लैब दी गई थीं, लेकिन अब इनकी संख्या लगातार बढ़ रही है। 7 मार्च 2019 को भारत सरकार के नीति आयोग ने जो सूची जारी की है उसके अनुसार पूरे देश में 3,437 विद्यालयों को पहले राउंड में इन प्रयोगशालाओं की स्थापना के लिए चुना गया है, जिनमें हरियाणा के भी अनेक विद्यालय शामिल हैं।

उन्होंने बताया कि नीति आयोग ने अटल इनोवेशन मिशन के तहत अटल टिंकरिंग लैब्स की शुरुआत की है। इस लैब के जरिए स्कूली बच्चों को नई तकनीक से आधुनिक उपकरण बनाने की ट्रेनिंग दी जा रही है। उन्होंने कहा कि बच्चों में नई सोच पैदा करने की जरूरत को पूरा करने के लिए अटल टिंकरिंग लैब योजना की शुरुआत की है। यह योजना बच्चों में क्रिएटिविटी पैदा कर रही है। स्कूल में बच्चों को लैब में एक घंटा दिया जाता है। प्रदेश में अभी तक 187 स्कूलों को इस लैब की सौगात दी गई, जिनमें 59 सरकारी व अन्य प्राइवेट स्कूल शामिल हैं। वहीं नूँह जिले के आठ स्कूलों में अटल टिंकरिंग लैब चल रही हैं, जिनमें तीन सरकारी व पाँच निजी स्कूल शामिल हैं।

नूँह जिले में इस कार्यक्रम को चलाने में एसआरएफ फाउंडेशन द्वारा स्कूली अध्यापकों को ट्रेनिंग दी जाएगी। जल्द ही स्कूलों में लैब स्थापित करने का कार्य प्रारंभ किया जाएगा। इस मौके पर जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. दिनेश शास्त्री, जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी कपिल पूनिया, नूँह के खंड शिक्षा अधिकारी अब्दुल मजीद, डिप्टी डीईईओ सुदेश राघव, मुफीद अहमद प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर, विजय प्रतीक व एहतेशामुद्दीन सहित सैकड़ों अध्यापक मौजूद रहे।

बच्चों में बढ़ेगी जागरूकता- आयोग द्वारा अटल टिंकरिंग लैब संचालित करने का उद्देश्य स्कूली बच्चों की इलेक्ट्रॉनिक्स के प्रति रुचि जागृत करना और आधुनिक इलेक्ट्रानिक्स उपकरणों की जानकारी देना है। कार्यक्रम में अटल टिंकरिंग लैब में रोबोटिक इलेक्ट्रानिक्स, ड्रोन, 3-डी प्रिंटर, इलेक्ट्रिकल व मैकेनिकल मेजरिंग सहित टूल्स सेफ्टी की जानकारी जा रही है।

हर स्कूल को मिलेगी 20 लाख रुपये की राशि- लैब के लिए हर स्कूल को सरकार द्वारा 20 लाख रुपये की राशि दी जा रही है, जिसमें 10 लाख रुपये प्रारंभ में लैब स्थापित करने के लिए व 10 लाख रुपये अगले पाँच वर्ष तक लैब का रखरखाव करने पर खर्च किए जाते हैं।

95 स्कूलों के शिक्षक व शिक्षिकाओं को दी ट्रेनिंग- अटल टिंकरिंग लैब की शुरुआत पर शिक्षकों के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया था, जिसमें जिले के 95 हाई व सीनियर सेकेंडरी स्कूलों के शिक्षक व शिक्षिकाओं को ट्रेनिंग दी गई, जिससे वह स्कूलों में बच्चों को अच्छी जानकारी के साथ रोबोट बनाना, चलाना और 3-डी प्रिंटर चलाना सिखा सकें। शिक्षकों ने भी अटल टिंकरिंग लैब की बारीकियाँ समझीं। शिक्षक-शिक्षिकाओं ने इसे छात्रों के लिए वरदान बताया है।

- शिक्षा सारथी डेस्क

म्हारा हरियाणा सक्षम हरियाणा

विद्यालय शिक्षा के इतिहास में जुड़ा नया अध्याय, 68 नये खंड हुए 'सक्षम', 'सक्षम' खंडों की संख्या हुई 94, नीति आयोग ने की प्रदेश के प्रयासों की सराहना

डॉ. प्रदीप राठौर

हरियाणा के स्कूली शिक्षा के इतिहास में उस समय एक नया अध्याय जुड़ गया जब फरवरी माह के अंतिम दिन शिक्षा गुणवत्ता में 68 नए खंड सक्षम बने। एक साथ राज्य के 68 नए खंडों को 'सक्षम खंड' होने की घोषणा की गई। यह अद्भुत उपलब्धि शिक्षा की गुणवत्ता के क्षेत्र में प्राप्त की गई है। अब हरियाणा के सरकारी स्कूलों के 80 प्रतिशत विद्यार्थी अपने ग्रेड लेवल को प्राप्त कर सक्षम बनने में सफल हुए हैं। नीति आयोग ने भी हरियाणा के इस लर्निंग-लेवल कदम की राष्ट्रीय स्तर पर सराहना करते हुए अन्य राज्यों को अनुसरण करने की सलाह दी है।

प्रदेश में इस अभियान के तहत काफी सराहनीय कार्य हुआ है। तेजी से खंड 'सक्षम' हो रहे हैं। गौरतलब है कि 'सक्षम खंड' के तहत जो खंड चुने गए हैं उनका अगले वर्ष फिर टैस्ट लिया जाएगा ताकि उनके लर्निंग लेवल को बनाए रखा जा सके। इस अभियान को सफल बनाने में सराहनीय भूमिका निभाने वाले अध्यापकों को जिला स्तर पर कार्यक्रम आयोजित करके सम्मानित किया गया है।

यह प्रदेश के लिए अत्यधिक गौरव की बात है कि नीति आयोग ने भी हरियाणा के इस लर्निंग-लेवल को बढ़ाने के कदम की सराहना की है तथा अन्य राज्यों को इसका अनुसरण करने की सलाह दी है।

हरियाणा स्कूल शिक्षा विभाग के प्रवक्ता ने बताया कि सक्षम अभियान के तहत पहले खंड, फिर जिला और उसके बाद पूरे राज्य को सक्षम करने का लक्ष्य है। इसके तहत सरकारी स्कूलों की तीसरी, पाँचवीं व सातवीं कक्षा के बच्चों का हिंदी भाषा व गणित विषय में उनकी कक्षा के अनुसार प्राप्त स्तर का आकलन किया गया है। 'लर्निंग एनहांसमैंट प्रोग्राम' के तहत शिक्षा को गुणवत्तापरक बनाया जा रहा है और नकल को रोक कर स्टूडेंट-एसेसमैंट-टैस्ट में सुधार किया जा रहा है, समीक्षा तथा आकलन करने की तकनीक को मजबूत किया जा रहा है। अगर किसी खंड को यह लगता है कि उसके 80 प्रतिशत विद्यार्थी अपने ग्रेड-लेवल को हासिल कर चुके हैं तो वह अपने आप को 'सक्षम घोषणा' के तहत नोमिनेट

कर देता है। इसके बाद थर्ड-पार्टी एसेसमेंट के माध्यम से उनके नोमिनेशन की जाँच की जाती है।

उन्होंने बताया कि जाँच के लिए साइंटिफिक सैंपलिंग तरीके से कुछ ऐसे स्कूलों का चयन किया जाता है जिनसे ग्रामीण, शहरी, लड़कियों, लडक़ों, प्राइमरी व माध्यमिक स्कूलों की समान रूप से भागीदारी हो जाती है। थर्ड पार्टी एसेसमेंट के आधार पर निर्णय किया जाता है कि वह खंड 'सक्षम खंड' बन गया या नहीं।

उन्होंने बताया कि इससे पहले 26 खंड 'सक्षम खंड' बन चुके हैं तथा अब सातवें मेगा राउंड में 68 नए 'सक्षम खंड' बनने के बाद इनकी कुल संख्या 94 हो गई है। हालांकि 14 खंड ऐसे हैं जो कि मामूली मार्जिन से 'सक्षम खंड' बनने से चूक गए। कुल 93 खंडों में 'सक्षम खंड' श्रेणी के तहत आकलन किया गया था। राज्य के शेष बचे 25 खंडों को 'सक्षम खंड' बनाने का लक्ष्य मई 2019 रखा गया है।

उन्होंने मेगा राउंड की जानकारी देते हुए बताया कि लगभग 200 जिला एवं खंड शिक्षा अधिकारियों की अहम बैठकें हुईं। इसके अलावा 450 मैंटर्स जुड़े हुए थे। मैंटर्स तथा मॉनिटरों द्वारा करीब 28,000 स्कूल-विजिट की गईं। 12 फरवरी 2019 को हुए आकलन टैस्ट में 4,700 स्कूलों के 1.9 लाख विद्यार्थी शामिल हुए। नकल-रहित संचालन के लिए 6,000 निरीक्षकों की ड्यूटी लगाई गई। परीक्षा के दिन 1800 से अधिक स्कूलों में 2600 से ज्यादा मॉनिटरिंग-विजिट्स की गईं।

जिला स्तर पर सम्मान समारोह-

सक्षम में श्रेष्ठ कार्य करने वालों को जिला स्तर पर सम्मानित किया गया। नूँह जिले में आयोजित ऐसे ही एक कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि बोलते हुए वहाँ के अतिरिक्त उपायुक्त श्री राहुल हुड्डा ने कहा कि उनके जिले के दो खंड सक्षम हो गए हैं। उन्होंने उन शिक्षकों को बधाई दी जिनके कठिन परिश्रम की बदौलत ऐसा संभव हो पाया। उन्होंने कहा कि बदले समय में मात्र रट कर और प्रमाण पत्र हासिल करके जीवन में सफल नहीं हुआ जा सकेगा। बच्चों की समझ विकसित करके ही उनका समुचित विकास किया जा सकता है।

यमुनानगर जिले के तीन खंड सढौरा, बिलासपुर व रादौर के सक्षम होने पर व दो खंड जगाधरी व सरस्वती नगर को सक्षम के निकट होने पर वहाँ की उपायुक्त आमना तस्नीम ने बधाई दी। इस उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में उन्होंने कहा कि जो जज्बा सक्षम बनाने के लिए रहा है वैसा ही सक्षम प्लस के दौरान बनाए जाने की आवश्यकता है।

करनाल जिले में कल्पना चावला राजकीय मेडिकल कॉलेज के सभागार में आयोजित समारोह में वहाँ के उपायुक्त विनय प्रताप सिंह ने शिक्षकों का आह्वान किया कि वे जिले को सक्षम प्लस बनाने का संकल्प लें। उन्होंने कहा कि शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाना प्रत्येक शिक्षक का दायित्व है। स्टार अध्यापक दूसरे अध्यापकों को भी जागरूक करें ताकि पूरा जिला सक्षम प्लस बन जाए। कार्यक्रम में हर खंड के 50-50 अध्यापकों को सम्मानित किया गया।

राजकीय प्राथमिक पाठशाला बारवा, खंड थानेसर, जिला कुरुक्षेत्र में प्राथमिक शिक्षक के रूप में सेवारत सुनील पुलस्त्य ने बताया कि 6 मार्च को एक भव्य समारोह में उन्हें सक्षम कार्यक्रम में अपने योगदान के लिए सम्मानित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा कि यह सम्मान निश्चित रूप से उन्हें और उन जैसे तमाम अध्यापकों को और अधिक मेहनत से अपने कर्त्तव्य में लीन होने की प्रेरणा देगा।

drpradeeprathore@gmail.com

सक्षम प्लस की तैयारी

सक्षम के बाद सक्षम प्लस की तैयारी आरंभ हो चुकी है। सक्षम प्लस का पहला आकलन गत माह में किया गया है। नोमिनेशन के आधार पर पाँच खंडों का आकलन किया गया। ये है- बौंद कला (चरखी दादरी), बेरी और मातनहेल (झज्जर), अटेली (महेंद्रगढ़) तथा सांपला (रोहतक)। इनमें से रोहतक जिले के सांपला खंड को सक्षम प्लस घोषित किया है। इसका अर्थ यह है कि यहाँ के राजकीय विद्यालयों के 80 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थी अंग्रेजी विषय में अपने ग्रेड के मुताबिक दक्षता रखते हैं। अन्य 4 खंडों का प्रदर्शन भी सराहनीय रहा है। वे भी सक्षम प्लस के निकट रहे हैं। उपायुक्त डॉ. यश गर्ग के नेतृत्व में जिले में काम कर रही पूरी टीम को बधाई।

डॉ. राकेश गुप्ता
महानिदेशक
माध्यमिक शिक्षा विभाग

सफलता की नई इबारत लिखी 'स्पोर्ट्स फॉर ऑल' कार्यक्रम ने

खेल, बच्चे की स्वाभाविक क्रिया है। भिन्न-भिन्न आयु वर्ग के बच्चे विभिन्न प्रकार के खेल खेलते हैं। ये विभिन्न प्रकार के खेल बच्चों के सम्पूर्ण विकास में सहायक होते हैं। खेल से बच्चों का शारीरिक विकास, संज्ञानात्मक विकास, संवेगात्मक विकास, सामाजिक विकास एवं नैतिक विकास को बढ़ावा मिलता है। वाइगोत्स्की के अनुसार - जटिल भूमिकाओं वाले खेलों में बच्चों को अपने व्यवहार को संगठित करने का बेहतर व सुरक्षित अवसर मिलता है जो सामान्य स्थितियों में नहीं मिलता। इस तरह खेल बच्चे के लिए निकट विकास का क्षेत्र बनाते हैं।

महेंद्रगढ़ जिला शिक्षा की दृष्टि से हरियाणा के सबसे बेहतर जिलों में गिना जाता है। यहाँ के 5 में से 4 ब्लॉक सक्षम घोषित हो चुके हैं। अतः इस दृष्टि से शिक्षा विभाग महेंद्रगढ़ ने सुशासन सहयोगी हिमांशु गुप्ता के साथ मिलकर विद्यार्थी के किताबी ज्ञान के अतिरिक्त उसके सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करने वाले अन्य कारकों के बारे में जानकारी जुटाना शुरू किया जिसमें कि शारीरिक विकास एवं मानसिक आनंद के अद्भुत समन्वय से मिलकर बना खेलकूद का कारक सबसे महत्त्वपूर्ण रहा।

इस टीम ने शुरूआती स्कूली दौरों में पाया कि महेंद्रगढ़ जिले में खेलों के प्रति बच्चों एवं शिक्षकों का रुझान अपेक्षाकृत कम था। स्कूलों में खेल सामग्री का अभाव, ग्राउंड का न होना, वित्तीय सहायता की कमी एवं खेलों के महत्त्व से अनभिज्ञ रहना ये प्रमुख कारण थे। एक दिलचस्प तथ्य यह भी निकल कर सामने आया कि जिला मुख्यालय नारनौल में खेलों के प्रति फिर भी ठीक-ठाक रुझान था, क्योंकि वहीं के कुछ चुनिंदा स्कूलों के चुनिंदा बच्चे बार बार जिला एवं राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में भाग लेते थे। मुख्यालय से दूर उपमंडल एवं तहसील और थोडा और दूर गाँव के स्तर तक आते आते शासकीय स्कूलों में खेलकूद के प्रति रुझान एवं बुनियादी सुविधाओं का अत्यंत अभाव था। बच्चों और शिक्षकों में इस विश्वास की कमी थी कि आने वाले सालों में सामने आने वाला राष्ट्रीय स्तर का कोई मेडलिस्ट आज उनके इन दूरदराज के गाँवों में छिपा बैठा है।

शासकीय स्कूल में पढ़ने वाले हर बच्चे तक खेलों को पहुँचाने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री सुशासन सहयोगी के द्वारा एक डिस्ट्रिक्ट इनिशिएटिव के रूप में स्पोर्ट्स फॉर ऑल प्रोजेक्ट का निर्माण किया गया जिसमें जिला शिक्षा विभाग के सक्रिय सहयोग से खेलकूद को अंतिम छोर के विद्यालय में पढ़ने वाले आखिरी बच्चे तक पहुँचाना सुनिश्चित किया गया।

'स्पोर्ट्स फॉर आल' का आइडिया एकदम आसान था, लक्ष्य था कि महेंद्रगढ़ जिले के हर सरकारी स्कूल में एक वार्षिक स्कूल लेवल स्पोर्ट्स मीट आयोजित की जाए, जिससे खेलकूद की पहुँच हर बच्चे तक मुहैया हो। यह अपने आप में एक चुनौतीपूर्ण कार्य था क्योंकि इसके पहले यही माना जाता था कि एनुअल स्पोर्ट्स मीट केवल निजी स्कूलों में ही होती है। जिला मुख्यालय से लेकर दूरदराज के राजस्थान सीमा से सटे गाँवों के स्कूलों तक एक तय समय में सीमित साधनों के साथ इस लक्ष्य को प्राप्त करना था।

'स्पोर्ट्स फॉर ऑल' परियोजना में हम तीन लक्ष्यों को लेकर चले थे। पहला, हर स्कूल में खेलकूद का एक न्यूनतम मानदंड स्थापित करना। उदाहरण के लिए स्कूल में कम से कम एक खेल का मैदान हो, जिसमें मिट्टी और ट्रैक की व्यवस्था हो, छात्र संख्या के अनुसार खेलकूद सामग्री हो, सप्ताह में तय घंटों में खेलकूद

गतिविधियाँ संचालित हों एवं इनकी समय समय पर गुणवत्ता की भी जाँच की जाए। दूसरा लक्ष्य था कि विद्यालय में पढ़ने वाला हर बच्चा कम से कम एक खेल गतिविधि में हिस्सा ले जिससे महेंद्रगढ़ जिले के राजकीय स्कूलों में पढने वाले हर बच्चे की खेल में भागीदारी सुनिश्चित की जा सके। तीसरा लक्ष्य था कि हर रूरल अचीवर को, एक विजेता की तरह सम्मानित करना ताकि उसे आगे और मेहनत करने का प्रोत्साहन मिल सके एवं आने वाले बड़े टूर्नामेंटों में चुनिन्दा बच्चों की जगह नई प्रतिभाएँ सामने आ सकें।

इस परियोजना की शुरुआत हुई जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में हुई एक बैठक से, जिसमें जिला शिक्षा अधिकारी, जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी, सभी खण्डों के खंड शिक्षा अधिकारियों के समक्ष सुशासन सहयोगी ने यह प्रस्ताव रखा। शिक्षा विभाग के इन अफसरों ने इस परियोजना को हाथोंहाथ लिया एवं अपने व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर इसे और मजबूती प्रदान की। इस परियोजना को सुचारु रूप से लागू करवाने के उद्देश्य से दिसंबर माह में महेंद्रगढ़ जिले के सभी पाँच खण्डों में अलग अलग दिन उस खंड से जुड़े सारे प्राचार्यों, हेडमास्टरों, डीपीई एवं पीटीआई से सामूहिक चर्चा करके उन्हें इस प्रोजेक्ट से व्यक्तिगत रूप से जोड़ा गया। इन कार्यशालाओं में न केवल मार्ग में आने वाली कठिनाइयों बल्कि इन आयोजनों की उत्कृष्टता एवं तकनीक के उपयोग पर भी चर्चा की गई। फलस्वरूप रिकॉर्ड 7 दिनों में महेंद्रगढ़ जिले के प्रत्येक स्कूल में ये तैयारियाँ शुरू हो गईं कि वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिताओं को कैसे बेहतर से बेहतर ढंग से संचालित किया जा सके।

आयोजन के सन्दर्भ में एक मार्गदर्शिका का निर्माण किया गया जिसमें आयोजन से जुडी सारी बारीक जानकारियाँ मौजूद थीं। इन गाइडलाइन के मुताबिक़ हर स्कूल में न्यूनतम आठ खेलों को आयोजित करने का निर्देश था, जिनमें मुख्य रूप से विभिन्न प्रकार की दौड़ें(100 मीटर, 200 मीटर, 500 मीटर) , गोला फेंक, फ़ुटबॉल, कबड्डी इत्यादि शामिल थे। इसके अतिरिक्त हमारी प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति के प्रति आदर भाव के चलते कम से कम एक देसी खेल को शामिल करना अनिवार्य था, ये खेल क्षेत्र विशेष की अपनी अलग पहचान थे एवं शिक्षाको एवं बच्चों को दुबारा उनकी जड़ों से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करने में मददगार थे। साथ ही साथ इस स्पोर्ट्स मीट में पंचायतों का स्कूली खेलकूद गतिविधियों से जुड़ना एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा था। इस स्पोर्ट्स मीट हेतु किसी अतिरिक्त विशेष फंड की माँग नहीं की गई थी एवं आयोजन में होने वाले खर्च एवं मैडल-पुरस्कार-प्रशस्ति पत्र इत्यादि को पंचायतों एवं शिक्षकों के सहयोग से पूर्ण करना सुनिश्चित किया जाना था।

अंततः कई उतार-चढ़ावों, समयाभाव और चुनौतियों को दरकिनार करते हुए 25 दिसंबर को सुशासन दिवस के अवसर पर प्रतीकात्मक रूप से महेंद्रगढ़ जिले के राजस्थान सीमा से जुड़े सबसे अंतिम गाँव के शासकीय विद्यालय, अगिहर में प्रथम वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता की शुरुआत हो गई। यह अपने आप में ही एक सुखद अनुभव था जब कि आपके सामने उत्साहित बच्चे हों जिनकी आँखों में मैडल पाने की चमक और खेलों में हिस्सा लेने की ललक हो। आपका विश्वास तब और भी बढ़ जाता है जब तमाम सामाजिक रुढ़ियों को दरकिनार करते हुए उस गाँव की महिला सरपंच स्वयं बढ़चढ़ कर इस समारोह की जिम्मेदारी संभाल रहीं हों और उनके साथ गाँव के 50 से भी ज्यादा ग्रामीण अपने गाँव के बच्चों के उत्साहवर्धन के लिए उपस्थित हों।

25 दिसंबर से आरम्भ हुए इस आयोजन में एक सप्ताह के भीतर ही 250 से भी ज्यादा स्कूलों में स्पोर्ट्स मीट का आयोजन संपन्न हुआ। अखबारों में रोजाना किसी न किसी स्कूल के नए चैम्पियनों की सुर्ख़ियाँ छाई रहीं। मुझे हर सुबह अखबारों में एक विशेष लाइन पढ़कर बहुत आनंद का अनुभव होता था। जब कोई जानकार मुझे यह बताता था कि सर इस स्कूल को खुले 15-20 साल से ज्यादा का समय हो गया, परन्तु पहली बार अखबार में इस स्कूल के विषय में छपा है कि यहाँ प्रथम वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन हुआ है। यह यकीनन बेहतरीन शुरुआत थी। शासकीय स्कूलों की इस प्रकार की अद्भुत शुरुआत से नवभारत के निर्माण की संकल्पना को बल मिलता है जहाँ बच्चा न केवल किताबी ज्ञान से संपन्न हो अपितु शारीरिक रूप से स्वस्थ और मानसिक रूप से तरोताज़ा एवं प्रसन्न हो।

महेंद्रगढ़ जिले की इस अनूठी खिलाड़ी खोज परियोजना की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। बिना किसी अतिरिक्त शासकीय सहायता के, पंचायतों के सहयोग से इतने व्यापक स्तर पर दूरदराज के गाँवों तक खेलों को पहुँचाना अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। लड़के हों या लड़कियाँ, छोटे आयु वर्ग के बच्चे हों या बड़े आयु वर्ग के बच्चे, ओलम्पिक में शामिल खेल हों या दादा-दादी के जमाने से जुड़े देसी खेल, इन सभी विविधताओं से संपन्न एक इन्द्रधनुषी आभा से सराबोर यह स्पर्धाएँ एक पहला कदम थीं, जोकि समग्र विकास के प्रति स्कूलों के दायित्व को बखूबी निभाती दिखी। इन स्पर्धाओं से महेंद्रगढ़ जिले के दूरदराज के गाँवों से 450 से भी ज्यादा ऐसे नए मेडलिस्ट बच्चों की पहचान हो पाई जिनकी इसके पहले तक जिला स्तरीय टूर्नामेंट में कोई प्रतिभागिता नहीं हो पाई थी। हमारे इन छोटे-छोटे छुपे रुस्तम चैम्पियनों में से ही आने वाले ओलंपिक की गीता-बबीता, विजेंदर-सुशील और अन्य हरियाणा की शान निकलेंगे, बस जरूरत है उन्हें और तराशने की, मौके उपलब्ध करवाने की। महेंद्रगढ़ जिले के उत्साही शिक्षा विभाग, सहयोगी पंचायतों और जुनूनी बच्चों से मिले बीते दो महीनों के अनुभवों के आधार पर मैं यह पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि ऐसे आयोजन हरियाणा के हर सरकारी स्कूल में संभव हैं और आगामी अनेक वर्षों तक बिना रुके ऐसे वार्षिक आयोजन निर्बाध रूप से संपन्न होते रहेंगे। अगर महेंद्रगढ़ जिले के स्पोर्ट्स फॉर ऑल प्रोजेक्ट को सारे हरियाणा के लिए सारगर्भित रूप से प्रस्तुत करना हो तो ये चार पंक्तियाँ हमारे दृढ़ निश्चय और अथक परिश्रम को व्यक्त कर सकती हैं -

छुपा है दिल में क्या उनके ये सब हम जान लेते हैं।
मुखौटा ओढ़ने वालों को हम पहचान लेते हैं।
निखर जाओ तुम तपकर जिस तरह सोना बने कुंदन,
परीक्षा मुश्किलों के रूप में भगवान लेते हैं।

- सक्षम हरियाणा सैल

मधुर यादें दे गया अन्तरराष्ट्रीय एडवेंचर कैंप

2 से 8 फरवरी 2019 तक पचमढ़ी (मध्यप्रदेश) में लगे कैंप में प्रदेश की 220 छात्राओं ने लिया भाग

डॉ.ओमप्रकाश कादयान

विद्यार्थी अपनी कोर्स की किताबों में नदियों, झरनों, पहाड़ों, जंगलों, दुर्गम वादियों, ऐतिहासिक व धार्मिक स्थलों के बारे में पढ़ते हुए उन्हें प्रत्यक्ष देखना भी चाहते हैं, किंतु अधिकतर सामान्य या गरीब परिवारों से होने तथा अपनी पढ़ाई के बोझ तले दबे होने के कारण वे इन यात्राओं पर नहीं जा पाते। उनकी यह जरूरत व हसरत अधूरी ही रह जाती है। किन्तु हरियाणा स्कूली शिक्षा विभाग, पंचकूला पिछले कई वर्षों से छात्र-छात्राओं की यह मन की बात जानते हुए तथा पर्यटन के महत्त्व को समझते हुए बच्चों के सपने सार्थक करने में लगा है। यह शिक्षा विभाग का एक ऐसा आवश्यक व सराहनीय प्रयास है कि जिसकी जितनी तारीफ की जाए कम है।

हर वर्ष मनाली, केरल, पचमढ़ी, डलहौजी के आकर्षक पर्यटन स्थलों पर छात्रा-छात्राओं को घुमाना गज़ब की सोच है। अबकी बार हरियाणा शिक्षा विभाग, पंचकूला ने प्रतिभावान बच्चों को पचमढ़ी घुमाने की योजना बनाई। 2 से 8 फरवरी 2019 तक पचमढ़ी (मध्यप्रदेश) में लगने वाले अन्तरराष्ट्रीय एडवेंचर कैम्प के लिए हरियाणा भर से सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाली करीब 220 छात्राओं का चयन किया गया जिनके साथ 22 अध्यापिकाएँ भी शामिल थीं। कैथल से जसबीर कौर,

पंचकूला से बिजेन्द्र धनखड़, करनाल से सियाराम व फतेहाबाद से ओमप्रकाश कादयान व कुरुक्षेत्र से सुनीता कपूर आयोजक स्टाफ सदस्य थे।

योजनानुसार सभी छात्राएँ व शिक्षिकाएँ 31 जनवरी को फरीदाबाद में एकत्र हुए तथा एक फरवरी को निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर पहुँचे। यहाँ से 2 बजकर 10 मिनट पर चलने वाली जबलपुर एक्सप्रेस पकड़नी थी। सभी समय से दो घंटे पूर्व स्टेशन पहुँच गए। जब हमें यह पता चला कि हमारे साथ इसी रेल में हरेरा के चेयरमैन तथा भारत स्काउट्स एवं गाइड के राष्ट्रीय मुख्य आयुक्त डॉ. के के खंडेलवाल भी पचमढ़ी जा रहे हैं तो हमें अच्छा लगा। रेल चलने से कुछ समय पहले खंडेलवाल जी अपनी टीम के साथ स्टेशन आए तो कार्यक्रम अधिकारी रामकुमार व उनकी टीम ने उनका स्वागत किया। इनके साथ भारत स्काउट एवं गाइड के संयुक्त निदेशक राजकुमार कौशिक भी थे। समय पर रेल अपने गंतव्य की ओर चली। क्योंकि डॉ. खण्डेलवाल स्काउट के राष्ट्रीय मुख्य आयुक्त हैं, इसलिये आगरा, ग्वालियर, झाँसी आदि स्टेशनों पर स्काउट्स से जुड़े स्थानीय अधिकारियों, स्काउट्स मास्टरों द्वारा उनका भव्य स्वागत हुआ। उधर छात्राएँ अपने सफर का आनन्द ले रही थीं।

जहाँ एक साथ इतने विद्यार्थी एकत्र होते हैं वहाँ ढ़ेर सारी, कई तरह की बातें होती हैं, किन्तु इन चर्चाओं में सबसे ज्यादा चर्चा होती है, पढ़ाई की, स्कूल की, दोस्तों की तथा अध्यापकों की। इस सफर में बच्चों के खाने-पीने व अन्य सुविधाओं का पूरा ध्यान रखा गया था। कैम्प इंचार्ज रामकुमार सहित अन्य जिम्मेवार अध्यापक कुछ देर बाद बच्चों का हाल पूछते रहे। दिल्ली से फरीदाबाद, मथुरा, आगरा, ग्वालियर, झांसी, बीना, भोपाल, इटारसी होते हुए पिपरिया पहुँचे।

सुबह साढ़े 6 बजे हम पिपरिया से पचमढ़ी की ओर चल दिये। अब हमारा सफर सुहाना व मजेदार था। पिपरिया से पचमढ़ी करीब 55 किमी है। कुछ दूर चलकर पहाड़ों की चढ़ाई शुरू हो गई। दोनों ओर सतपुड़ा के घने जंगल, बरसात के कारण शीतल बयार, वहाँ की लाल मिट्टी की सौंधी खुशबू, हवा में घुली जंगल में नाना प्रकार के दरख्तों की मिश्रित गंध, ऊँची-नीची बल खाती साँपिन-सी सड़क पर चलती बसों से दिखने वाली अद्भुत, नयनाभिराम दृश्यावली प्रभावित करने वाली थी। इस सफर में हमें पहली बार एहसास हुआ कि हम खूबसूरत जगह जा रहे हैं। सतपुड़ा के घने जंगल यहीं से शुरू होते हैं। मटकुली से करीब छह किमी आगे पहाड़ों की घनी चढ़ाई शुरू हो जाती है। बस में नए यात्री को आगे बैठना चाहिए ताकि जी न मचले। साथ में नींबू भी अवश्य रखना चाहिए। जिनको यात्रा में उल्टी आने का डर रहता उन्हें

पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिए। हमारी बस आगे बढ़ रही थी। घण्टे भर के सफर के उपरान्त पचमढी आ गई। करीब 9 बजे हम नेशनल एडवेंचर इंस्टीट्यूट

पचमढ़ी पहुँचे। यहाँ सबको टैंट अलाट किये गए। कुछ देर बाद सभी ने खाना लिया, थोड़ा आराम किया। फिर सभी बच्चों को कैप, टी शर्ट, आई कार्ड, बैग व पानी की बोतलें बाँटी गईं। शाम को कैम्प फायर होना था। सभी बच्चों को नेशनल ट्रैनिंग सैंटर में एकत्र किया गया। यहाँ अब बहुत से बच्चे थे। क्योंकि भारत भर से ही नहीं बल्कि कई देशों के विद्यार्थी भाग लेने आए थे।

उस दिन के मुख्यातिथि भारत स्काउट्स एवं गाइड्स के राष्ट्रीय मुख्य आयुक्त डॉ. खण्डेलवाल थे। इनके साथ राजकुमार कौशिक, राष्ट्रीय प्रशिक्षण केन्द्र पंचमढ़ी के संयुक्त निदेशक एमएस कुरैशी, राष्ट्रीय साहसिक संस्था के सहायक निदेशक एसएस रॉय तथा हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग, पंचकूला के कार्यक्रम अधिकारी रामकुमार सहित देश-विदेश से आए हुए शिक्षक व स्काउट्स से जुड़े अधिकारी मौजूद थे। कैम्प फायर में विभिन्न देशों व राज्यों से आए प्रतिभागियों की जानकारी दी गई, कैम्प के नियम व शर्तों को बताया गया। कैम्प के आयोजन की रूपरेखा की जानकारी दी गई तथा सभी विद्यार्थियों को ए, बी व सी तीन ग्रुपों में बाँटा गया ताकि तीनों ग्रुपों के विद्यार्थियों को अलग-अलग दिन अलग-अलग रास्तों पर ट्रैकिंग के लिए ले जाया जाए। क्योंकि प्रतिभागी अधिक थे, इसलिए इन्हें तीन ग्रुपों में बाँटना उचित था। तीन ग्रुपों के अलग-अलग इंचार्ज बनाए गए। सभी को अलग से प्रशिक्षक दिए गए।

कैम्प फायर की शुरूआत के उपरान्त बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। श्रीलंका, साउदी अरब, बांगलादेश ने अपने-अपने देशों के लोकप्रिय नृत्यों की प्रस्तुति दी तो भारत के विभिन्न राज्यों ने अपने-अपने लोक नृत्यों की शानदार झलक दिखाई। हरियाणा की छात्राओं ने सबसे शानदार, जोरदार, गज़ब की प्रस्तुति दी तो तालियों की जोरदार गड़गड़ाहट के साथ वातावरण ध्वनिमय हो उठा। क्योंकि इस अन्तर्राष्ट्रीय एडवेंचर कैम्प में हरियाणा प्रदेश की भागीदारी भी सबसे अधिक थी इसलिए हमारे लोकनृत्यों की प्रस्तुतियाँ भी संख्या में ज्यादा रहीं। कार्यक्रम के दौरान अपने सम्बोधन में डॉ. खण्डेलवाल ने कहा कि आज यहाँ आकर मुझे बेहद अच्छा अनुभव हो रहा है, क्योंकि मैं उन विद्यार्थियों के बीच में हूँ जो हमारे ही देश का नहीं बल्कि पूरी दुनिया का भविष्य हैं। यहाँ जो प्रतिभावान, ऊर्जावान विद्यार्थी, स्काउट्स एण्ड गाइड्स, रेंजर्ज आए हैं वे पूरी दुनिया को एकता के सूत्र में बाँधने का सपना संजोये हुए हैं। आज एक जगह कई देशों के प्रतिभागियों को देखकर लगता है कि पूरी दुनिया इस पावन भूमि पर आकर सिमट गई है। इसी तरह भाषाओं का, संस्कृतियों का आदान-प्रदान होता है, एकता का भाव उत्पन्न होता है, भाईचारे की भावना पनपती है। डॉ. खण्डेलवाल ने कहा कि स्काउट एक ऐसी संस्था है जो प्रकृति से जुड़ना सिखाती है, जीव जन्तुओं की रक्षा करना, विपरीत परिस्थितियों में साहस के साथ जीना सिखाती है और पूरी दुनिया को एकता के सूत्र में बाँधती है। डॉ. खण्डेलवल ने कई देशों से पधारे

प्रतिभागियों का धन्यवाद किया तथा हरियाणा से संख्या में सबसे अधिक प्रतिभागी होने पर हरियाणा शिक्षा विभाग के अधिकारियों को बधाई दी।

अगले दिन डॉ.खण्डेलवाल जी ने दो डाइनिंग हॉल, एक स्काउट्स शॉप, एक जिपलाइन का उद्घाटन किया। पूरे प्रशिक्षण केन्द्र का बारीकी से निरीक्षण किया तथा हरियाणा की छात्राओं को करीब दो घण्टे तक स्काउट्स के उद्देश्यों, नियमों की जानकारी दी। उन्होंने काफी देर तक बच्चों के साथ मन की बात की जिससे बच्चों में आत्मविश्वास का संचार हुआ। उसके बाद बच्चों को एडवेंचर गतिविधियाँ करवाई गईं। एडवेंचर गतिविधियाँ अन्तिम दिन तक चलती रहीं, जिनमें बारी-बारी सभी बच्चों ने भाग लिया।

घुड़सवारी, तीरंदाजी, बोटिंग, राइफल शूटिंग, रॉक क्लाइम्बिंग जैसी करीब 15 एडवेंचर गतिविधियों के साथ-साथ अबकी बार हॉट एयरवैलून, पैरासीलिंग व नई गतिविधियाँ शामिल की गईं जो काफी रोचक भी थीं। हॉट एयर वैलून व पैरासीलिंग के माध्यम से बच्चों ने आसमान की सैर की। बच्चों के चेहरे पर उत्साह, जोश, उमंग, उत्सुकता व मुस्कान देखकर लग रहा था जैसे बच्चों की कल्पनाओं को पंख लग गए और वो अब आसमान की उड़ान पर थे। इसके साथ हर रोज बच्चों को ट्रैकिंग के लिए एक रोचक व साहसिक पर्यटन स्थल पर ले जाया। ट्रैक कोई दस किलोमीटर का था, कोई सोलह किलोमीटर का तो कोई अठारह (आना-जाना) किलोमीटर का, जंगल व पहाड़ों के रास्ते से होते हुए ये ट्रैक रोमांचकारी थे। हमें भी ट्रैकिंग के लिए बच्चों के साथ ही जाना था। पता चला कि अगले दिन भी ट्रैकिंग पर जाना है।

अगले दिन 'बी फॉल' की ओर चल दिए। जंगल के रास्ते गुजरते हुए हमने खड़े पेड़ों को देखा तो इनके जीवट के बारे में ज्ञात हुआ। सख्त पत्थरों पर इन जंगलों का खड़ा होना, बड़े होना, फिर सरसब्ज रहना कठिन जीवन संघर्ष का प्रतीक है। विशाल पत्थरों पर किसी अंकुर का फूटना, पौधे से पेड़ बनना, अपनी लम्बी-लम्बी जड़ें कठोर पत्थरों पर दूर तक फैलाकर पत्थरों को जकड़कर जीवन रस चूसना एक बड़ी चुनौती है। ये घने, उलझे हुए से जंगल देखकर भवानी प्रसाद मिश्र द्वारा लिखित कविता 'सतपुड़ा के घने जंगल' याद हो आई।

पेड़ों की जड़ों में मैं अनेक कृतियाँ ढँढ रहा था। रोमांचक सफर में अनेक छोटे-छोटे झरने मिले। ये ही अनेक झरने आगे चलकर एक बड़ा झरना बनाते हैं। हम उस अन्तिम पड़ाव पर पहुँचे जहाँ से 'बी फॉल' गिरता है। यहीं से घनी उतराई शुरू होती है। करीब 150 फीट नीचे उतरकर 'बी फॉल' यानी पचमढ़ी के खास झरनों में से एक झरना आ गया। प्रकृति की सुरम्य वादियों में स्थित 150 फीट की ऊँचाई से गिरने वाले झरने का अवलोकन एक खूबसूरत अहसास है। इतनी ऊँचाई से गिरते झरने के नीचे यात्री नहा कर निहाल हो जाते हैं। इस झरने के नीचे नहाने का आनन्द लिए बिना पचमढ़ी की यात्रा अधूरी है, क्योंकि सबसे अधिक आनन्द यात्रियों को यहीं पर आता है। विद्यार्थी व शिक्षक घंटे भर इस झरने के नीचे नहाए, फोटो खींचे फिर वापसी सफर पर चले। इतना ही आनन्द हमें डचैस फॉल देखने में आया। आते समय हमने बायसन लॉज (संग्रहालय) देखा। इसमें सतपुड़ा के जंगलों, पहाड़ों के जीव जन्तुओं के मॉडल रखे हुए हैं। जंगली पशु, पक्षी व अन्य जानवरों के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ दी गई हैं। इस संग्रहालय को देखने से इन जंगलों को काफी हद तक समझा जा सकता है।

अगले दिन सुबह हम डैच्चेसफॉल गए। आना-जाना करीब 18 किलोमीटर का कठिन, किन्तु रोचक ट्रैक है। उस जंगल के रास्ते से होकर जिसमें टाइगर, भालू, अजगर, जंगली बायसन, जंगली सूअर आदि कभी-भी रास्ते में मिल सकते हैं। किन्तु करीब हम सवा सौ सदस्यों के ग्रुप में थे इसलिए खतरा नहीं था। इतने मनुष्यों को देखकर जंगली जानवर अपना-अपना रास्ता बदल लेते हैं। फिर इन ट्रैकों पर जाने से पहले सबको सिखाया जाता है कि सभी ग्रुप में रहेंगे। बीच में अधिक फासला न हो। कोई सदस्य मोबाइल पर गाने नहीं चलाएगा, न कोई तेज आवाज में बोलेगा जिससे जंगली जानवरों को असुविधा न हो। हम कैम्प से चले तो बीस मिनट बाद टाइगर रिजर्व इलाके में घुस गए। थोड़ा आगे चलकर ऊँचाई पर रीछगढ़ आ गया। बताते हैं कि बहुत पहले यहाँ बहुतायत में रीछ रहते थे। जब पर्यटक अधिक आने लगे तो वे जंगल की ओर चले गए। बताते हैं कि रात को तो अब भी यहाँ भालू आते हैं। यहाँ भालुओं की अनेक गुफाएँ हैं। रीछगढ़ पहाड़ों को ध्यान से देखने पर यह भी पता चलता है कि पहले यहाँ समुद्र था। पृथ्वी की हलचल से समुद्र का हिस्सा ऊपर उठकर पहाड़ बन गए। इन पहाड़ों के विशाल पत्थरों में उन छोटी-छोटी रोड़ियों की कतारें हैं जो नदियों द्वारा बहाकर लाई गई हैं तथा समुद्र में गिरा दी जाती हों। इन रोड़ियों के बीच छोटी-छोटी शंख व सीपियाँ भी मिल जाती हैं जो इस बात का सबूत है कि ये पहाड़ समुद्र से उठे हुए हैं। इसलिए ये

यात्राएँ, भूगोल, विज्ञान, इतिहास, ललित कला, पर्यावरण जैसे विषयों के विद्यार्थियों के लिए शोध का केन्द्र कही जाती हैं। सभी ने रीछगढ़ देखा तथा आगे चल दिए। आगे कई जगह जंगली जानवरों की गुफाएँ देखी। वहाँ के एक ट्रेनर ने बताया कि इन गुफाओं में रात होते ही सोने के लिए जंगली जानवर आ जाते हैं।

हम ऊबड़-खाबड़, ऊँचे-नीचे रास्तों से, पहाड़ों से होते हुए चलते रहे। पहाड़ों के नज़ारे, गहरी घाटियाँ, ऊँची चोटियाँ, गहरे जंगल, पेड़ों पर घूमती जंगल की बड़ी-बड़ी गिलहरियाँ, पेड़ों पर बैठे बन्दर सफर को आनन्दमय बना रहे थे। हम करीब आठ किलोमीटर का सफर तय करते हुए डैच्चेस फॉल के करीब पहुँचे। अब करीब आधा किलोमीटर की खड़ी उतराई थी। सीढ़ियाँ कोई छोटी कोई बड़ी, इनसे उतर कर झरने तक जाना इतना आसान नहीं था। फिर भी बच्चे हिम्मत से नीचे उतरते रहे, सुन्दर झरना देखकर बच्चे उछल पड़े। सर्दी होने के बावजूद बहुत से बच्चों व अध्यापकों से रुका नहीं गया। नहाने के लिए वे झरने के पानी में कूद पड़े। बच्चे सैल्फी व फोटो ले रहे थे। कुछ थे जो देखकर भी संतोष कर रहे थे। करीब दो घण्टे के मनोरंजन के बाद सभी को ऊपर वाले झरने पर ले जाया गया जहाँ से यह झरना गिरता है। यहाँ पानी के कटाव से पत्थरों का कलात्मक आकार बना हुआ था। हजारों वर्षों की पानी की मेहनत ने पत्थरों को काट-काट गहरी गुफाएँ सी बना रखी हैं। यह जगह नीचे वाले झरने से भी खूबसूरत कही जा सकती हैं। देखने से ज्ञात होता है कि पानी में पत्थर काटने की भी ताकत होती है। मैंने यहाँ बहुत से फोटो लिए। फोटो लेते समय मैं अपनी ही लापरवाही से फिसल गया तथा एक गड्ढे में कैमरा व मोबाइल समेत जा गिरा। जूते व कपड़े भी भीग गए। बाहर निकलकर मैंने कैमरे की चिप व बैटरी निकाली, साफ की, मोबाइल भी साफ किया। कुछ देर बाद वहाँ से चले। सीढ़ियों की चढ़ाई चढ़ते हुए, फिर से जंगल से होते हुए हम वापिस रीछगढ़ आए तो हमारे लिए पानी की व्यवस्था थी। खाना तो हम सब साथ ले गए थे जो झरने के पास बैठकर सबने खाया। लम्बे व साहसिक ट्रैक के बाद शाम से पहले हम कैम्प स्थल आ गए।

अगले दिन साढ़े चार बजे उठकर साढ़े पाँच बजे तक तैयार होने को कहा गया ताकि हम ऊँचे पहाड़ पर स्थित राजेन्द्र गिरि स्थल व वहाँ से सूर्योदय का अद्भुत नजारा देख सकें। हम प्रातः साढ़े पाँच बजे तैयारी के साथ सभी राजेन्द्र गिरि की ओर चल पड़े। हमारे सैंटर से करीब 2 किमी दूर ऊँचे पहाड़ पर स्थित राजेन्द्र गिरि सुन्दर पार्क है। यहाँ कुछ दुकानें भी हैं। भारत के प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद की विशाल प्रतिमा लगी हुई है। बताते हैं कि 1953 में यहाँ प्रसाद जी आए तो उन्हें यह जगह बहुत प्रिय लगी। फिर बार-बार वो यहाँ आए। उन्हीं की याद में इस स्थान का नाम राजेन्द्र गिरि रखा गया। यहीं पत्थर-चूने की दो कुर्सियाँ बनी हैं, जिन पर बैठ कर प्रसाद जी प्रकृति से साक्षात्कार करते थे। हमारे तत्कालीन राष्ट्रपति यहाँ बार-बार क्यों आए इसका

एहसास यहाँ पर आने से हो जाता है। हम ऊँचे शिखर पर थे। यहाँ से तीन तरफ गहरी खाइयाँ और सतपुड़ा के घने जंगल सन्नाटा लिए पसरे पड़े थे। देखने पर लगता है जैसे ये जंगल पाताल में डेरा जमाए हैं और जंगलों के उस पार चारों ओर ऊँचे - ऊँचे विशाल पर्वत इस तरह से सिर उठाए लग रहे थे जैसे ये इन जंगलों के पहरेदार हों। शायद इन्हीं ऊँचे भव्य पहाड़ों के कारण ये जंगल सुरक्षित भी हैं।

अगले दिन जटा शंकर ट्रैक जाने की योजना थी। सुबह जल्दी उठकर, योगा करके जटाशंकर की ओर चल दिये। दोनों ओर ऊँचे कलात्मक पहाड़ों के बीच की संकरी सी घाटी में जटाशंकर मन्दिर स्थापित है। इस संकरी गहरी घाटी में बड़े-बड़े पत्थर एक दूसरे में इस प्रकार फँसे हैं जैसे किसी शिल्पी ने कड़ी मेहनत के बाद अनोखे तरह के पाषाण मूर्तिशिल्प गढ़ रखे हैं। एक दूसरे पर पड़े, एक दूसरे में उलझे, अटके, एक-एक पाषाण किसी शिल्प से कम नहीं। ये सबसे बड़ी शिल्पी प्रकृति की अनूठी संरचना कही जा सकती है। करीब आधा किलोमीटर की गहरी उतराई के बाद जटाशंकर आता है। कहा यह भी जाता है कि शिव ने यहाँ अपनी जटाएँ खोलकर गंगा को मुक्त किया था, किन्तु यहाँ गंगा का कोई लेना देना नहीं। यहाँ कुछ पानी अवश्य भरा रहता है। यात्रियों के लिए यहाँ बहुत सी दुकानें भी हैं। विद्यार्थी इस जगह को देखकर उत्साहित थे।

अगले दिन धूपगढ़ जाने की तैयारी थी। धूपगढ़ गहरे, सुनसान से जंगल के रास्ते से होकर टेढ़ी-मेढ़ी सड़कों से होकर हमारा काफिला चला। दो घंटे के सफर के बाद पहाड़ की खड़ी चढ़ाई शुरू हुई। घूमते हुए हम कुछ देर के बाद कठिन रास्ते से पहाड़ की उस चोटी पर जा चढ़े जहाँ से सूर्योदय व दूसरी ओर सूर्यास्त का अद्भुत, रोचक, दिव्य, अनुपम दृश्य दिखते हैं। अब इन दोनों में से समय तो बीच का ही था। किन्तु हमने वो जगह जरूर देख ली जहाँ से दोनों दृश्य सुबह शाम दिखाई देते हैं। दोनों ही जगहों से दूर तक फैले गहरे जंगल, घाटियाँ, व चोटियाँ दिखाई देती हैं। ये बड़े मनोरम दृश्य थे। पचमढ़ी आने वाले पर्यटक यहाँ जरूर आते हैं। किन्तु वे या तो सुबह आते हैं या फिर सूर्यास्त के समय। इन दोनों प्वाइंटों के मध्य में एक संग्रहालय है, जिसमें पचमढ़ी के आस-पास के पर्यटन स्थलों की फोटो, पूरी जानकारी सहित हैं।

अगर पंचमढ़ी यात्रा पर किसी ने लिखना है तो उनके लिए तथा अन्य के लिए भी ये जानकारियाँ जरूरी हैं। वहाँ से वापिस आए तो नेशनल ट्रैनिंग सैंटर में मुझे एक पेड़ पर 10-12 तरह की चिड़ियाँ फल खाती हुई दिखाई दीं। मैंने कैमरा निकाला तथा उनके 60-70 फोटो खींच डाले। मेरे लिए यह सुनहरा अवसर था। यहाँ ठहरने, खाने-पीने की बढ़िया व्यवस्था थी। यहाँ बच्चों को हर परिस्थिति में रहना, ढलना, कठिनाइयों से लड़ना, दूसरों के लिए जीना सिखाया जाता है तथा मानसिक के साथ-साथ शारीरिक तौर पर भी बच्चा मजबूत बने यही इन शिविरों के आयोजन का लक्ष्य भी है। आखिरी वाले दिन कैम्पफायर में वहाँ के जिलाधीश मुख्य अतिथि थे। उन्होंने कलाकार बच्चों को बधाई दी तथा हरियाणा की सुन्दर प्रस्तुति के लिए साधुवाद दिया।

अगला दिन विदाई का था। उससे पूर्व समापन समारोह का आयोजन होना था। सुबह सर्वधर्म समभाव प्रार्थना के बाद, सभी प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया गया। दोपहर बाद हम सभी अनूठे अनुभव, ढ़ेर सारा ज्ञान लेकर पचमढ़ी को अच्छी तरह से जानकर, जंगलों, झरनों, पहाड़ों, आदिवासियों को समझकर, बसों में सवार हो पिपरियाँ की ओर चले। यहाँ से हम रेल में बैठकर मधुर यादों के साथ, प्रकृति से बहुत कुछ सीखकर पचमढ़ी की धरती को नमन कर अपने घर की ओर चल पड़े।

राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय,
एमपी रोही, जिला-फतेहाबाद

अविस्मरणीय रहा विज्ञान नगरी कपूरथला का भ्रमण

अजय कुमार

विज्ञान के बढ़ते विकास के कारण मानव दुनिया के हर क्षेत्र में अग्रसर दिखाई दे रहा है। हमारे प्रत्येक कार्य में कहीं न कहीं विज्ञान छिपा है। इसी विज्ञान की व्यावहारिक जानकारी प्राप्त करने के लिए सुपर-100 के 113 विद्यार्थियों ने 23 से 25 फरवरी 2019 तक पुष्पा गुजराल साइंस सिटी कपूरथला तथा अमृतसर के दर्शनीय स्थलों का भ्रमण किया।

72 एकड़ में फैली इस विज्ञान नगरी में विद्यार्थियों ने जहाँ थिएटर में फिल्म के द्वारा चंद्रमा पर जीवन की संभावना के बारे में जानकारी हासिल की, वहीं लेजर-शो, 3डी-शो, डॉम-थिएटर, डिजिटल प्लेनेटोरियम, सेना के जहाज, टैंक, मिजाइल, विज्ञान गैलरी, फ्लाइट सिमुलेटर व डायनासोर पार्क गैलरी तथा पृथ्वी के विभिन्न आकारों सहित विज्ञान की अद्भुत कलाओं को नजदीक से निहारा व समझा। विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित यह भ्रमण अधिकांश विद्यार्थियों के लिए इस तरह का पहला अनुभव था और यह वास्तव में शानदार था। विद्यार्थियों ने मनोरंजक ढंग से बहुत कुछ सीखा। उनका विचार है कि इस प्रकार की शैक्षिक यात्राएँ कभी-कभी आयोजित की जानी चाहिए ताकि ये हर बार नई चीजें सीखने में मदद करें। यह दौरा वास्तव में काफी अद्भुत और नया सीखने का अच्छा मौका था। छात्रों के समग्र विकास के लिए इस प्रकार के भ्रमण वास्तव में आवश्यक हैं। कपूरथला की साइंस सिटी में सभी ने आभासी वास्तविकता (virtual reality) का आनंद लिया, यह सभी 3-डी प्रभाव को देखने के लिए बेहतरीन तकनीक है और लेज़र शो भी जबरदस्त था, मैंने पहली बार इस प्रकार की तकनीक देखी। पर्यावरणीय गिरावट विषय की काफी जानकारी मिली और इस प्रकार के शैक्षिक अनुभव और वास्तविकता के दृश्य हमें इन महत्त्वपूर्ण विषयों पर सोचने के लिए प्रेरित करते हैं और ये हमारी वर्तमान पीढ़ी को भी प्रोत्साहित करते हैं और यह उनके भविष्य के लिए सहायक होगा।

छात्र पीयूष और सचिन ने कहा कि साइंस सिटी की यात्रा ने उन्हें सीखने का नया तरीका दिखाया है। दृश्य विज्ञान उदाहरण के लिए बहुत सारे अलग-अलग अतीत के साथ-साथ भविष्य के प्रोजेक्ट्स के लिए अलग-अलग मॉडल थे। चंद्रयान के मॉडल ने मुझे उस मशीन के पूर्ण कार्य को समझने में मदद की और यह बहुत अच्छा है कि वह पूरी तरह से कल्पना कर सके, बजाय इसके कि पूरा काम कर रहा है। फिर हमने अलग-अलग शटल और स्पेस क्राफ्ट देखे।

एक और अद्भुत जगह डिनो पार्क थी। इसने प्राचीन सभ्यता और प्रारंभिक पृथ्वी पर जीवन को दर्शाया है। यह हमें पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति और मनुष्य के विकास के बारे में भी बताता है। विभिन्न प्रकार के मानव निर्मित डायनासोर थे जो उनकी पहचान को दर्शाता है और वे कैसे दिखते थे।

फिर अगले दिन हम वाघा सीमा गए जहाँ देशभक्ति के शानदार दृश्य ने अपने राष्ट्र के प्रति लोगों की आंतरिक भावना को प्रतिबिंबित किया। जनसमूह पूरी तरह से ऊर्जावान था। लोग नाच रहे थे और हमारे देश के सम्मान में नारे भी लगाए। परेड 30 मिनट की थी और ये 30 मिनट राष्ट्र के प्रति मेरी सोच में बदलाव लाए।

फिर हम अमृतसर गए। यहाँ हमने श्री हरमंदिर साहब के दर्शन किए। स्वर्ण मंदिर देश-विदेश से आये श्रद्धालुओं से भरा हुआ था। मन पवित्र विचारों से सराबोर हो गया। पूरी यात्रा शानदार थी और सभी प्रबंध कुशलता से किये गए थे। इस प्रकार के दौरों को समय के निश्चित अंतराल के बाद नियमित रूप से आयोजित किया जाना चाहिए क्योंकि इससे सभी को मानसिक और आध्यात्मिक क्षमता विकसित करने में मदद मिलती है।

कपूरथला साइंस सिटी ने सभी छात्रों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को नए आयाम दिए। हर किसी किसी ने इस यात्रा का भरपूर आनंद लिया। सब के लिए यह भ्रमण अविस्मरणीय बन गया ।

कार्यक्रम अधिकारी
शैक्षणिक प्रकोष्ठ
निदेशालय माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

एक कर्मयोगी शिक्षक सियाराम शास्त्री

शिक्षक को राष्ट्र का निर्माता इसलिए कहा जाता है क्योंकि उसके जिम्मे बच्चों का भविष्य उज्ज्वल करने का कार्य होता है और बच्चे किसी भी देश का भविष्य होते हैं। किन्तु यह भी एक विड़म्बना ही कही जाएगी किआधुनिकता की चकाचौंध से भ्रमित होकर शिक्षक वर्ग भी अपनी कर्त्तव्यनिष्ठता भूलता जा रहा है। फिर भी कुछ शिक्षक अब भी हैं जो न केवल अपने विषय व कक्षा के प्रति समर्पित हैं बल्कि ये इससे भी अधिक करने की गहरी निष्ठा रखते हैं।

ऐसे ही एक शिक्षक हैं सियाराम शास्त्री, जो राजकीय माध्यमिक विद्यालय घिसरपुरी (करनाल) में संस्कृत शिक्षक के पद पर कार्यरत हैं तथा इसके साथ-साथ जिला संगठन आयुक्त (स्काउट्स) भी हैं। सियाराम शास्त्री एक ऐसे व्यक्तित्व का नाम है जिन्होंने ने शिक्षा विभाग में रहते हुए कई क्षेत्रों में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इनका बोर्ड का परीक्षा परिणाम अब तक सौ प्रतिशत रहा है। ये जिन-जिन विद्यालयों में रहे वहाँ बच्चों व विद्यालयों के लिए अपने स्वभावानुसार खूब काम किया। इन्होंने शिक्षक के रूप में अपनी यात्रा राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बड़ौता (करनाल) से शुरू की। उसके बाद ये मूनक, भूसली और अब घिसरपुरी के मिडल स्कूल में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। इन्होंने विद्यालय के लिए स्कूल की चारदीवारी, स्टेज, शौचालय, पानी की टंकी आदि गाँव के सहयोग से बनवाए। इसके साथ-साथ विद्यालय को हरा-भरा रखने के लिए पेड़-पौधे लगवाए व स्कूल में बच्चों की संख्या बढ़ाने के लिए बेहतर प्रयास किए।

वर्तमान विद्यालय में जब ये आए तो विद्यालय की हालत खस्ता थी। इन्होंने अपने प्रयास से विद्यालय को हरा-भरा करवाया, पेड़-पौधे लगाए, चार-दीवारी बनवाई, खेल का मैदान तैयार करवाया तथा अपने खर्च पर विद्यालय का मुख्य द्वार बनवाया। विद्यालय में अनुशासन कायम किया तथा नामांकन में वृद्धि करवाई। इन सबका ही सुपरिणाम था कि इनका स्कूल सौन्दर्यकरण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर रहा।

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए ये जहाँ सांस्कृतिक कार्यक्रम करवाते रहते हैं वही अपने विद्यालय के विद्यार्थियों को ये अनेक लम्बी यात्राएँ करवा चुके हैं। हरियाणा शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित एडवेंचर कैम्पों में ये मल्लाह, मनाली, पंचमढ़ी, केरल, रेडक्रास की ओर से आयोजित हरिद्वार कैम्प तथा स्काउट एण्ड गाइड्स की ओर से आयोजित किये कैम्पों में शिमला के अलावा चार जम्बूरियों- कलकत्ता, मैसूर, दिल्ली व हैदराबाद की यात्राएँ करवा चुके हैं जो एक बड़ी बात है। स्काउट्स की ओर से लगने वाले कैम्पों तथा शिक्षा विभाग की ओर से लगने वाले एडवेंचर कैम्पों का सफल आयोजन करवाने में इनकी अहम भूमिका रहती है। शिक्षा विभाग, पंचकूला के कार्यक्रम अधिकारी रामकुमार ने बताया कि विभाग के एडवेंचर कैम्पों में शिक्षक सियाराम का अतुलनीय योगदान रहता है।

ये एक अच्छे वक्ता व आयोजक भी हैं, इसलिए 22 से 28 जून, 2018 में फीलिपींस में आयोजित 'एशिया प्रशान्त क्षेत्रों में विभिन्नताओं में एकता' विषय पर सेमिनार में इन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व किया। शिक्षा/स्काउट क्षेत्रों में बेहतर कार्य करने के लिए इनको और इनकी टीम को 2009 में प्रधानमन्त्री शील्ड (राष्ट्रीय स्तर पर), 2015 में लक्ष्मी मजूमदार अवार्ड (राष्ट्रीय स्तर पर) मिला। 2013-14 से 2018 तक स्काउट्स व गाइड्स गतिविधियों में हरियाणा में प्रथम रहने पर राज्यपाल से सम्मानित हुए तथा भाखड़ा ब्यास प्रबन्धन बोर्ड द्वारा आयोजित पेंटिंग प्रतियोगिता में इनका जिला प्रथम स्थान पर रहा। इस कार्यक्रम के ये जिला संयोजक थे।

इनकी कर्मठता इस बात से भी सिद्ध होती है कि ये एक साथ विभिन्न संस्थाओं, ग्रुपों, संगठनों से जुड़े हैं तथा अच्छा परिणाम दे रहे हैं। जिला संगठन आयुक्त के साथ-साथ जिला विधिक प्राधिकरण करनाल के जिला संयोजक, इण्डियन रेडक्रॉस सोसायटी, सैंट जॉन एम्बुलैंस एसोसिएशन, करनाल में जिला संयोजक के रूप में कार्य कर रहे हैं।

जिला शिक्षा अधिकारी ईश्वर सिंह मान ने शिक्षक सियाराम शास्त्री के बारे में विश्वास से कहा कि हमें गर्व है कि ऐसे शिक्षक शिक्षा विभाग में कार्यरत हैं।

डॉ.ओमप्रकाश कादयान
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय,
एमपी रोही, जिला- फतेहाबाद

अनधिकृत रूप से चल रहे विद्यालयों में बच्चों का दाखिला न करवाएँ

प्रदेश में अनेक विद्यालय ऐसे हैं जो 'निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009' की धारा-18 और हरियाणा विद्यालय शिक्षा अधिनियम, 1995 के प्रावधानों के अनुसार संचालित नहीं हैं। गौरतलब है कि इन अधिनियमों के प्रावधानों के विपरीत प्रदेश में कोई भी विद्यालय संचालित या स्थापित नहीं हो सकता। इसलिए अभिभावकों से आग्रह किया जाता है कि वे अपने बच्चों को आगामी सत्र 2019-20 से ऐसे विद्यालयों में दाखिला न दिलवाएँ जो कि अनधिकृत रूप से चल रहे हैं।

यह सार्वजनिक सूचना 7 मार्च, 2019 को दैनिक समाचार पत्रों में एक विज्ञापन के माध्यम से महानिदेशक माध्यमिक शिक्षा हरियाणा व निदेशक मौलिक शिक्षा हरियाणा की ओर से जारी भी की जा चुकी है।

इसमें उल्लेख किया गया था कि उपरोक्त अधिनियम का उल्लंघन करने वाले विद्यालयों का पता लगाने हेतु संबंधित जिले के जिला शिक्षा अधिकारियों और जिला मौलिक शिक्षा अधिकारियों द्वारा प्रत्येक जिले में सर्वेक्षण कराया गया था और 1,083 ऐसे विद्यालयों की पहचान की गई थी जो उपरोक्त प्रावधानों के विपरीत चल रहे हैं। अतः उपरोक्त 1,083 विद्यालय को बंद किए जाएंगे। इस कारण जनसाधारण को आगामी सत्र में ऐसे विद्यालयों में अपने बच्चों को प्रवेश न दिलाने के बारे में आगाह किया जा रहा है। साथ ही यह भी अनुरोध किया जा रहा है कि यदि किसी को अपने पड़ोस में अनुमति व अधिकार के बिना चलने वाले विद्यालयों की जानकारी है तो इस संबंध में विभाग को सूचित करें, ताकि ऐसे विद्यालयों के विरुद्ध नियमानुसार उचित कार्यवाही की जा सके। वैसे विभाग द्वारा ऐसे विद्यालयों की सूची विभाग की वेबसाइट पर उपलब्ध करवाई जा चुकी है।

-शिक्षा सारथी डेस्क

'बेटी बचाओ और पर्यावरण संरक्षण' की अनूठी पहल

बोधराज सैन श्योराण

'जरुरी नहीं रोशनी चिरागों से ही हो बेटियाँ भी घर में उजाला करती हैं' कुछ इन्हीं पंक्तियों को चरितार्थ करने के लिए एक नई दिशा निर्धारित करने वाले जागने-जगाने के कार्य को पूरा करने का नाम यदि 'लाडली जन्म उत्सव' हो तो कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। क्योंकि आज के माहौल में जब सरकार ने भी बहुत सी योजनाएँ बेटियों को ध्यान में रखकर चलाई हैं फिर भी लोगों के द्वारा लैंगिक भेदभाव आज भी ग्रामीण और शहरी परिवेश दोनों जगह खूब देखा जा सकता है । इस कारण लोगों का रुझान बेटियों की शिक्षा की तरफ उतना नहीं है जितना बेटों की शिक्षा की तरफ। इसी कड़ी में पर्यावरण संरक्षण अभियान की एक छोटी सी कड़ी और जुड़ जाए तो शायद यह सोने पर सुहागा वाली बात ही हो जाएगी। इसी बात को सिद्ध करने का प्रयास किया है राजकीय प्राथमिक पाठशाला वार्ड-10, रानी महल पानीपत ने जिसने गत जनवरी माह में जन्मी 28 बेटियों का न केवल सामूहिक जन्मदिन मनाया गया बल्कि पर्यावरण को बचाने की एक अनूठी व नई पहल वृक्ष प्रहरी यानी पेड़ों को बचाने की परंपरा का भी खूब जोर-शोर से स्वागत किया गया और विद्यालय के बच्चों ने 'बेटा बेटी एक समान, दोनों को दो शिक्षा दान' बेटियों की शिक्षा के महत्त्व पर प्रकाश डालती और समाज को झकझोरती एक लघु नाटिका को भी प्रदर्शित किया कि किस प्रकार एक लड़की की शिक्षा न केवल दो परिवारों बल्कि पूरे समाज के लिए जरूरी है। विद्यालय स्टाफ के द्वारा और नवनिर्वाचित निगम पार्षद कोमल सैनी के द्वारा बेटी बचाओ और पर्यावरण संरक्षण की अनूठी पहल की शुरुआत से एक चीज तो साबित हो गई कि अगर इंसान मन में कुछ ठान ले तो कुछ भी मुश्किल नहीं है क्योंकि आने वाली पीढियों के लिए साँसों का इंतजाम करना भी शिक्षा की तरह ही उतना ही जरूरी है। इसी कड़ी में बेटियों के जन्मदिन पर केक काटने के बाद उनको सम्मानित किया गया। साथ ही विद्यार्थियों को वृक्ष प्रहरी बनने के लिए प्रोत्साहित किया गया। आसपास के क्षेत्र से आए लोगों ने, विशेष तौर पर महिलाओं ने भी इस विद्यालय के अध्यापकों के प्रयासों को खूब सराहा, क्योंकि सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाली बेटियाँ ऐसी पृष्ठभूमि से होती हैं जिनके माता-पिता का शिक्षा के महत्त्व से बहुत कम सरोकार होता है। जन्मदिन मनाना तो बहुत दूर की बात है। इस पहल की सार्थकता इस बात में भी है कि यदि लोगों की सोच बेटियों के प्रति बदल जाए, उनकी मानसिकता में परिवर्तन हो जाए व उसके साथ-साथ जिस तरह से हम पर्यावरण का अंधाधुंध दोहन कर उसे हानि पहुँचा रहे हैं, पेड़ों को गोद लेकर उनके पालन पोषण के लिए वृक्ष प्रहरी बन कर उनकी रक्षा करें, तभी इस अभियान की सार्थकता पूर्ण होगी। क्योंकि आज बेटियों के साथ-साथ पर्यावरण को बचाने की महती आवश्यकता है।

वार्ड-10, रानी महल, पानीपत के राजकीय प्राथमिक पाठशाला की इस अनूठी और अभिनव पहल का स्वागत करते हुए कार्यवाहक खंड शिक्षा अधिकारी पानीपत श्री राकेश बूरा जी का कहना है कि विद्यालय स्टाफ के द्वारा चलाई गई इस मुहिम को पूरे पानीपत के सभी विद्यालयों में शुरू किया जाना चाहिए, क्योंकि यह एक प्रेरणादायी और सकारात्मक पहल है। यह न केवल बेटियों के प्रति समाज की सोच में परिवर्तन लाएगी बल्कि बेटियों को भी बेटों के समान ही समझने, अधिकार दिलाने में योगदान देगी। हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भी बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान का आगाज भी पानीपत की धरती से ही किया था। उसी कड़ी से जोड़कर यह अभियान बेटियों के साथ-साथ पर्यावरण को भी बढ़ाने में बहुत मददगार साबित होगा। पाँचवीं की छात्रा स्नेहा की माता अनीता देवी का कहना है कि जब हमारी बेटी ने घर पर बताया कि हमारे अध्यापक हमारे लिए जन्मदिन पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन करने जा रहे हैं तो सुन कर बहुत अच्छा लगा और पहली बार जीवन में इतनी अधिक खुशी हुई। उनकी दादी ने कहा कि हमारे जमाने में और आज के जमाने में बहुत अंतर आ गया है पहले तो लड़कियों के जन्मदिन मनाना तो दूर उसके बारे में सोचना ही दूर की बात थी। पर आज स्कूल में ही अध्यापकों द्वारा जन्मदिन मनाया जा रहा है जोकि वास्तव में यह समाज की नई सोच को दर्शाता है। विद्यालय की मुख्य शिक्षिका उमेश कुमारी का कहना है कि इस बार विद्यालय में सभी स्टाफ सदस्यों ने एक नई मुहिम चलाने का निर्णय किया कि

नए वर्ष की शुरुआत किसी नए अभियान से शुरू की जाए जिसके अंतर्गत जनवरी माह में बेटियों को मान सम्मान देने के साथ-साथ पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी तय करने व निर्वहन करने के लिए लाडली जन्म उत्सव व वृक्ष प्रहरी अभियान को शुरू किया गया। हम सब इस अभियान का हिस्सा बन कर बहुत खुश हैं और आशा करते हैं कि दूसरे विद्यालय भी बेटियों को इसी प्रकार से आगे बढ़ाने में सहयोग करेंगे।चौथी कक्षा की छात्रा पायल ने कहा कि लाडली जन्मोत्सव के अंतर्गत उसका जन्मदिन विद्यालय में मनाया गया। उसे एक बेटी होने पर बहुत ही गर्व की अनुभूति हो रही है। उसके परिवार में अभी तक बेटियों का जन्मदिन नहीं मनाया जाता था।लेकिन विद्यालय ने जो मान-सम्मान रूपी तोहफा जन्मदिन पर दिया है, इसे वह कभी नहीं भूल सकती। ऐसी मान सम्मान की शुरुआत अगर हर विद्यालय में शुरू हो जाए तो पढ़ाई में डर भी नहीं लगेगा और किसी भी बच्चे को यह न लगेगा कि वह किसी भी तरीके से दूसरे से कम है। छात्रा ने कहा कि मैं अपने सभी अध्यापकों को इस कार्य के लिए दिल से नमन करती हूँ। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि निगम पार्षद कोमल सैनी का कहना है कि ऐसी मुहिम से बेटियों को आत्मबल मिलेगा । बचपन से ही जो उन पर मानसिक दबाव बना रहता है, उसे कम करने में मदद मिलेगी व समाज में एक नई विचारधारा व सोच का सूत्रपात होगा। सरकारी स्कूलों में इस पर्यावरण मित्र, वृक्ष प्रहरी के रूप में नई जिम्मेदारी मिलने से ये बेटियाँ एक नई भूमिका को निभाने के लिए तैयार होंगी।

जेबीटी शिक्षक
राजकीय प्राथमिक पाठशाला
वार्ड-10, रानी महल, पानीपत

सोच समझ कर करें संकाय का चयन

वार्षिक परीक्षाओं का दौर जारी है। बच्चे कड़ी मेहनत करके परीक्षा देने में व्यस्त हैं। अब बच्चों को न भूख की चिंता है और न प्यास की। समय पर सोना, समय पर खाना और जरूरत के मुताबिक आराम करना भी बच्चे भूल चुके हैं। अब सबके सिर पर परीक्षा का भूत सवार है। और हो भी क्यों न, वर्ष भर की पढ़ाई का परिणाम जो सामने आना है। बच्चों के लिए परीक्षा देना मैदान-ए-जंग के समान है। साथ ही उनके अभिभावकों के लिए भी यह दौर किसी अग्नि परीक्षा से कम नहीं होता है। अभिभावक भी ऐसे दौर में एक उपदेशक की भूमिका अदा करते हुए नजर आते हैं। बच्चों को कब और कितना पढ़ना है, इस बात को भी भूल जाते हैं। बस उन पर अनावश्यक दबाव बनाते रहते हैं। उन्हें हर समय पढ़ने के नाम पर ताने देते रहते हैं। इसका सीधा सा असर बच्चे की मनःस्थिति पर पड़ता है। बच्चा वर्ष भर विद्यालय में जाता है, ट्यूशंस भी अटेंड करता है। अगर वर्ष भर की तैयारी के अनुरूप परीक्षा में प्रश्न पूछे जाते हैं तो बच्चों की मेहनत सफल हो जाती है और इसके विपरीत अगर प्रश्न पाठ्यक्रम के अनुरूप नहीं आ पाते तो उनकी मेहनत पर पानी फिर जाता है। ऐसी स्थिति में बच्चे कुंठित हो जाते हैं और अगले पेपर की तैयारी ठीक ढंग से नहीं कर पाते हैं।

परीक्षा की समाप्ति के पश्चात सभी को अपने-अपने परीक्षा परिणाम का बड़ी बेसब्री से इंतजार रहता है। छोटे बच्चों के लिए यह किसी मेले के आनंद से कम नहीं होता है। छोटे बच्चे को पता होता है कि अब वह अगली कक्षा में जाएगा। उसकी नई किताबें, नया बैग, नई यूनिफॉर्म, नए टीचर और नई कक्षा में कुछेक नए मित्र भी होंगे। वहीं बड़े बच्चों के लिए अर्थात् दसवीं कक्षा की परीक्षा दे चुके विद्यार्थियों के लिए यह समय अत्यंत चुनौतीपूर्ण होता है। परीक्षा परिणाम आते ही कुछ बच्चे स्वविवेक से स्वरुचि के अनुरूप अपने संकाय का चयन कर लेते हैं। जबकि कुछ बच्चे बिना सोचे समझे अथवा अपने मित्र या अभिभावक के कहने पर ऐसे संकाय का चयन कर लेते हैं जो उनकी रुचि के प्रतिकूल होता है। मनोविज्ञान के अनुसार अगर बच्चा अपनी रुचि के अनुसार कार्य नहीं करता है तो वह कार्य कालांतर में नीरस बन जाता है और धीरे-धीरे बच्चे का उसके प्रति मोह भंग होने लगता है। अतः संकाय एवं विषय के चयन में बच्चे को पूर्णतया सावधानी बरतनी चाहिए। कभी किसी के बहकावे में आकर अथवा बिना सोचे समझे संकाय का चुनाव नहीं करना चाहिए। अगर परिवार में उच्च शिक्षित बड़ा भाई अथवा बहन है तो उससे परामर्श लिया जा सकता है। अपने शिक्षक का मार्गदर्शन भी इसमें कारगर सिद्ध हो सकता है। बच्चों को अपने शिक्षकों से समय-समय पर करिअर संबंधी जानकारी लेते रहना चाहिए ताकि भविष्य में उन्हें कभी दो नावों पर सवार न होना पड़े। साथ ही बच्चों को समाचार-पत्र पढ़ने की आदत भी डालनी चाहिए क्योंकि विभिन्न समाचार-पत्रों में साप्ताहिक करिअर संबंधी कॉलम प्रकाशित होता है। ऐसी जानकारी बच्चों के करिअर के लिए निर्णायक की भूमिका निभा सकती है।

विनोद वर्मा 'दुर्गेश'
पूर्व प्रवक्ता आर्य कॉलेज ऑफ एजुकेशन
गाँव तोशाम, जिला भिवानी

पर्यायवाची और विलोमार्थी शब्दों की अवधारणा : एक प्रयोग

प्रमोद दीक्षित 'मलय'

शिक्षक-प्रशिक्षणों एवं विद्यालयों में भ्रमण के दौरान मैंने पाया है कि लगभग प्रत्येक स्कूल में विलोमार्थी, तत्सम-तद्भव, पर्यायवाची एवं उच्चारण में समान शब्दों के रटवाने पर शिक्षकों का बहुत जोर रहता है न कि बच्चों में एक सामान्य समझ विकसित करने पर। इसका परिणाम यह होता है कि बच्चे अक्सर भ्रम का शिकार हो जाते हैं। वे इन शब्दों के आपसी अन्तर और उनकी प्रकृति को नहीं समझ पाते। हालाँकि कुछ नवाचारी शिक्षक इस प्रयास में रहते हैं कि बच्चों में समझ बनाई जाए, लेकिन ऐसे शिक्षकों की संख्या बहुत थोड़ी होती है।

कई शिक्षकों ने इस समस्या को मेरे सामने रखा और सरल उपाय चाहा जिसे बच्चे आसानी से समझ सकें। मैंने सोचा कि क्यों न बच्चों से विलोमार्थी और पर्यायवाची शब्दों पर नए तरीकों और गतिविधियों के माध्यम से बात की जाए। इस हेतु कार्ड अच्छा विकल्प हो सकते हैं, ऐसा सोचकर मैंने घर पर उपलब्ध बेकार वस्तुओं से विलोमार्थी शब्दों और पर्यायवाची शब्दों के कार्ड बनाने का निश्चय किया।

मैंने वैवाहिक निमंत्रण पत्र, बाजार से लाए गए सामानों के पैकेट, पुरानी कापियों के मोटे-चिकने कवर एकत्र किए। उनमें से 2 गुणा 1 इंच के एक समान टुकड़े काट लिए। इनकी एक सतह चिकनी और सफेद थी तो दूसरी लगभग खुरदुरी। सफेद चिकनी सतह पर लिखना उपयुक्त लगा। कई रंग के स्केच पेन लिए। पहले विलोमार्थी शब्द लिखना प्रारम्भ किया। प्रयास किया कि शब्द और उसका विलोम एक ही रंग के पेन से लिखूँ ताकि बच्चों के लिए समझना आसान हो सके।

कुछ दिनों पूर्व एक विद्यालय में 4 एवं 5 की सम्मिलित कक्षा में मैंने उनकी भाषा की पाठ्य पुस्तक 'कलरव' के विभिन्न पाठों से बच्चों द्वारा ऐसे शब्दों की एक सूची बनवाई थी। ऐसे 70-80 शब्द और उनके विलोम के कार्ड मैंने तैयार किए। मैंने पानी, कमल, बादल, समुद्र, घर, बिजली, जंगल, पेड़, देवता, इन्द्र, सूर्य, पृथ्वी, आग, आकाश, दिन, कपड़ा, नेत्र, धनुष, तालाब, नदी, फूल आदि शब्दों के पर्यायवाची कार्ड भी बनाए। कार्ड बनाते समय यह ध्यान रखा कि किसी शब्द के सभी पर्यायवाची एक ही रंग से लिखे जाएँ ताकि पहचान सहज सम्भव हो। कार्ड तैयार करने में कक्षा नौ में अध्ययनरत मेरी बेटी संस्कृति ने भी सुझाव दिए और सहयोग किया। लगभग दो घंटे की मेहनत के बाद मेरे पास बिना कोई धन खर्च किए कुछ कार्ड तैयार हो गए। मैं रोमांचित था और एक नए अनुभव से गुजरने को उत्सुक भी।

अक्टूबर का आखिरी सप्ताह था। मेरा एक प्राथमिक विद्यालय में जाना हुआ। रात में बारिश होने के कारण वातावरण में ठंड बढ़ गई थी। इस कारण उस दिन विद्यालय में बच्चों की संख्या कुछ कम थी।

मैं कक्षा 4 एवं 5 के बच्चों के साथ विलोमार्थी एवं पर्यायवाची शब्दों पर काम करने वाला था। मैं सीधे कक्षा 5 में चला गया। 14 बच्चे आए थे। गणित का शिक्षण चल रहा था। बच्चे ब्लैकबोर्ड में शिक्षिका द्वारा हल किए गए

'भाग' के सवाल को अपनी कॉपियों में उतार रहे थे, जो 3 अंकों के भाजक पर आधारित थे। कक्षा में घूमकर देखा तो बच्चे बिना किसी समझ एवं जिज्ञासा के ब्लैकबोर्ड में हल किए गए सवाल को ज्यों का त्यों उतारने में व्यस्त थे और कई सारे अंक इधर-उधर हो रहे थे। मैंने शिक्षिका से प्रश्न किया कि क्या बच्चों को भाग की संक्रिया की समझ है और क्या वे दो अंकीय भाजक वाले सवाल हल करना सीख गए हैं? शिक्षिका का कहना था कि इन्हें नहीं आता है, लेकिन मुझे कोर्स पूरा करना है। मैं सोच रहा था कि बच्चे सवाल करने के बाद भी भाग की गणितीय प्रक्रिया से अनजान बने रहेंगे और इस कमी को लेकर अगली कक्षा में पहुँच जाएँगे। बच्चों के सवाल उतार लेने के बाद शिक्षिका मुझे बच्चों के बीच छोड़ चली गईं। मैंने बच्चों से कक्षा 4 में चलने को कहा और कक्षा 3 के बच्चों को भी बुला लिया। अब बच्चों की सम्मिलित संख्या 29 पहुँच गई जो पर्याप्त थी।

मैंने शिक्षिकाओं से कहा कि यदि वे चाहें तो कक्षा में पीछे कुर्सी डाल कर बैठ सकती हैं। यह सुनकर प्रशिक्षु शिक्षिका पीछे बैठ गईं और प्रधान शिक्षिका एवं शिक्षामित्र ने बाहर बरामदे में बैठना उचित समझा। मैं इस विद्यालय में दूसरी बार आया था। पिछली भेंट में मैंने बच्चों से उनके नाम जाने थे और अपना परिचय दिया था।

मैंने बच्चों से किसी के द्वारा मेरा परिचय कराने को कहा लेकिन एक भी बच्चा खड़ा नहीं हुआ। मैंने उनसे उनका परिचय देने को कहा तो भी कोई नहीं बोला। मुझे याद आ रहा था कि पिछली बार भी ऐसा ही हुआ था। तब मैंने शिक्षिकाओं को कहा था कि प्रार्थना स्थल पर या उनकी अपनी कक्षा में बच्चों से प्रतिदिन परिचय देने की गतिविधि करवाई जाए। जिसमें वे अपना स्वयं का और अपने किसी एक साथी का परिचय दें। साथ ही बच्चों से उनके परिवेशीय ज्ञान के आधार पर खूब बातचीत की जाए। ताकि बच्चे अपने विचारों को अभिव्यक्त करना सीख सकें। लेकिन लगता है कि पिछले 40 दिनों में कुछ भी काम नहीं किया गया था अन्यथा बच्चे कुछ तो बोलते। खैर, मैंने पुनः अपना परिचय दिया। फिर एक गतिविधि की जिसमें सभी बच्चों को मेरे साथ हाव-भाव से एक गीत गाते हुए प्रदर्शन करना था-

रज्जू के बेटों ने मिट्टी के ढेरों में
कद्दू के कई बीज बोए, बोए, बोए।
रात का अँधेरा था, चूहों का डेरा था
दो चूहे बीज खाने, गए, गए, गए।
सुबह को न बीज थे, न मिट्टी के ढेर थे
दो चूहे मोटे होकर, सोए, सोए, सोए।

बच्चों ने गाने का खूब मजा लिया। बच्चों की माँग

पर इसे दो-तीन बार गाया और भावानुसार अभिनय किया गया। गतिविधि पूरी होने के बाद मैंने कहा कि कद्दू क्या है और इसका क्या उपयोग होता है?

एक लड़का बोला, 'गोल गोल इतना बड़ा (हाथ से आकार बनाते हुए)। इसकी सब्जी बनती है। उसे पौल (छोटे-छोटे टुकड़ों में काटना) लेते हैं और छौंक देते हैं, तेल, मसाला, पानी डाल देते हैं।' लड़के की बात को काटते हुए अचानक प्रधान शिक्षिका बोलीं, 'कद्दू की सब्जी में पानी नहीं डाला जाता, तुम लोगों को कुछ भी नहीं आता है।'

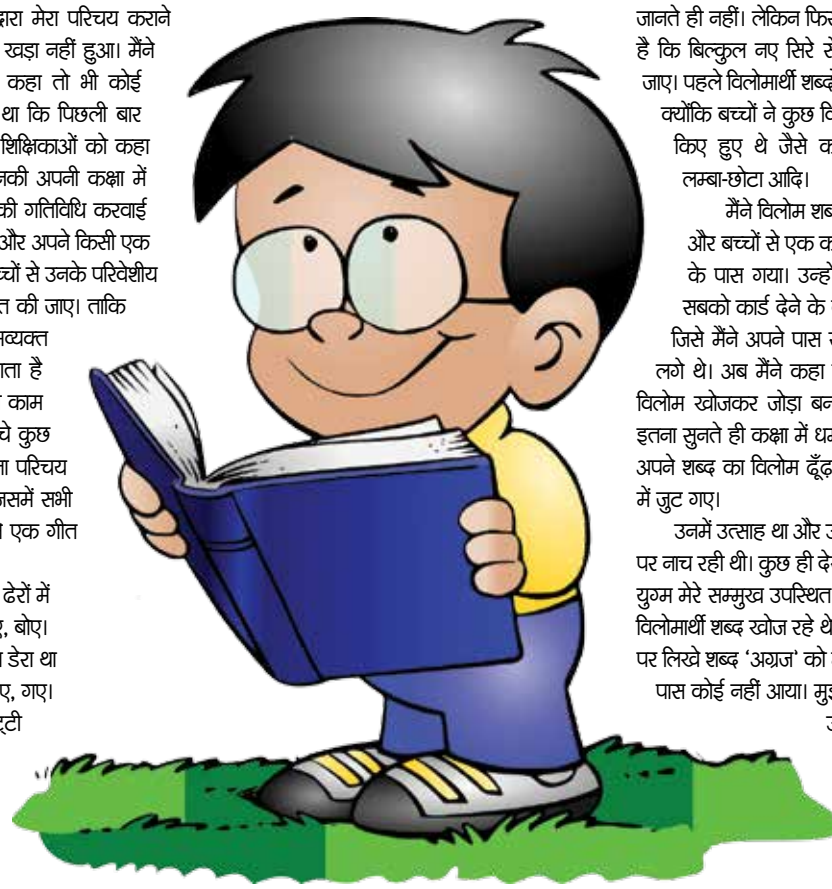

इस पर मैंने उन्हें चुप रहने का संकेत करते हुए कहा कि कद्दू की सब्जी बनाने के अलग-अलग तरीके हो सकते हैं। सम्भव है उस बच्चे के घर में कद्दू की सब्जी बनाने में पानी डाला जाता हो, तो वह उसका अनुभव है। फिर मैंने कहा कि गीत में कद्दू के बीज की जगह दूसरी किन सब्जियों के बीज ले सकते हैं। एक-एक कर बच्चे बोलने लगे लौकी, भिंडी, तोरई, सेम, चचींड़ा, रेरुवा, कुम्हड़ा, टमाटर, बैंगन आदि के बीज। फिर उन सब सब्जियों के पौधों-बेलों, रंग, आकार, स्वाद, उपयोग और उनके उगने के मौसम के बारे में चर्चा हुई। बच्चों को कौन-सी सब्जी पसन्द है और क्यों, इस पर भी बच्चों ने अपनी भाषा-बोली में खूब मजेदार बातें कहीं। बच्चों का बोलना जारी था। उनकी झिझक-संकोच दूर हो चुकी थी।

समय तेजी से बीत रहा था। विलोमार्थी और पर्यायवाची शब्दों पर अभी बात शेष थी। अब मैंने उस पर चर्चा करना उचित समझा। मैंने बच्चों से पर्यायवाची और विलोम शब्दों के बारे में पूछा। बच्चों ने कुछ विलोम शब्द तो रटे हुए थे पर पर्यायवाची शब्दों से बिल्कुल अनजान थे। शिक्षिका ने कहा कि इनके बारे में अभी बताया नहीं गया है। अगले सप्ताह बताने वाले हैं।

मेरे सामने संकट आ गया कि अब इस विषय को बच्चों के सामने कैसे रखूँ, जबकि बच्चे उस पर कुछ जानते ही नहीं। लेकिन फिर लगा यह तो और भी अच्छा है कि बिल्कुल नए सिरे से बातचीत की शुरुआत की जाए। पहले विलोमार्थी शब्दों पर चर्चा करना उचित लगा क्योंकि बच्चों ने कुछ विलोमार्थी शब्दों के युग्म याद किए हुए थे जैसे काला-सफेद, आकाश-पाताल, लम्बा-छोटा आदि।

मैंने विलोम शब्दों के 15 जोड़ी कार्ड निकाले और बच्चों से एक कार्ड चुनने को कहा। मैं बच्चों के पास गया। उन्होंने एक-एक कार्ड ले लिया। सबको कार्ड देने के बाद एक कार्ड बचा रह गया जिसे मैंने अपने पास रख लिया। बच्चे कार्ड पढ़ने लगे थे। अब मैंने कहा कि कार्ड में लिखे शब्द का विलोम खोजकर जोड़ा बना कर एक साथ बैठना है। इतना सुनते ही कक्षा में धमाचौकड़ी मच गई और बच्चे अपने शब्द का विलोम ढूँढ़कर जोड़ी बनाने की प्रक्रिया में जुट गए।

उनमें उत्साह था और उनकी खुशी की चमक चेहरों पर नाच रही थी। कुछ ही देर में विलोमार्थी शब्दों के आठ युग्म मेरे सम्मुख उपस्थित थे। शेष बच्चे अभी भी अपने विलोमार्थी शब्द खोज रहे थे। एक कार्ड मेरे पास था जिस पर लिखे शब्द 'अग्रज' को मैंने दो-तीन पर पढ़ा, पर मेरे पास कोई नहीं आया। मुझे समझते देर नहीं लगी कि उन बच्चों को अब थोड़ी मदद की जरूरत है।

मैंने शब्द और उसका विलोम एक ही रंग के स्केच पेन से लिखे थे तो मैंने

कहा कि जिनके कार्डों के रंग समान हों वे एक साथ जोड़ी बना लें। तुरन्त ही जोड़ियाँ बन गईं, लेकिन एक बच्चा बचा रह गया। मैंने उसे शब्द पढ़ने को कहा। पर वह पढ़ न सका। एक लड़की ने उसका शब्द पढ़ा- अनुज। कुछ बच्चे बोल पड़े, 'अनुज का विलोम शब्द होगा अग्रज जो कि आपके पास है।' इस गतिविधि को एक बार और किया गया। मैंने कुछ विलोम शब्द युग्म हटाकर नए मिला दिए। इस बार बच्चों ने जल्दी और बेहतरी के साथ काम पूरा किया।

अब पर्यायवाची शब्दों की चर्चा की बारी थी। मैंने बच्चों के परिवेशीय ज्ञान का आधार लेकर बात प्रारम्भ की कि हम सबके कई नाम होते हैं। एक नाम वह जो स्कूल के रजिस्टर में लिखा होता है, दूसरा घर का नाम, दोस्तों के बीच का नाम, ननिहाल में पुकारे जाने वाला नाम आदि। जैसे स्कूल के रजिस्टर में मेरा नाम प्रमोद दीक्षित लिखा है लेकिन घर में सब लोग राजा कहते हैं। ननिहाल में राजू और दोस्त नन्ना जी कहकर बुलाते हैं। तो राजा, राजू, नन्ना जी शब्द मेरे अपने नाम के पर्यायवाची हैं। वैसे यह बहुत सटीक उदाहरण नहीं था पर बच्चों की समझ अनुसार मुझे उचित लगा।

फिर मैंने बच्चों से पूछा, तुम्हारे कितने नाम हैं। मनोज बोला कि उसके घर का नाम लाला, ननिहाल का नाम मिट्ठू है। संदीप बोला घर में गोलू और ननिहाल में चिंटू पुकारते हैं। रानी बोली घर में काजल, मौसी के यहाँ गौरी और ननिहाल में दिव्या कहते हैं। इस तरह लगभग एक दर्जन बच्चों ने अपने नाम बताए। उनके बताए नामों को मैं ब्लैकबोर्ड में उनके स्कूली नाम के आगे लिखता जा रहा था। अब तो हर बच्चा अपना नाम ब्लैकबोर्ड में अंकित देखने का इच्छुक था। मुझे लगा कि अब बच्चों में पर्यायवाची शब्दों की एक मोटी सामान्य समझ बन गई है। इस समझ को तराशने और पर्यायवाची शब्दों के अर्थ की दृष्टि से और नजदीक ले जाने के लिए मैंने एक अन्य उदाहरण लेना उचित समझा।

अपनी शर्ट की ओर संकेत करके मैंने बच्चों से जानना चाहा कि यह क्या है? एक ने कहा सल्ट (शर्ट) है, दूसरे ने बुसकैट (बुशशर्ट), तीसरे ने कमीज, चौथे ने कुरती और एक अन्य ने मिरजई कहा। एक और उदाहरण के रूप में स्कूल के बगल में स्थित तालाब की ओर इशारा करते हुए पूछा कि वह क्या है? बच्चों से उत्तर में ताला, तलैया, पोखर शब्द मिले। बच्चे बिल्कुल सही दिशा में बढ़ रहे थे। सभी के उत्तरों को मिलाकर मैंने कहा कि जिन शब्दों से एक ही वस्तु का बोध हो तो वे सब शब्द उस वस्तु के पर्यायवाची या समानार्थी शब्द कहलाते हैं। बच्चों के चेहरों में सन्तुष्टि के भाव थे और मैं उनमें पर्यायवाची शब्दों की बनती एक समझ को अनुभव कर रहा था।

अब मैंने पर्यायवाची शब्दों के 4 कार्ड निकाले। प्रारम्भ में पानी, कमल, बादल और समुद्र ऐसे चार शब्द लिए। चार बच्चों को बुलाकर कार्ड चुनने को कहा। वे एक-एक कार्ड लेकर अपनी जगह बैठ गए। फिर इन शब्दों के पर्यायवाची कार्ड निकालकर मेज पर रख दिए। बच्चे आए और एक-एक कार्ड उठाकर अपनी जगह चले गए। सब अपने कार्ड के साथ दूसरों के कार्ड भी पढ़ रहे थे। एक-दो बच्चे ऐसे भी थे जो कार्ड में लिखा शब्द नहीं पढ़ पा रहे थे, उनकी मदद दूसरे बच्चों ने की। कक्षा में थोड़ा शोरगुल होने लगा था। क्योंकि एक-दूसरे का कार्ड पढ़ने के लिए बच्चे कक्षा में इधर-उधर दौड़ लगा रहे थे।

मैंने कहा कि पानी वाला कार्ड किसके पास है तो एक लड़की सामने आ गई। अच्छा अब बताओ कि पानी के पर्यायवाची शब्दों के कार्ड किनके पास हैं? कोई हलचल नहीं। मुझे ध्यान आया कि यह तो इन्हें कभी बताया ही नहीं गया। इसलिए थोड़ी मदद की जरूरत है। मैं बोला कि जल, नीर, वारि, अम्बु लिखे कार्ड जिनके पास हों वे सामने आ जाएँ। फिर शोरगुल होने लगा। क्योंकि बच्चे अपने-अपने कार्ड पढ़ने-पढ़वाने लगे। कुछ ही देर में चार बच्चे अपने कार्डों के साथ उस लड़की के साथ खड़े हो गए। सबने अपने कार्डों में लिखे शब्दों को दो-तीन बार पढ़ा जिसे अन्य बच्चों ने दुहराया। मैं खुश था कि बच्चे पानी के पर्यायवाची समझने की कोशिश कर रहे थे। कमल के पर्यायवाची के लिए मैंने मदद करते हुए कहा कि अभी जो पानी के पर्यायवाची शब्द आए थे उनके अन्त में यदि ज अक्षर लगा दिया जाए तो वे कमल के पर्यायवाची शब्द बन जाएँगे। इतना कहने पर सब अपने कार्ड पढ़ने लगे और अपने आप एक समूह के रूप मे सामने आ गए जिनके शब्द थे कमल, जलज, नीरज, वारिज, अम्बुज। बच्चे बिना किसी दबाव, भय, डर एवं तनाव के खेल-खेल में भाषा का एक पाठ मस्ती से सीख-समझ रहे थे।

कक्षा में पीछे बैठी शिक्षिका ने आग्रह किया कि बादल और समुद्र के पर्यायवाची वह निकलवाना चाहतीं हैं। मुझे अच्छा लगा कि वह रुचि ले रही हैं। उन्होंने यह काम सुन्दर तरीके से पूरा किया। चारों शब्दों के पर्यायवाची खोजने की गतिविधि कई बार की गई। बच्चे पूरी तरह समझ चुके थे। हालाँकि मुझे लगा कि यदि कार्ड का आकार एवं शब्दों की लिखावट और बड़े होते तो बेहतर होता। कक्षा का समय पूरा हो चुका था।

मैंने देखा कि कक्षा 4 एवं 5 के बच्चे आपस में पर्यायवाची शब्दों की गतिविधि का खेल खेलते हुए चहक रहे थे। मुझे विश्वास है कि इस गतिविधि से अर्जित विलोम एवं पर्यायवाची शब्दों का ज्ञान कभी विस्मृत नहीं होगा क्योंकि इसे उन्होंने स्वयं करके सीखा था। बच्चों में उमंग, उत्साह और ऊर्जा का एक सतत प्रवाह हिलोरें लेता रहता है।

प्रमोद दीक्षित 'मलय' : ब्लॉक संसाधन केन्द्र, नरैनी जिला बाँदा (उत्तर प्रदेश) में सह-समन्वयक हिन्दी भाषा के पद पर कार्यरत। प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक बदलावों, आनन्ददायी शिक्षण एवं नवाचारी मुद्दों पर सतत लेखन एवं प्रयोग।

सम्पर्क - 79/18, शास्त्री नगर , अतर्रा पिनकोड - 210201, जिला- बाँदा, उप्र।

भाषा शिक्षण में डिकोडिंग एक अहम तत्त्व

आज प्राथमिक स्तर पर विद्यालयों में हिंदी भाषा शिक्षण में डिकोडिंग के लिए व्यवस्थित शिक्षण की जरूरत है । आओ , पहले यह जान लें कि डिकोडिंग क्या है? अक्षर ध्वनि सम्बन्धों के ज्ञान का प्रयोग करके किसी शब्द को प्रिंट से ध्वनि में बदलने कि प्रक्रिया को डिकोडिंग कहा जाता है। इसके अंतर्गत अलग-अलग वर्णों, अक्षरों, मात्राओं को पहचानना, ध्वनियों को आपस में जोड़ना तथा पूरे शब्द को एक साथ उच्चरित करना या पढ़ना और अर्थ समझना शामिल है । डिकोडिंग में मुख्य रूप से दो बातें आती हैं- चिह्न ध्वनि का सह-संबंध तथा ध्वनियों का जोड़ना। बच्चे को एक कुशल पाठक बनाने के लिए यह सुनिश्चित करना होगा कि बच्चा डिकोड करना जल्दी और अच्छी तरह सीख जाए। अगर बच्चा कक्षा -1 और शुरुआती कक्षा -2 तक अच्छी डिकोडिंग क्षमता नहीं विकसित कर पाता, तो वह आगे की कक्षाओं में कमजोर पाठक बना रहता है । प्राथमिक स्तर पर डिकोडिंग सीखने की प्रक्रिया निम्न प्रकार से होनी चाहिए -

ध्वनि जागरूकता का विकास
वर्ण /अक्षर ध्वनि परिचय
ध्वनियों को जोड़कर शब्द बोलना या पढ़ना
शब्द पहचान की क्षमता का विकास
सुपरिचित अक्षरों व शब्दों वाले पाठ पढ़ने का अभ्यास

कई शब्दों को दृश्य शब्द के रूप में पढ़ते हुए प्रवाहपूर्वक डिकोडिंग करना

कक्षा कक्ष में डिकोडिंग का शिक्षण व्यवस्थित , स्पष्ट और क्रमबद्ध, तरीके से होना चाहिए। सर्वप्रथम शिक्षक को प्राथमिक स्तर पर शुरुआत में 5-6 वर्ण ही बच्चों को सिखाने चाहिएँ । इन्हीं वर्णों से ढेर सारे शब्द बच्चा सीख जाता है । ऐसा होने से बच्चे डिकोडिंग के साथ-साथ अर्थ निर्माण की प्रक्रिया से जुड़े रहते हैं । इसके लिए वर्ण व अक्षर सिखाने का एक ऐसा क्रम काम में लिया जाए जिससे बच्चे कुछ वर्ण मात्रा की पहचान के साथ ही शब्द बनाना और पढ़ना सीखने लगे । बच्चों को कक्षा कक्ष में अभ्यास के बहुत से मौके मिलने चाहिएँ जिनमें कई तरह की रोचक गतिविधियाँ और खेल शामिल हों। डिकोडिंग का शिक्षण कालांश के एक- तिहाई

समय से ज्यादा नहीं होना चाहिए । 80-90 मिनट के दो कालांशों में से केवल 25-30 मिनट ।

इसी संदर्भ में उनके द्वारा कक्षा पहली और दूसरी के बच्चों के डिकोडिंग के तहत फ्लैश कार्ड के माध्यम से, पासे की खेल के माध्यम से वर्ण व अक्षर की पहचान करवाई गई और फ्लैश कार्ड के माध्यम से बच्चों ने वर्ण व अक्षर की पहचान करते हुए शब्दों का निर्माण भी किया। इसी प्रकार स्व निर्मित शब्द पहिए के माध्यम से बच्चों ने आज शब्दों का निर्माण किया। हिंदी भाषा शिक्षण में डिकोडिंग एक अहम तत्त्व है। यदि बच्चा शुरुआती कक्षाओं में डिकोडिंग की दक्षता हासिल कर लेता है तो वह अर्थ-निर्माण करते हुए भाषा की समझ विकसित करने में कामयाब हो जाता है । हमें प्राथमिक स्तर से ही बच्चों की डिकोडिंग की दक्षताएँ विकसित कर लेनी चाहिए । इसके लिए विद्यालय में विभिन्न प्रकार के खेल करवाते हुए बच्चों से डिकोडिंग का अभ्यास करवाया जाना चाहिए ताकि बच्चे खेल-खेल में डिकोडिंग सीख जाएँ और अर्थ निर्माण पर समय देने का उन्हें मौका मिले। डिकोडिंग सिखाने के लिए निम्न सामग्री उपयोगी साबित हो सकती हैं -

वर्ण कार्ड - जिसमें वर्ण साफ और बड़ा बड़ा लिखा हो, अक्षर कार्ड, वर्ण चार्ट- वर्णों व अक्षरों के अभ्यास के लिए बड़े चार्ट, डिकोडिंग योग्य पाठ, वर्ण / अक्षर ग्रिड- ऐसी ग्रिड जिसमें वर्ण व अक्षर होते हैं। नियमित व बेतरतीब शब्द पहिया, फ्लिप बोर्ड, वर्ण /अक्षर पासा।

डिकोडिंग के लिए बच्चों को अभ्यास के अधिक से अधिक मौके दिये जाने चाहिएँ। जो बच्चे डिकोडिंग सीखने में धीमी गति से बढ़ रहे हों, उन पर विशेष ध्यान देते हुए उन्हें लगातार अतिरिक्त मौके और अभ्यास दिए जाने चाहिएँ । जब बच्चा कक्षा में अच्छी तरह डिकोडिंग करने लग जाएगा, तो समझ लीजिए वह भाषा सीखने में सफल हो जाएगा ।

डॉ विजय कुमार चावला
हिंदी प्राध्यापक
राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, क्योड़क, जिला कैथल

बच्चे और किताबों की दुनिया

दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश'

'हर स्कूल में पुस्तकालय हो, इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है ? पर ऐसा हो भी जाय तो यह जरूरी नहीं कि बड़ी संख्या में बच्चे बहुत सारी किताबें पढ़ने लगेंगे। पुस्तकालय की व्यवस्था एक आर्थिक सवाल है। बच्चों में किताब पढ़ने की आदत का होना एक शैक्षिक सवाल है।' यह कथन है मान्य शिक्षाविद प्रोफेसर शिवकुमार का। 'आर्थिक सवाल' और 'शैक्षिक सवाल' मूलतः दो परस्पर विरोधी ध्रुवान्त हैं। मैं सोचता हूँ, अगर इस ध्रुवान्त के बरअक्स एक अध्यापक सुगमकर्ता की भूमिका में आ जाए तो निश्चय ही बच्चों और किताबों के बीच सम्भावनाओं के दरवाजे खुल सकते हैं। मुझे बचपन की याद है, स्कूली किताबों से इतर कोई पत्रिका या पुस्तक मिलने पर गजब का मजा आ जाता था। फिर सही दिशा में प्रयास करके आज के इन्फार्मेशन टेक्नॉलाजी के सुपर हाइवे पर सरपट भागते बच्चों को पुस्तक की तरफ क्यों नहीं मोड़ा जा सकता ?

अध्यापक बनने के बाद मैंने इस प्रश्न पर कई स्तरों पर विचार किया। यद्यपि आज के बच्चों की ललक टीवी, कम्प्यूटर और इन्टरनेट की दिशा में बहक चुकी है। फिर भी मेरे ख्याल से बच्चों को पुनः पुस्तकों के दायरे में लाया जाना चाहिये। क्योंकि गैजेट से लगे रहना एक लत है, जबकि पुस्तक पढ़ने की रुचि एक संस्कार है। अध्यापकीय दायित्व के तहत बच्चों में अध्ययनशीलता के संस्कार का विकास प्राथमिकता के स्तर पर लिया जाना चाहिये।

बचपन के दिनों में स्कूलों में किताबें उपलब्ध रहती थीं। 'गंगा पुस्तक माला' की छोटी-छोटी पुस्तकों का सेट हर साल एक या दो बार आता था। बालभारती, बालसखा, रानी बिटिया, राजा बेटा जैसी पत्रिकायें भी बीच-बीच में आ जाती थीं। पत्रिकाओं के एक साथ कई अंक आते थे। गुरुजी यह किताबें हमें देते थे। शनिवार की बाल सभा में पत्रिकाओं से कहानी वाचन होता था। स्वर के साथ कवितायें पढ़ी जाती थीं, तब पढ़ाई-लिखाई से इतर गतिविधियों का जमाना नहीं था, लेकिन इतना कुछ तो गुरुजी करवाते ही थे। स्कूल वाले दिनों की यादों के आधार पर मैं कई विद्यालयों में बच्चों को शिक्षणेतर पुस्तकों की दिशा में मोड़ने का प्रयास कर चुका हूँ। इन अनुभवों को आपके साथ बाँटने के पूर्व मैं विद्यालयों खासकर प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तर पर पुस्तकालय की वर्तमान स्थिति पर चर्चा करना चाहूँगा। मेरा अनुभव है, अधिकांश प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों में पुस्तकालय नहीं हैं। जिन विद्यालयों में किताबें हैं, वहाँ यह अलमारी या बक्से में बंद रखी जाती हैं। पढ़ने-पढ़ाने से इनका कोई सरोकार नहीं होता।

ऐसे ही एक मामले की चर्चा करना चाहूँगा। एक उच्च प्राथमिक विद्यालय जो सन् 1885 में स्थापित हुआ था और जिसमें पुराने से लेकर नये समय के बहुत से सामान थे। यहाँ 6' X 5' X 4' की नाप वाला एक लकड़ी का बॉक्स था, उसके ऊपर सफेद रंग से 'पुस्तकालय' लिखा था। मेरे काफी अनुरोध और अनुनय-विनय के पश्चात् प्रधानाध्यापक महोदय इसे खोलने को राजी हुए, जबकि इससे पूर्व अठारह साल पहले चार्ज लेते समय उन्होंने इसे खोलकर पुस्तकों का मिलान किया था और फिर सूची सहित इसे बन्द करके भूल गये थे। 'ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड' और 'डीपीईपी' के दिनों में आई पुस्तकें

अलमारी में बन्द थीं।

खैर जिस दिन यह बॉक्स खोला गया, एक अजीब सी तीखी गैस का भभका कमरे में भर उठा। करीब आधे घण्टे बाद देखने पर पता चला कि इसमें बहुत ही महत्त्वपूर्ण किताबें थीं। इतिहास, महाकाव्य, पुराण, उपन्यास, कहानी, जीवनी, लोककथा, विदेशी लेखकों की कृतियों के हिन्दी अनुवाद सम्बन्धी छोटी-बड़ी चार सौ किताबें बक्से में से निकलीं। दुर्भाग्यवश इनमें काफी किताबों के पन्ने आपस में चिपक गये थे। हरेक बरसात में छत से टपके पानी का रिसाव बक्से में हो गया था और कथासरित्सागर, दशकुमारचरित, अलिफलैला, राबिन्स क्रूसो, भारत में ब्रिटिशराज (सुन्दरलाल), मध्य एशिया का इतिहास (राहुल सांकृत्यायन) जैसी पुस्तकें जमकर बेकार हो गयी थीं।

यह कुप्रबन्धन और पुस्तकों के प्रति संवेदनहीनता का मामला है। यदि पुस्तकों का उपयोग हुआ होता तो इस हालत में न पहुँचतीं। अध्यापक यह तर्क देते हैं कि बच्चे पाठ्य-पुस्तक ही नहीं पढ़ते, फिर अन्य किताबें क्यों पढ़ेंगे? स्कूली किताबें पढ़ना उनकी मजबूरी होती है, इसलिए यह उन्हें अनाकर्षक और उबाऊ लगती हैं। इसके विपरीत स्वतन्त्र रूप से पढ़ी जाने वाली बालोपयोगी पुस्तकें किसी दबाववश नहीं, बल्कि सहज आकर्षण और ललक से पढ़ी जाती हैं। इसलिए बच्चों का मन इन पुस्तकों में खूब रमता है। इससे उनकी जानकारी समृद्ध होती है और सीखने के स्तर में सुधार होता है। प्रशिक्षण शिविरों और अभिप्रेरण अभियानों से अध्यापकों में यह समझ पैदा की जानी चाहिये कि शिक्षण को प्रभावी और आनन्ददायी बनाने में स्कूल पुस्तकालय की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो सकती है।

पुस्तकालय को लेकर हमारे दिमाग में एक परम्परागत छवि है, जिसमें पुस्तकों से भरी आलमारियाँ, सूची पत्र, पुस्तक निर्गमन रजिस्टर सम्बन्धी कई उपक्रम होते हैं। छोटे बच्चों के पुस्तकालय का अलग रूप होना चाहिये, जो बच्चों के लिए रोचक और खुला हो। इसमें प्रबन्धन सम्बन्धी जटिल औपचारिकतायें न हों। ये सहज पुस्तकालय प्राथमिक स्तर के बच्चों के लिए घरेलू मौखिक संस्कृति से विद्यालयीय साक्षर संस्कृति में प्रवेश के पुल बन सकते हैं।

सबसे जरूरी यह है कि अध्यापकों के पास बच्चों की किताबों के सम्बन्ध में सही समझ हो। कैसी किताबें बच्चों के लिए अच्छी रहेंगी? कौन-सी विषयवस्तु वाली पुस्तकें बच्चों को पसन्द आती हैं? हमारी यह धारणा होती है कि बच्चों को दी जाने वाली पठन सामग्री से उनको ज्ञान मिलना चाहिये। इससे उनको सीख, शिक्षा या उपदेश मिले, जबकि हमें जानना चाहिये कि इस प्रकार की किताब को लेकर बच्चे क्या सोचते हैं? बाल मनोविज्ञान के पंडितों का मानना है कि नैतिक उपदेशों से भरी किताबें बच्चे नहीं पसंद करते। पुस्तक, जिसका प्रस्तुतीकरण तत्काल जिज्ञासा जगाने वाला और रोचक हो। भाषा सरल और बोधगम्य हो। किताब में विषयवस्तु से जुड़े करीब एक तिहाई गत्यात्मक चित्र हों तो इस प्रकार की किताबें बच्चों को भाती हैं। बच्चों में पुस्तकों के लेन-देन के क्रम में मुझे अनुभव हुआ कि बच्चों की सोच, कल्पना और अनुभूति को प्रतिविम्बित करने वाली किताबें बाल पाठकों को चुम्बक की तरह खींचती हैं।

यह सुना जाता है कि बच्चों की अध्ययनशीलता का संबोध घट रहा है। यह सच है। देखने में आ रहा है कि आम परिवारों में बड़ों में ही पढ़ने की रुचि समाप्तप्राय है, फिर बच्चे पुस्तकों से दोस्ती की प्रेरणा कहाँ से लें? पहले टेलीविजन था ही नहीं। दो-चार प्रतिशत लोगों के पास बमुश्किल रेडियो हुआ करते थे। पढ़े-लिखे परिवारों में पुस्तक पढ़ने का प्रचलन था। गाँव में चौपाल और अलाव के इर्द-गिर्द किस्से-कहानियों की दुनिया आबाद रहती थी। इस तरह सहज ही बच्चों की दुनिया में साहित्य का संचरण हो जाता था। बच्चे साहित्य की तलाश में पुस्तकों की दिशा में बढ़ते थे, किन्तु यह कड़ी अब टूट चुकी है। जब बड़े ही साहित्य से विमुख हैं तो वे बच्चे के लिए अच्छी किताबें घर लायेंगे, यह हम कैसे मान लें ?

अन्ततः ले-देकर बात विद्यालयों पर आ जाती है। यहाँ कम ही ध्यान दिया जाता है कि बच्चे पाठ्येतर पुस्तकों में रुचि लें। आज के समय में किताबों की प्रतिद्वन्द्विता टेलीविजन से है। टेलीविजन अधिकतर घरों में उपलब्ध है और बच्चों के मनोरंजन का साधन बन चुका है। फिलहाल इसका बाल-जीवन में इतना जबरदस्त हस्तक्षेप है कि यह बच्चों की सोच, व्यवहार, जीवन शैली, मासूमियत-हर कहीं गलत ढंग का परिवर्तन ला रहा है। पश्चिमी देशों में तो हालात और भी खराब हैं, इसलिए वहाँ भी बच्चों को पुस्तकों की तरफ लौटाने के प्रयास चल रहे हैं। पुस्तकों

को फोकस में लाने के लिए यूनेस्को द्वारा बाकायदा सन 1995 में 23 अप्रैल की तारीख 'विश्व पुस्तक दिवस' को समर्पित की जा चुकी है।

आज की तारीख में बच्चों को पठन-पाठन की आदत से जोड़ना बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य बन चुका है। विशेष रणनीतियों द्वारा ही बच्चों के अन्दर किताब पढ़ने की ललक पैदा की जा सकती है। सीधे-साधे बच्चों तक किताब पहुँचाकर किसी सकारात्मक परिणाम की आशा व्यर्थ है। सबसे पहले यह होना चाहिये कि बच्चे किताबों के प्रति आकर्षित हों। इसके लिए मैं विद्यालय में उपलब्ध पुस्तकें एक कमरे में प्रदर्शित रूप में रखवाता था। रस्सी पर टंगी या मेज पर फैलाकर रखी पुस्तकें बच्चों की नजर खींचती हैं। खासकर ऐसी किताबें जिनके मुखपृष्ठ के चित्र गतिशील अवस्था में होते हैं। इस कमरे में कहानी सुनाई जा सकती है। कविता पाठ कराया जा सकता है। श्यामपट्ट पर पुस्तकों के शीर्षक लिखकर उन्हें खोजकर लाने के लिए कहा जा सकता है। इससे बच्चे पुस्तकों के पास जायेंगे, उन्हें छुयेंगे, और पलटेंगे। पुस्तक लाने पर उसके चित्र को आधार बनाकर बच्चों से बातचीत करना एक अच्छा तरीका है बच्चों को पुस्तक के प्रति संवेदित करने का। यह हिरन क्यों भाग रहा है? घात लगा रहा भेड़िया क्या खरगोश को दबोच लेगा? भागते चोरों को गाँव वाले पकड़ पायेंगे या नहीं? जैसे सवाल बच्चों में किताबों के प्रति ललक तो बनायेंगे ही, उनके भाषा-विकास और अभिव्यक्ति क्षमता के लिए भी कारगर होंगे। कुछ बाल पुस्तकों में भाषा नहीं होती, सिर्फ चित्रों से कहानी कही गई होती है। इन किताबों में कक्षा एक और दो के वे बच्चे भी रुचि ले सकते हैं, जो पढ़ना लिखना नहीं जानते। ये अपने अनुभव और सोच से कहानी का घटनाक्रम जोड़ते हैं। यह बच्चों की कल्पनाशीलता और तार्किकता को बढ़ती है। पुस्तक रखने का यह कमरा बच्चों का मनोरंजन कक्ष बन जाता है। बस निरन्तरता, सजगता और धैर्य की जरूरत होती है। दरअसल किसी कमरे में किताबें प्रदर्शित कर देने या दो-चार कविता-कहानी सुना देने मात्र से बच्चे इसे नहीं पसन्द करने लगेंगे। सुगमकर्ता की भूमिका में आये अध्यापक को यह कार्य चुनौती में लेना पड़ता है और विधिवत् चार-छह माह तक प्रयास करने के बाद ही परिणाम की उम्मीद बनती है।

मैं इस मामले में लोककथाओं का वाचन करता था। कहानी पूरी होने के बाद बच्चों से, यदि ऐसा न हुआ होता तो . . .जैसे सवाल करता। बच्चे अपने अनुभव बताते। इन कहानियों में आए पशु-पक्षियों का अलग-अलग ग्रुपों से चार्ट पर चित्रांकन कराता और दीवार पर टँगवाता था। यह गतिविधि बच्चों के लिए रोचक और प्रतिस्पर्द्धापूर्ण होती थी। बच्चों में प्रश्नों के जवाब और चित्रांकन के लिए होड़ लग जाती थी। पढ़ने में एक समर्थ बच्चे के साथ दो न पढ़ने वाले बच्चों को बैठाकर पुस्तकों का उपयोग करना भी सार्थक युक्ति है। बड़ा बच्चा अपने से छोटों को पढ़कर सुनाये, चित्र दिखाये और उस पर चर्चा करे। इस स्थिति में पढ़ने वाला बच्चा गरिमाबोध महसूस करता है और छोटे बच्चे कहानी सुनने के साथ-साथ स्वयं पढ़ने की किंचित् प्रेरणा भी ग्रहण करते हैं। अध्यापक कहानी सुनाये तो 'राजा-रानी' शब्द आने पर बच्चे आक्छी करें और पशु-पक्षियों के नाम आने पर ताली बजायें।इस प्रकार की गतिविधि करवाना कहानी सुनने का मजा कई गुना बढ़ा देती है। लय और अभिनय के साथ कविताओं की प्रस्तुति तथा कहानी पर आधारित 'रोल प्ले' भी बच्चों को साहित्य से जोड़ने में मददगार होता है।

पुस्तकों का रखरखाव, कटने-फटने पर लेई से चिपकाने, घर ले जाने के लिए किताबें निर्गत करने का काम भी अपेक्षाकृत समझदार बच्चों से लेना चाहिये। यह उन्हें गरिमापूर्ण लगता है। पढ़ी जाने वाली किताबों पर बच्चों से चर्चा करना एक और तरह की गतिविधि है। कौन सी किताब अच्छी लगी? कौन किताब नहीं ठीक लगी ? क्यों. . .? जैसे सवालों से जो निथर कर आयेगा, उससे हमें बच्चों की रुचि का पता चलेगा। हम यह आधार लें कि बचपन में हम यह पसन्द करते थे। इसलिए आज के बच्चों को भी अच्छा लगेगा। यह एक भ्रामक सोच है। समय और परिवेश के हिसाब से रुचि परिवर्तित होती है। इस परिवर्तन को भाँपने का यह कारगर उपाय है। कभी-कभी यह भी होता है कि कोई पुस्तक, कहानी या कविता सारे बच्चों को भा जाती है। इससे पता चलता है कि यह सही अर्थों में बाल रुचि और बाल मनोविज्ञान को ध्यान में रखकर तैयार की गयी सामग्री है।

देखने में आया है कि बच्चों के नाम पर प्रकाशित होने वाली काफी सामग्री बाल साहित्य के मानक पर खरी नहीं उतरतीं। इसका प्रस्तुतीकरण नीरस और उबाऊ होता है। इसलिए बच्चे इन्हें पढ़ना पसन्द नहीं करते। बच्चों के लिए पुस्तक की खरीद में सोच- समझ की विशेष जरूरत होती है। पुस्तकों में अगर बच्चों की दुनिया की झलक होगी, उसके बहुरंगी चित्रों में गतिशीलता होगी तो बच्चे इन पुस्तकों से दोस्ती करेंगे। रहस्य- रोमांच की कथायें, साहसिक अभियान, इतिहास और पुराण सम्बन्धी कहानियाँ, लोककथायें और परियों की कहानियाँ, बच्चों को खूब भाती हैं। मानवीय संस्पर्श वाली कवितायें, जीवनी, संस्मरण और चित्रकथाओं में बच्चे रुचि लेते हैं। इस प्रकार की बाल रुचि के अनुकूल साहित्य की उपलब्धता के साथ माहौल बनाया जाए तो बच्चे पुस्तकों की तरफ आकर्षित होने लगेंगे। धीरे-धीरे वे खुद ब खुद पुस्तकें पलटना शुरू करेंगे। स्वयं पढ़ने के साथ- साथ मित्रों को भी प्रेरित करेंगे- 'इसे पढ़ो', मजा आयेगा। बच्चों की पुस्तकों से दोस्ती की राह खुल जायेगी। हमें इस बात की चिन्ता नहीं करनी चाहिये कि बच्चों के हाथों में पड़कर फट जायेगी। शुरू में ऐसा हो सकता है, मगर बाद में बच्चे किताबों को लेकर अपनी जिम्मेदारी समझने लगेंगे। वैसे यह भी जानना प्रासंगिक होगा कि प्रयोग होने पर किताबों का फटना या गंदी होना सामान्य बात है। किताबों का रखे-रखे दीमक या झींगुर का आहार बन जाना या बरसाती पाने से सीलन पाकर खराब होने से अच्छा है कि बच्चे इनका उपयोग करें। यह मान लेना कि बच्चे पढ़ना नहीं चाहते हैं, मात्र अर्द्धसत्य है। बल्कि सत्य यह है कि बच्चों तक सुरुचिपूर्ण, मनोरंजक और उद्देश्यपूर्ण पठन सामग्री पहुँचाने का गम्भीर प्रयास नहीं हुआ। साथ ही घर-परिवार से लेकर विद्यालय तक उनके अन्दर सोयी पड़ी पठन-रुचि को जागृत करने के प्रेरक माहौल का अभाव रहा है। विद्यालयीय स्तर पर अब इस दिशा में प्रयास किया ही जाना चाहिये। इसकी जिम्मेदारी ऐसे समर्पित शिक्षक को सौंपी जानी चाहिये, जो कि नौकरी के बजाए अपने कार्य को सेवाभाव से करने में विश्वास रखता हो।

अभी देखने में आ रहा है कि कुछ शिक्षक, साहित्यकार और संस्थायें बच्चों में पठन-रुचि पैदा करने का प्रयास कर रहे हैं। यह एक सुखद पक्ष है।

ग्राम व पोस्ट-जासापारा
गोसाईगंज-228119
सुलतानपुर (उप्र)
chitreshsln@gmail.com

नृत्य कला ने जगाया गज़ब का आत्मविश्वास : नेहा रानी

नृत्य एक ऐसी कला है कि जिसका हर कोई दीवाना होता है, बशर्ते वह नृत्य मस्ती से भरा हुआ व आकर्षक हो। वैसे शास्त्रीय नृत्य में भी दम तो बहुत लगता है, उसके दीवाने भी बहुत हैं, किन्तु उसको समझने के लिए शास्त्रीय ज्ञान भी होना चाहिए। दूसरी तरफ भारत के राज्यों के बहुत से नृत्य ऐसे है जिनमें शास्त्रीयता कम व मस्ती अधिक दिखती है। खासकर पंजाब व हरियाणा के नृत्य। हरियाणा के अधिकतर नृत्य मस्ती भरे हैं। यहाँ के लोग खूब हँसते भी हैं तथा दिल खोलकर मस्ती में नाचना भी चाहते हैं। यही कारण है कि बहुत अधिक नियम, शर्तों में ना पड़कर महिलाएँ व बालाएँ मन व तन दोनों से खुलकर नृत्य करती हैं। जब हरियाणवी बालाएँ मस्ती में नाचती हैं तो लगता है जैसे पूरी सृष्टि झूम उठी हो। इसलिए हरियाणवी नृत्य सबको अपने साथ झूमने पर मजबूर कर देते हैं। हाँ, इतना जरूर है कि ये नृत्य करने वाली बाला या महिला पर निर्भर करता है कि वह अपने नृत्य से दर्शकों को कितना प्रभावित करती है। कई बालाओं का नृत्य इतना गज़ब का होता है कि दर्शक वाह-वाह कर उठते हैं। ऐसी ही एक छात्रा का नाम है नेहा रानी।

कैथल के चन्दाना गाँव के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की बारहवीं कक्षा की छात्रा, नेहा रानी जब नृत्य करती है तो अपने साथ दर्शकों को भी तन से ही नहीं मन से भी नचाने लगती है। वैसे तो नेहा कई तरह के नृत्य कर लेती है, किन्तु पंजाबी व हरियाणावी नृत्य में यह दक्ष है। हरियाणवी गीत-संगीत पर, हरियाणवी वेशभूषा में जब यह नृत्य करती है तो दर्शक तालियों की गड़गड़ाहट से इसका हौसला बढ़ाते हैं तथा तारीफ करने पर मजबूर हो जाते हैं। इसका एक-एक स्टैप संगीत व बोल के साथ मेल ही नहीं खाता बल्कि उनमें गज़ब का तारतम्य होता है। इसके नृत्य में ऐसा वेग है कि देखने वाले की आँखे भी घूम जाती हैं। खास बात है कि बड़ी दक्षता के साथ नृत्य करते समय इसका आत्मविश्वास कमाल का होता है। नेहा का आत्मविश्वास इसके नृत्य को चार चाँद लगाता है। नेहा को नैशनल एडवेंचर कैम्प, केरल के साथ-साथ अनेक जगह कई बार पुरस्कृत किया जा चुका है। नेशनल स्तर के साथ-साथ इसे खण्ड व जिले स्तर पर कई पुरस्कार मिल चुके हैं। हरियाणा के शिक्षामन्त्री रामबिलास शर्मा भी इसके नृत्य की प्रशंसा कर चुके हैं। उनसे यह छात्रा सम्मानित हो चुकी है। खण्ड शिक्षा अधिकारी, जिला शिक्षा अधिकारी व गाँव की सरपंच बिमला देवी, शिक्षा विभाग के कार्यक्रम अधिकारी रामकुमार के साथ-साथ केरल के मोहम्मा गाँव की पंचायत ने भी नेहा को सम्मानित किया है। शिक्षा विभाग के पूर्व संयुक्त निदेशक राजीव प्रसाद भी इसके नृत्य की प्रशंसा कर चुके हैं।

नृत्य के अलावा नेहा की रुचि संगीत सुनने, अच्छी पुस्तकें पढ़ने तथा कोई रचना लिखने में है। नेहा ने प्रकृति, समाज, सामाजिक बुराइयों पर कई कविताएँ लिखी हैं। देखिये नेहा की एक कविता 'माँ' के कुछ अंश -

माँ तेरे अहसानों का बदला,
कई जन्मों तक चुका ना पाऊँ,
ना दिखे जब तू कुछ पल तो,
सोचती हूँ, कहां मैं जाऊँ,
स्वार्थी हूँ इसलिये रब से माँगती रहती हूँ
कि अगले जन्म में मैं बस तेरा ही आँचल पाऊँ।

हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग के कार्यक्रम अधिकारी रामकुमार ने नेहा के बारे में कहा कि यह छात्रा एक दिन बड़ी कलाकार बनेगी। नृत्य करते समय इसका आत्मविश्वास भी सकारात्मक ऊर्जा बिखेरता है जो अच्छी बात है।

नेहा अपनी सफलता के लिए अपने माँ-बाप कर्मजीत कौर व ऋषिपाल, प्राचार्य सुरेश सिंघला, डीपीई रामगोपाल सैनी, अनुराधा व ममता मैडम का आशीर्वाद व मार्गदर्शन मानती है। नेहा का लक्ष्य अच्छी डांसर बनने के साथ-साथ सीए बनने का है।

डॉ.ओमप्रकाश कादयान
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
एमपी रोही
जिला- फतेहाबाद

खेल-खेल में सिखाएँ विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

आओ, विज्ञान से करें दोस्ती शृंखला के अंतर्गत आपको कुछ और मजेदार विज्ञान गतिविधियों के बारे में बताया जा रहा है। पाठ्यक्रम आधारित विज्ञान गतिविधियों में अब हम प्रयोगशाला उपकरणों का कुछ कुछ प्रयोग करना भी शुरू करेंगे ताकि बच्चों को विज्ञानकक्ष के उपकरणों का भी पता चल सके। जिसमें हम सबसे पहले सूक्ष्मदर्शी के बारे में जानेंगे। बच्चों को सूक्ष्मदर्शी का ज्ञान हो जाना बहुत आवश्यक होता है। बच्चों को सूक्ष्मदर्शी के प्रति बहुत उत्साह भी होता है। तो आइए देखते हैं इस कड़ी की कुछ अगली गतिविधियाँ।

1. तैरता निम्बू

बच्चे इस प्रयोग को देखकर बहुत हैरान हुए हैं जब उन्हें पता चला कि दोनों निम्बू लगभग एक जैसे हैं और एक निम्बू पानी में तैर रहा है जबकि दूसरा निम्बू पानी में डूब गया। बच्चों ने निम्बू को बदलकर देखा तो भी जो निम्बू पहले गिलास में डूब रहा था वह दूसरे गिलास में तैरने लगा। बच्चों को इतना आभास तो हो गया था कि एक गिलास का पानी पतला है और दूसरे गिलास का पानी गाढ़ा है। बच्चों को बताया गया कि इसमें एक गिलास में सामान्य जल है और दूसरे गिलास में नमक का गाढ़ा विलयन है। नमक घोलने से पानी का घनत्व बढ़ गया जिस कारण उसमें निम्बू तैर रहा है और दूसरे सामान्य पानी में निम्बू डूब गया। अब बच्चों को आर्कमडीज के सिद्धांत और उत्प्लावन बल के बारे में बताया गया। एक बच्चे ने यह गतिविधि घर पर दो अंडों के साथ की और उसने अगले दिन आकर विद्यालय में अन्य बच्चों को

अपना अनुभव सुनाया।

2. पानी पर तैरे सुई

क्या लोहे इस्पात की बनी सुई भी पानी में तैर सकती है? जवाब में हाँ सुनकर बच्चे बहुत हैरान हुए। जबकि बच्चों को बताया गया था कि लोहे की कील पानी में डूब जाती है और लोहे का बड़ा जहाज पानी में तैरता रहता है। ऐसा क्यों है? परंतु बच्चों का इस प्रश्न में कोई ध्यान नहींथा वह तो जल्दी से पानी में सुई तैरती देखना चाहते थे। एक स्टील के गिलास में पानी लिया गया और एक पेपर क्लिप को मोड़कर उसका हुक बनाया। उस हुक पर सुई रखकर सावधानी पूर्वक पानी की सतह पर सुई को छोड़ दिया तो वह सुई पानी में तैरने लगी। बच्चे बहुत हैरान थे कि ऐसा कैसे संभव हुआ। बच्चों को पृष्ठ तनाव के बारे में बताया गया। बच्चे अब गिलास में पानी की तनी हुई सतह को देखकर हैरान नहीं होते। असल में इसे सुई का तैरना न कह कर सुई द्वारा पानी की सतह के पृष्ठ तनाव को न भेद पाना कहना ज्यादा उचित होगा। बच्चों ने घर पर जाकर इस प्रयोग को करके देखा और पानी पर सुई में तैराने में कामयाब हुए।

3. विद्युत परिपथ

विद्युत परिपथ बनाना हर बच्चे के लिए जरूरी होता है। कक्षा छह में बच्चे के लिए विद्युत परिपथ का बनाना एक बहुत बड़ा कारनामा होता है। इसलिए बच्चों को विद्युत परिपथ बनाना सिखाया गया। एक शुष्क सेल, एक प्लास्टिक चढ़ी सुचालक तार का टुकड़ा और एक टॉर्च का विद्युत बल्ब। बच्चों को कहा गया कि तीनों सामान

के द्वारा विद्युत् बल्ब को जलाकर दिखाइये। बच्चों ने तार के दोनों सिरों और बल्ब को इधर उधर से जोड़कर अंत में बल्ब को दीप्त कर दिया। इसके लिए उन्हें कक्षा के बच्चों द्वारा करतल ध्वनि के पुरस्कार से नवाजा गया। बच्चे बहुत खुश थे कि उन्हें विद्युत् परिपथ बनाना आ गया। इस गतिविधि को सीखने के बाद बच्चों ने घर पर जाकर पाठ्यपुस्तक में देखकर विद्युत परिपथ बनाया। उन्हें विद्यालय में लेकर आए व कक्षा में बाकी बच्चों को भी दिखाया। उन्होंने उसमें एक सेफ्टीपिन जोड़कर उसमें स्विच भी लगाया। बच्चे बहुत खुश थे कि उन्हें विद्युत परिपथ बनाना आ गया।

4. पंखा चला और भागी कार

बात विद्युत परिपथ पर ही नहीं रुकी। बच्चे कुछ और भी बड़ा परिपथ बनाना चाहते थे तो उन्हें बताया गया कि हम एक साबुनदानी जैसी डिबिया के दोनों तरफ कुल

चार पहिए लगाकर और एक विद्युत मोटर, शुष्क सेल व सुचालक तारों के द्वारा एक पंखे से चलने वाली कार बना सकते हैं। बच्चों को ब्लैक बोर्ड पर उसका चित्र बनाकर समझाया गया। एक बच्चे ने अपने खिलौनों (हेलीकॉप्टर) में से सामान निकाल कर कर तोड़-फोड़-जोड़ विधि का प्रयोग करते हुए चित्र अनुसार एक गाड़ी बनाई, जिसमें पंखा चलने पर वह भागती थी। बच्चे जानना चाहते थे कि ऐसा कैसे होता है तो बच्चों को ही बताया गया कि आप ही बताइए कि यह क्यों चलती है। एक बालक ने सामान्य प्रेक्षण से अंदाजा लगाया कि इसको हवा धकेलती है। बच्चों ने हैरानी से मेरी तरफ देखा तब मैंने उन्हें बताया कि महान वैज्ञानिक न्यूटन के तीसरे नियम क्रिया-प्रतिक्रिया बल इस के चलने में लागू होता है। पंखा हवा पीछे की तरफ हवा फेंकता है उतना ही बल आगे की तरफ लगता है। जिससे यह गाड़ी आगे की तरफ चलती हैं। फिर बच्चों को दिवाली के रॉकेट के ऊपर जाने का विज्ञान भी समझाया गया।

5. हारबेरियम फाइल और स्क्रैप बुक बनाई।

कक्षा 6, 7, व 8 की विज्ञान पाठ्यपुस्तकों में स्क्रैपबुक बनाने के लिए बहुत सारी गतिविधियाँ दी गई हैं। बच्चों को छुट्टियों के कार्य में स्क्रैप-बुक बनाने के लिए कहा गया, जिसके अंतर्गत बच्चों को पहले से ही लिखवा दिया गया कि उन्हें अपने स्क्रैप-बुक में क्या-क्या लगाकर लाना है। एक बच्चे ने एक पूरी स्क्रैप-बुक बनाई जिसमें उसने विभिन्न पौधों की पत्तियाँ लगाईं। जबकि बच्चों को केवल 5 पौधों की पत्तियाँ लगाने के लिए कहा गया था। उस बच्चे ने पूरी स्क्रैप-बुक पत्तियों के नमूनों को लगाकर ही तैयार की। उसने स्थानीय उपलब्ध अधिकांश पौधों की पत्तियाँ अपनी स्क्रैप-बुक में लगाईं। उसने अखबार की कई तहें लगाईं व उन तहों के बीच में पत्तियाँ रखकर पत्तियों को शुष्क कर लिया। 2 इंच चौड़ी सेलो टेप से पत्तियों को स्क्रैप-बुक पर पूरा कवर कर चिपका दिया। बच्चे को बताया गया कि इस प्रकार पत्तियों को इकट्ठा करने की विधि को हारबेरियम फाइल बनाना कहते हैं। बाकी बच्चों ने प्लास्टिक, पक्षियों के पंख, धागे, कपड़ों के टुकड़े, कागज के टुकड़े, पॉलिथीन के प्रकार, धातुओं व मिश्र धातुओं, दाल, अनाज, मसाले, बीज इत्यादि विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को अपनी स्क्रैप-बुक में नमूनों के रूप में स्थान दिया। बच्चों को पहले एक स्क्रैप-बुक दिखा दी गई थी जो गत वर्ष के बच्चों ने बनाई थी। जिसे देखकर बच्चे सीख गए और बहुत से बच्चे स्क्रैप-बुक बना कर लाए और बाकी बच्चों ने भी प्रयास किया।

6. पत्ती के रंध्रों को जानो

कक्षा 6 में ही बच्चों को सूक्ष्मदर्शी से जरूर परिचित करा देना चाहिए। मैं हर वर्ष अप्रैल और मई महीनों में

ही बच्चों को सूक्ष्मदर्शी की गतिविधियाँ जरूर कराता हूँ। सबसे पहले रंध्र यानी स्टोमेटा की स्लाइड बनाना सिखाया जाता है। बच्चे अपने हाथ से टेम्प्रेरी स्लाइड बनाना सीख गए। बच्चों को उनकी पाठ्यपुस्तक में रंध्र का चित्र दिखाया गया और रंध्र के कार्य बताए गए फिर बच्चों ने रंध्र की स्लाइड बनाकर सूक्ष्मदर्शी से उसे देखा। बच्चों ने स्लाइड में दिखने वाले रंध्रों की तुलना अपनी पाठ्य पुस्तक में बने हुए रंध्र के चित्र से की तो उनके चेहरे पर खुशी साफ झलक रही थी। पत्ती में नग्न आँख से न दिखाई देने वाला अंगक हमें सूक्ष्मदर्शी से दिखाई दे रहा है। बच्चों को सबसे अधिक आनंद सूक्ष्मदर्शी के द्वारा देखने में आया। उन्होंने अपने घर जाकर बताया कि हमने आज सूक्ष्मदर्शी से देखा। सभी विज्ञान अध्यापकों से अनुरोध है कि वह बच्चों को सूक्ष्मदर्शी के बारे बताएं और सूक्ष्मदर्शी के द्वारा उपलब्ध परमानेंट स्लाइड्स अवश्य दिखाएं। पाठ्यक्रम की स्लाइड्स रंध्र, चिक सेल, प्याज की झिल्ली की स्लाइड्स बनाना भी जरूर सिखाएं।

7. साइफन

शीतल पेय की खाली बोतल में पानी भरकर, उसे एक हाथ से ऊपर उठा लेते हैं। उसमें एक प्लास्टिक पाइप का एक सिरा डालकर दूसरे सिरे को तेजी से बाहर निकाल कर नीचे लटका देते हैं। हम देखते हैं कि पाइप में से पानी अपने आप चलने लगता है और वह तब तक

चलता रहता है जब तक पाइप की दूसरे सिरे तक पानी रहता है। बच्चे इस गतिविधि को देखकर बहुत हैरान हुए कि पानी अपने आप कैसे चलने लगा। अब बच्चों को बताया गया कि यह साइफन के कारण निकलता है। पानी निकलने की इस विधि को साइफन कहते हैं। साइफन न्यून कोण पर मुड़ी हुई नली के रूप का एक यंत्र होता है, जिससे तरल पदार्थ एक पात्र से दूसरे में निचले स्तर में पहुँचाया जाता है। पानी इस तरह से न निकले तो हम बाहर वाले सिरे को मुँह में डालकर थोड़ा सा पानी पीछे की ओर खींचते हैं और छोड़ देते हैं तो पानी चलने लग जाता है। बच्चों ने साइफन की गतिविधि को करके देखा और घर पर भी करके देखा। बहुत से बालक जो ग्रामीण पृष्ठभूमि के थे, उन्होंने बताया कि हमारे यहाँ बड़े ड्रम में से डीजल छोटी केन में पाइप के द्वारा ऐसे ही निकाला जाता है। हमने इस गतिविधि का प्रयोग पहले देखा हुआ है। लेकिन हमें पता नहीं था कि इसे साइफन कहते हैं।

फिर मिलते हैं अगले अंक में नई गतिविधियों के साथ।

विज्ञान अध्यापक एवं विज्ञान संचारक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कैम्प
खंड जगाधरी, जिला यमुनानगर

क्या आप जानते हैं?

प्यारे बच्चो,

आपने देखा होगा कि चमगादड़ रात्रि के अँधेरे में भी उड़ सकते हैं। क्या आप जानते हैं कि वे अंधेरे में कैसे उड़ लेते हैं, अगर नहीं तो आइये मैं आपको बताती हूँ -

चमगादड़ रात्रि में पराश्रव्य ध्वनि उत्पन्न करके एक निश्चित दिशा में उड़ते हैं। यदि उनके उड़ने की दिशा में अवरोध है तो उस अवरोध से यह पराश्रव्य ध्वनि टकराकर लौटती हैं । टकराकर लौटने वाली इस पराश्रव्य ध्वनि को चमगादड़ सुनते हैं। इस से उन्हें पता चल जाता है कि आगे अवरोध है। इस प्रकार अवरोध का पता चलने पर वे अपनी गति की दिशा बदल लेते हैं। इस प्रकार चमगादड़ रात्रि के अँधेरे में भी उड़ सकते हैं।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

- तुम्हारी यामिका दीदी

पहेलियाँ

1.कुत्ते अथवा चमगादड़ ही, इस ध्वनि को सुनपाते।
इसके कारण प्राण जानवर, अपने रहें बचाते।।
2.प्रति सैकिंड दोलनों वाली, संख्या क्या कहलाती।
थोड़ी मुश्किल हल कर देते, हट्र्ज में मापी जाती।।
3.रोधक वह पदार्थ होता है, जो आवेश रोकता।
एक उदाहरण बोलो इसका, देखें कौन सोचता।।
4.'तड़ित' नाम आकाशीय, बिजली का होता जानो।
इससे रक्षा कौन करे वह, यंत्र जरा पहचानो।।
5.रेशम के कपडे से जब छड़, काँच की रगड़ी जाए।
कहो कौन आवेश फटाफट, है छड़ पर तब आए।।
6.एबोनाइट छड़ बिल्ली की, खाल से रगड़ें जब-जब।
बोलो तो आवेश कौन-सा, पैदा होता तब-तब।।
7.है आवेश कौन-से जिनमें, होता है प्रतिकर्षण।
सोच-समझकर उत्तर देना, हो खुशियों का वर्षण।।
8.पास कौन-से आया करते, बोलो तो आवेश।
मिलजुल कर काटें जीवन को, छोड़ें सारा क्लेश।।
9.मैं जीने के लिए जरूरी, डोला करती हूँ मुस्काई।
तुम्हें ऑक्सीजन दूँ पूरी, पड़ती नहीं मगर दिखलाई।।
10.ठोस रहूँ मैं गैस रहूँ मैं, कभी-कभी बन तरल बहूँ मैं।
घर की मैं ही करूँ धुलाई, पीने की भी बात कहूँ मैं।।

उत्तर - 1.पराश्रव्य 2.आवृत्ति 3.चारकोल 4.तड़ितचालक 5.धन 6.ऋण 7.सजातीय 8.विजातीय 9.हवा 10.पानी।

- डॉ.घमंडीलाल अग्रवाल
सेवानिवृत्त अध्यापक, शिक्षा विभाग हरियाणा

अंतरराष्ट्रीय दिवस

प्रश्न-1) अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस कब मनाया जाता है?
उत्तर- 8 मार्च को
प्रश्न-2) अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण दिवस कब मनाया जाता है?
उत्तर- 5 जून को
प्रश्न-3) अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस किस दिन मनाया जाता है?
उत्तर- 10 दिसम्बर को
प्रश्न-4) अंतरराष्ट्रीय दिव्यांग दिवस कब मनाया जाता है?
उत्तर- 3 दिसम्बर को
प्रश्न-5) अंतरराष्ट्रीय स्वास्थ्य दिवस कब मनाया जाता है?
उत्तर- 7 अप्रैल को
प्रश्न-6) अंतरराष्ट्रीय उपभोक्ता अधिकार दिवस मनाया जाता है?
उत्तर- 15 मार्च को
प्रश्न-7) अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस दिवस मनाया जाता है?
उत्तर- 2 अक्टूबर को
प्रश्न-8) अंतरराष्ट्रीय ओजोन दिवस कब मनाया जाता है?
उत्तर- 16 सितम्बर को
प्रश्न-9) अंतरराष्ट्रीय जल संरक्षण दिवस मनाया जाता है?
उत्तर- 22 मार्च को
प्रश्न-10) अंतरराष्ट्रीय पृथ्वी दिवस कब मनाया जाता है?
उत्तर- 22 अप्रैल को

प्रेषक-
रमेश कुमार,
प्राथमिक अध्यापक,
राजकीय प्राथमिक पाठशाला बुंगा
ज़िला- पंचकूला

जैसे को तैसा

एक स्थान पर जीर्णधन नाम का बनिये का लड़का रहता था। धन की खोज में उसने परदेश जाने का विचार किया। उसके घर में विशेष सम्पत्ति तो थी नहीं, केवल एक मन भर भारी लोहे की तराजू थी। उसे एक महाजन के पास धरोहर रखकर वह विदेश चला गया। विदेश से वापिस आने के बाद उसने महाजन से अपनी धरोहर वापिस माँगी। महाजन ने कहा-- वह लोहे की तराजू तो चूहों ने खा ली।

बनिये का लड़का समझ गया कि वह उस तराजू को देना नहीं चाहता। किन्तु अब उपाय कोई नहीं था। कुछ देर सोचकर उसने कहा- कोई चिन्ता नहीं। चूहों ने खा डाली तो चूहों का दोष है, तुम्हारा नहीं। तुम इसकी चिन्ता न करो।

थोड़ी देर बाद उसने महाजन से कहा--मित्र! मैं नदी पर स्नान के लिए जा रहा हूँ। तुम अपने पुत्र धनदेव को मेरे साथ भेज दो, वह भी नहा आएगा।

महाजन ने अपने पुत्र को उसके साथ नदी-स्नान के लिए भेज दिया। बनिये ने महाजन के पुत्र को वहाँ से कुछ दूर ले जाकर एक गुफा में बन्द कर दिया। जब वह महाजन के घर आया तो महाजन ने पूछा- मेरा लड़का कहाँ है?

बनिये ने कहा- उसे चील उठा कर ले गई है।

महाजन ने कहा -यह कैसे हो सकता है? कभी चील भी इतने बड़े बच्चे को उठा कर ले जा सकती है?

विवाद करते हुए दोनों राजमहल में पहुँचे। वहाँ धर्माधिकारी ने बनिये से कहा- इसका लड़का इसे दे दो। बनिया बोल- महाराज! उसे तो चील उठा ले गई है।

धर्माधिकारीने कहा - क्या कभी चील भी बच्चे को उठा ले जा सकती है?

बनिये ने कहा - प्रभु! यदि मन भर भारी तराजू को चूहे खा सकते हैं तो चील भी बच्चे को उठाकर ले जा सकती है। धर्माधिकारी के प्रश्न पर बनिये ने अपनी तराजू का सब वृत्तान्त कह सुनाया। बनिये ने गलती मान कर तराजू दे दी और उसे अपना बच्चा भी वापिस मिल गया।

-पंचतंत्र से

होली

सबसे प्यारा लगता मुझको
होली का त्यौहार
लाल, गुलाबी, नीले, पीले
रंगों भरी बहार

बच्चों की टोली आई है
गलियों में है शोर
ऐसा लगता घूम रहे हैं
रंग-बिरंगे मोर

नाचे गाए, धूम मचाए
उड़ता लाल गुलाल
कपड़े सबके नीले, पीले
नारंगी हैं गाल

पिचकारी में रंग भरा है
झट से दिया उड़ेल
सबके मन को बड़ा सुहाता
ये होली का खेल

सुनीता काम्बोज
संत लौंगोवाल अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान
लौंगोवाल, जिला- संगरूर, पंजाब

जैसे संस्कार वैसा जीवन

आज हम आधुनिकता की चकाचौंध में अपनी संस्कृति एवं सभ्यता को भूलते जा रहे हैं। यह हमारे लिए चिंता का विषय है। आज के भौतिक युग में हम शिष्टाचार एवं नैतिकता को तिलांजलि देते जा रहे हैं, जबकि इन मूल्यों का हमारे जीवन में अहम योगदान हैं। बिना अच्छे संस्कारों के हम एक अच्छे नागरिक की कल्पना नहीं कर सकते, क्योंकि अच्छे संस्कार ही बच्चे को आगे चलकर देश का अच्छा नागरिक बनाते हैं।

आज जब देश की युवा पीढी को देखता हूँ तो मन बेचैन हो जाता है क्योंकि आज के आधुनिक युग में युवा पीढ़ी में नैतिकता और शिष्टाचार की कमी है। मन में सदैव एक सवाल उठता हैं कि इसका जिम्मेदार कौन है? आज हम पूरा दोषारोपण बच्चों पर लगा रहे हैं, यह उचित नहीं है क्योंकि इसके जिम्मेदार हम हैं। क्या कभी हमने मनन किया कि आज हमारे बच्चों में संस्कारों की कमी क्यों आ रही है? एक ही जवाब होगा कि आज हम आधुनिकता की चकाचौंध में अपने बच्चों को अच्छे संस्कार नहीं दे पा रहे हैं। आज भारतवर्ष के परिदृश्य को देखते हैं तो मन और व्यथित हो जाता है, क्योंकि हमारे देश के युवा अपने मार्ग से भटक रहे हैं। क्या हमने कभी सोचा कि इसका मूल कारण क्या है? इसका सरल व सीधा जवाब है कि हम अपने बच्चों में अच्छे संस्कारों के माध्यम से राष्ट्रीयता की भावना पैदा नहीं कर पा रहे हैं।

आज हर माँ-बाप अपने बच्चों को यह कहता हुआ पाया जाता है कि बेटा! गृहकार्य कर लिया, परीक्षा कैसी हुई? कितने अंक आएँगे? आदि। हम उनको यह नहीं समझाते कि बेटा! जीवन में शिक्षा ही सब कुछ नहीं बल्कि अच्छी पढ़ाई के शिक्षा के लिए अच्छे संस्कार भी अति आवश्यक हैं।

आज जब बच्चों के भारी-भरकम बैग को देखते हैं तो बड़ा आश्चर्य होता है कि उसमें सिर्फ अंक प्राप्त करने वाली कीमती पुस्तकें तो होती हैं मगर अच्छे संस्कार पैदा करने वाली एक भी पुस्तक नहीं होती। आज बच्चों के हाथ में वीडियो गेम तो होता है लेकिन वो शिक्षाप्रद कहानियों की पत्रिका नहीं होती जो कभी हमारी सच्ची मित्र होती थी। आज हमारे बच्चे मोबाइल पर फेसबुक, वाट्सअप आदि देखते तो मिल जाएँगे, लेकिन हमारी संस्कृति को महान बनाने वाली पुस्तकें, रामायण, पंचतंत्र की कहानियाँ आदि आज पुस्तकालयों की शोभा बढ़ा रही हैं। इतना होने के बाद भी हम अपने बच्चों में संस्कारों की उम्मीद करते हैं। आज यदि बच्चों को संस्कारवान बनाना हैं तो बचपन से ही उनको नैतिक शिक्षा का पाठ पढ़ाना होगा ताकि बच्चों में अच्छे संस्कार पैदा हों और भविष्य में देश के अच्छे नागरिक बनें।

आज आधुनिकता की चकाचौंध में हम इतने पागल हो गए हैं कि हमें बच्चों की पढ़ाई के अतिरिक्त कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है। यह हमारे लिए बड़ा घातक है, क्योंकि इससे कहीं न कहीं हम अपने बच्चों के साथ अन्याय कर रहे हैं। यदि आज हम अपने बच्चों को अच्छे संस्कार नहीं दे पाए तो भविष्य में हमारी युवा पीढी सच्चाई व ईमानदारी का रास्ता भूलकर अपनो को ही भूल जाएगी।

जब मैं बच्चों के सर्वांगीण विकास की बात करता हूँ तो सर्वप्रथम संस्कारों को सर्वोपरि रखता हूँ क्योंकि एक सांस्कारिक बच्चा ही जीवन में बुलंदियों को छूता है। यदि बच्चे में बचपन से ही अच्छे संस्कार पैदा किए जाएँ तो वह अपने माता-पिता, गुरुजन एवं बड़ों का आदर करते हुए देश के निर्माण में अपना योगदान देगा।

मैं आधुनिकता के खिलाफ नहीं हूँ। मैं तो यह चाहता हूँ कि आधुनिकता की चकाचौंध में बहकर अपनी संस्कृति को न भूलें। इसलिए मेरा मानना है कि यदि बच्चे को नैतिक शिक्षा का पाठ पढाया जाए तो बच्चा संस्कारवान एवं एक नेक इंसान बनेगा। संस्कार से ही बच्चे का साक्षात्कार होता है और इन्हीं मूल्यों के कारण वह पूरे समाज में वंदनीय बनता है। संस्कारवान बच्चा आगे चलकर आज के आधुनिक युग में अपने-आप को सफलतापूर्वक समायोजित कर लेता है। अतः यही कहूँगा कि आज के आधुनिक युग की चकाचौंध में बहकर हमें अपने संस्कारों को दरकिनार नहीं करना चाहिए।

राजेश कुमार

माइक्रोस्कोप

अर्धवार्षिक परीक्षाओं के पश्चात् विद्यालय में पीटीएम चल रही थी। सभी विद्यार्थियों के अभिभावक आकर अपने बच्चों के अंक देख रहे थे। कुछ माता-पिता अंक देखकर खुश हो रहे थे तो कुछ निराश भी लग रहे थे। नौंवीं कक्षा की छात्रा महक भी अपनी माँ के साथ आई थी। महक द्वारा परीक्षा में प्राप्त अंकों से उसकी माँ काफी संतुष्ट लग रही थी।

जब वह वापिस जाने लगी तो दरवाजे तक पहुँचकर रुक सी गई। महक वापिस आई और कहने लगी, 'मैडम, मेरी मम्मी माइक्रोस्कोप देखना चाहती हैं।'

मैं हैरान हुई और मुस्कुराकर इसका कारण पूछा। महक ने उत्तर दिया, 'जब मैंने खुद प्रयोगशाला में पहली बार माइक्रोस्कोप में छोटी-छोटी चीजों को बड़ा करके देखा तो घर जाकर अपनी माँ को इस बारे में बताया। मेरी माँ ने भी इसे देखने की उत्सुकता जाहिर की तो उनके आग्रह पर ही आज मैंने आपसे कहा है।'

उस की बात सुनकर मैंने उसे एक माइक्रोस्कोप तथा दो-तीन स्लाइडें दीं और कहा कि वह उन्हें खुद ही स्लाइड लगाकर दिखाए। माइक्रोस्कोप में स्लाइड देखकर उसकी माँ काफी खुश थीं और कहने लगीं,' मैडम जी, ये तो सच में ही बड़ा-सा दिखता है।' उनकी खुशी देखकर और बात सुनकर अन्य छात्राएँ भी प्रसन्न नजर आ रही थीं।

हरप्रीत कौर
विज्ञान अध्यापिका
राजकीय उच्च विद्यालय, जमालपुर
जिला-यमुनानगर

2019

मार्च माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

1 मार्च-	महर्षि दयानंद सरस्वती जयंती
4 मार्च-	महाशिवरात्रि
6 मार्च-	राष्ट्रीय दंत चिकित्सक दिवस
8 मार्च-	अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस
15 मार्च-	विश्व उपभोक्ताअधिकार दिवस
20 मार्च-	विश्व गौरेया दिवस
21 मार्च-	होली
22 मार्च-	विश्व जल दिवस
23 मार्च-	भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव शहीदी दिवस

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

How Haryana transformed dismal student learning outcomes in its government schools

With an aim to provide quality education in government schools, and ensure that students are 'saksham', the State government revamped its education system by figuring out ways to engage its teachers more.

Shruti Kedia

Class VII students of the government high school in Hisar II Block in Haryana are not your typical children. Why? They attend school even on Sundays! There is a renewed vigour in the air to learn, and learn well.

As her classmates rattle off multiplication tables in the background, 12-year-old Jyothi tells me,

"Earlier I knew nothing in maths. My knowledge was below that of an average seventh grader, and I had zero interest in studies. The classes weren't fun either."

Things are done a little different in this school now, with teachers ensuring no child is left without grasping concepts. In the past year, the class teachers have spent one hour every day revisiting old topics that were difficult for the children to understand. Further, they employ digital mediums using a tablet to make lessons more colourful and interesting as well.

Haryana's poor record

Haryana is witnessing a massive rural education reform. The State government is heading a unique 'Saksham Ghoshna' programme to achieve 80-percent grade-level competence (a measure of a child exhibiting learning competencies appropriate to her grade) amongst government school students by the end of 2019.

This focus on school education sharpened in Haryana when the government took into the account the

state's dismal record on that count. Says Dr. Rakesh Gupta, Director General Secondary Education, Haryana,

"If we look at NCERT's various National Achievement Survey (NAS) and ASER reports, the surveys point out that the quality of school education in the state has been going down for years. Government school teachers in Haryana are well-qualified but somehow the link is missing. Classroom studies have not been meaningful. This was the initiation point."

Through Saksham Register teachers maintain a log of a student's learning level, focusing on children who are significantly behind grade level and monitor their learning progress weekly.

In 2014, only 40 percent of all students in elementary in the government schools of Haryana were reported to be grade-level competent. The 2016 ASER report stated that in Haryana, the "learning outcomes are far below grade level for many children currently enrolled in school" across the country. As a remedial step, the Manohar Lal Khattar government initiated multiple reforms in the State Education department, which included teacher training programmes, taking into account teacher vacancy, and developing integrated data systems, among other steps.

Through multiple initiatives, the State government claims that over 65 percent students are now grade-level competent in Classes III, V, and VII, while 26 out of 81 blocks have been declared 'Saksham' (meaning capable), as assessed by third-party organisation Gray Matters.

A lesson on teachers

While the primary objective of school education is to ensure better learning outcomes for students, a majority of the students in the Indian education system remain below their grade-level competence.

While the reason for this worrying statistic is multi-layered, Deepak Kumar, Headmaster of Government Public School Kutail, in Gharaunda block, Karnal district, blames the lack of drive among teachers.

"Teachers were lazy and had zero motivation to teach. And this attitude was then reflected on students as well who were absent from school very often. At times teachers were not even aware of which chapter they were supposed to teach."

To engage parents in their child's education, Saksham PTM was initiated where parent-teacher meet (PTM) are conducted in the whole Block on one day for classes 1-8.

Teachers are also not trained well enough to perform their primary duty of teaching. Since training was only provided once every year, it was also limited in its scope and the curriculum it could cover. Teacher learning materials— textbooks, workbooks, planning diaries— usually didn't reach schools before the start of the academic year, leading to a loss of two to three months of teacher preparation time, and even teaching.

Further, teachers are burdened with administrative and non-academic tasks. In September 2018, a report by the National University of Educational

and Administration (NUEPA), highlighted that less than a fifth of a teacher's annual school hours (19.1 percent) was spent on teaching activities. Teachers spend the rest of their time thus: 42.6 percent in non-teaching core activities, 31.8 percent in non-teaching school-related activities, and 6.5 percent on other department activities.

Thus, there was a need for immediate intervention in Haryana's school education system. Adds Deepak,

"Saksham was necessary to ensure that all the teachers become active participants in the education system. Once the teacher starts to show interest in classrooms, the students will naturally become active and this will make their parents also involved."

The key focus area of Saksham Haryana in Education is to bring 80 percent school students at grade level competency in two years.

A systemic reform

The state started systemic reforms in education in 2014 and converted it into the Saksham Haryana movement in 2017 with support from Samagra. Michael and Susan Dell Foundation has been supporting the state since 2014 in these efforts. The programme carried out a detailed analysis and diagnosis to identify problem areas in the education system. Dr. Rakesh Gupta says,

"By 2017 we had understood the problem and we felt that our focus should be to enhance a student's learning outcome. We decided that there should be 'gamification' among schools. We held discussions with the teaching community to figure out ways to incorporate change and ensure that each block has at least 80 percent grade-competent students."

Students display their projects at the PTM meetings.

To drive momentum on-ground, young professionals were hired under the Chief Minister Good Governance Associates (CMGGA) to act as catalysts for systemic reform. They also coordinated education initiatives in each district, and reported directly to the CM's office.

WhatsApp, dashboards, and more

The government initially started a Learning Enhancement Programme (LEP) where teachers were told to spend the first hour of each day bridging past learning gaps. LEP manuals were distributed to all 40,000 teachers in 119 blocks of Haryana. To further support teachers, 'DigiLEP', a course shared to teachers on a WhatsApp group, was developed to train teachers on remedial teaching though an interactive audio-visual medium. To ensure that teachers are following the programme, these videos are tracked by the government to keep track of the number of downloads, number and duration of views, in order to understand the efficacy of the content.

Till date, over 77 percent of elementary schools have dedicated over 30,000 hours in training.

Regular assessments are organised in schools to understand which students need more attention and in which subjects/questions/concept.

Saksham Adhyapak, a dashboard based on competency-linked assessment was developed for teachers, to conduct student assessments six times in a year. The dashboard showed student performance in various subjects and highlighted the concepts that students were unable to comprehend, thereby informing the teacher about the child's weak areas. Dr. Rakesh Gupta says that every government school in the state gets an inspection visit at least once every two months.

"We got government officials to conduct random school inspections for academic monitoring. Earlier, inspection was limited only to monitoring the utilisation of funds and school infrastructure. We created an

academic monitoring 'pro forma,' which they need to fill for recording learning levels by randomly selecting some students to answer some questions."

And the efforts pay off

The government was certain that its programme would be successful only when every child in the State gained grade-level competence. Hence a school was given the tag of being 'Saksham' only when 80 percent of the students were found to be grade-level competent.

Reviews are monthly conducted at the district and block levels charged by Deputy Commissioners.

Education department officials in Haryana were given the freedom to nominate their block for third-party assessment. To create competition among the blocks and motivate teachers and students alike to participate in this initiative, the Chief Minister would recognise the block officials and would organise a "large scale show-and-tell event in their honour."

Further, when all blocks in a district are declared 'Saksham', the entire district is also accorded the 'Saksham' status. Says Dr. Rakesh Gupta,

"Within one year of the campaign's launch, 26 out of 81 blocks assessed have been declared 'Saksham', with 18 other blocks missing the target just by a whisker."

The Chief Ministers office directly oversees the implementation of the programme at the block level itself.

Till date, six rounds of assessments have been done and a seventh round of assessment in government schools is due later this month. The Haryana government now prepares to announce Saksham Ghoshna across its 119 blocks, and Dr. Rakesh Gupta is confident that this feat can be achieved within the coming few years.

"We now look forward to extending this programme to other grades like Class IV, VI, and VIII students. Our aim is to achieve excellence in education where each child who writes their board exam within the next three to four years is at par with their peers in private schools."

https://yourstory.com/socialstory/2019/02/haryana-transformed-student-learning

shruthikedia@gmail.com

HOW JHAJJAR BECAME HARYANA'S FIRST SAKSHAM DISTRICT

Saksham Haryana is an initiative run by the Chief Minister's Office aiming at making 80% of the students in Haryana's government schools grade level competent. Saksham is an initiative which emphasizes competency based teaching and students are assessed on the basis of mastering competencies rather than marks. An independent 3rd party agency is invited to assess the students of any given block. Students from classes 3, 5 and 7 are assessed on a sample basis. It is believed that when a student achieves 80% of the competencies, he becomes Saksham. Similarly, if 80% of the students of a class achieve grade level competencies, then it becomes a Saksham Class and so on. When 80% of the students assessed in a block reach grade level competency then the block becomes a Saksham block. Similarly, when all the blocks in a district become Saksham then the district becomes Saksham.

The first round of Saksham Ghoshna took place in December, 2017 in which Matan Hail block of Jhajjar became Saksham. It was one of the two blocks of Haryana to first become Saksham. In the third round of Saksham Ghoshna which took place May, 2018 two more blocks of Jhajjar became Saksham – these were Salhawas and Beri 2. In the fourth round of Saksham Ghoshna, Bahadurgarh district attained Saksham status in August. In the sixth round, Jhajjar block also became Saksham in November. Thus, ensuring that all five blocks of the district Jhajjar became Saksham. Jhajjar became the first district of Haryana to attain Saksham status as a district. Behind the success of the district lies the rigorous efforts and strong leadership initiatives.

On 28th October 2017 at District Institute for Education and Training, Machhrauli, Chief Minister's Good Governance Associate (CMGGA) Ms. Nishita Banerjee conducted a workshop with all the education officers discussing the foundation of the Saksham Haryana programme. At the very onset, the district officials created nodal persons for making strategy and executing the same.

Making strategy:

The team consisting of District Education officer, District Elementary Education officer and District Nodal officer analyzed the monthly assessment test of all blocks in order to understand the current position of students in grade level competency. On this analysis, it was decided Matanhail and Beri should be nominated for third

party assessment, as these blocks were at a better position than the rest. As strategy, the team found that there was a need to create good quality resources for the teachers in terms of competency mapped assessments and question banks. In order to do this, a smaller team was set up consisting of Block Education officer, DIET officers, PRTs and TGTs

Creating leadership and incentivizing teachers:

At the very beginning the team in Jhajjar realized that in order to achieve this ambitious target, leadership had to be created at the district and block level. So, ABRCs, BRPs and D.I.E.T. faculties working in the District were appointed as mentors at cluster level and they were trained to learn how to conduct effective monitoring.It was decided by the Team Saksham Jhajjar that Block and Cluster level meetings should be organized for teachers teaching classes 3rd, 5th and 7th. District and block officers along with the core team, addressed the teachers and made them clear about each and every concept related to Saksham.

Teachers who were innovative, creative and highly dedicated were declared as 'star teachers'. A workshop of 'star teachers' were organized at Block Level in all the five blocks. Furthermore, two 'star teachers' from each cluster were encouraged to visit other schools of their clusters and support the teachers. These self motivated teachers made such visits and provided academic support to teachers and demonstrated how to teach specific competencies.

A team of Saksham Mentors including ABRCs, BRPs, DIET Faculties and Principals was been created for mentoring of schools. All the members of this team were highly motivated, skilled and technology friendly. This team was trained for Saksham Mentoring. Most members of the team burnt midnight oil for this project i.e. Manoj Bhatia, Rajbir Dahiya, (Principals) Meena, Dr. Geeta Chhillar, Rakesh Jakhar, Sameer, Neelam, Promila, Sushila, Sandeep, Virender, Sanjay, Monia (ABRCs/BRPs)Diljeet Singh, Jitender Malik, Sunil Kumar, Devender, Nirmal, Satnarayan, Rajiv Deswal(DIET Faculties) This team has a great contribution in making Jhajjar the first Saksham District of Haryana.

Driving momentum:

Each month District Review Meetings are organized under the chairmanship of the Deputy Commissioner Ms. Sonal Goel. Her guidance fueled the momentum of the district team as well. Each point related to Saksham was discussed in great detail especially the bottom performing schools. On the same pattern, SDM Review Meetings are being held at sub-division level too. These meetings were highly beneficial in identifying the focus areas for betterment. The alignment and leadership of senior officers like Deputy Commissioner Sonal Goel, Additional Deputy Commissioner Sushil Sarwan, SDMs - Jagniwas, Vijay Malik, Rohit Yadav, Ashwani Kumar and Rohit Narwal boosted this momentum. The Deputy Commissioner Sonal Goel has quoted, " हमारा जिला सक्षम हो या नहीं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, हमारे बच्चों का स्तर ऊपर उठ रहा है और उनमें सुधार हो रहा है, इसलिए बस ईमानदारी से अपने काम में लगे रहो ". Each of the these officers has adopted some schools and made regular visits. It created a lot of awareness among the teachers, students and parents.

Motivation has great power and it proved itself in Jhajjar. At the district level, many activities are organized to promote the Saksham Program under the leadership of our Deputy Commissioner, such as Saksham Marathon, Saksham based painting, rangoli, declamation. Debate and poem recitation competitions. All these activities inspired the stakeholders of Saksham Project and a conducive environment was created. At the state level, the leadership of Dr. Rakesh Gupta, Project Director CMGGA and Director General of Secondary Education, through monthly video conferencing and discussion of progress infused energy in us.

Preparing the district

Pre assessments were conducted on the competency mapped and multiple choice questions format. This attempted to replicate the GMI pattern so that children could get familiarized with the format of the examination. The results were analyzed in great detail by core team. Special attention was paid

to poor performing schools and weaker competencies. This helped us improve our performance in every round. It also helped us prepare for the six rounds of Saksham Ghoshna.

At the end of every round, we also received a detailed report by GMI. For instance in Round 5 which was conducted in September 2018, Jhajjar block underwent Saksham Ghoshna and was unable to become Saksham. The GMI report showed us, that only 66% of the sampled children from class 3 were grade level competent in Maths. We used this report to further strengthen our weaker areas. In Round 6 which was conducted in November 2018, 93% of the sampled children from class 3 became grade level competent in Maths. This improvement was only possible due to the data driven strategy adopted by the district team.

In order to support the districts, the Saksham Haryana Cell (SHC) also released some codified best practices like Saksham Register, Saksham PTM, Saksham Abhyaas and Saksham Lakshaya. By incorporating this in the district strategy, we were able to boost our performance.

Using Information and Communication Technology:

Information and Communication Technology was effectively used at each level in the district. WhatsApp groups of teachers and officers were created at district, block, cluster and school level through which information, practice material and best practices were shared.

After the visit of the school, the mentor and monitor has to update the findings of the visit on a Google Form on a daily basis. A report from this Google Form was prepared and submitted to the Saksham Jhajjar group by Mr. Sudarshan Punia. Everyday a report was analyzed and on the basis of it the officials conducted the school inspection. Sudarshan Punia, who was working as a lecturer in District Institute for Education and Training, Machhrauli, was appointed as the Nodal Officer for Saksham Project. For his efforts, he was nominated and declared as the Saksham officer of the week in December, 2018.

There is a great synergy and harmony among all the stakeholders involved in the Saksham Haryana initiative in District Jhajjar. The success achieved by the district in becoming Saksham, cannot be credited to one person but it is due to the efforts and hard work of the hundreds of government officials and teachers on the ground. We are now also supporting other districts by sharing our best practices in order to make all 22 districts of Haryana, Saksham.

Saksham Haryana Cell

Enlighten the greatness hidden inside you...

Dr. Himanshu Garg

Man is the maker of his destiny. Are great men born or are they created? To become great it is not necessary that you are a member of a rich or royal family. All you need is to have determination to succeed and do something which the world will follow and remember you for the rest of time.

Once there was a loving couple living in a village. They had a son who was in foreign country. He sent money for his parents. The couple was very kind and helpful. As the time grew, the old man began planting trees and his wife began watering those trees. They served the entire village with their work. They planted a number of trees providing shade and edible items like fruits and vegetables. The villagers were often surprised why they were planting trees when they would not live to see the trees grow. They replied, "We are planting for our future generations". Soon the old lady died. After her death, the old man was bed ridden but he had all the villagers who were ready to look after him. Unable to bear the loss of his beloved wife the old man also died. The whole village mourned on the death of the two great people. A women took the old woman as the role model and began watering the trees of the village. Many men of that village also followed what the old man had done. The village became a very green place with a lot of fruit trees. Soon the whole village became a mini forest and a cool place where villagers could easily grow crops. It appeared as a little paradise on Earth. The village became a visiting place for weekends. The villagers constructed a huge memorial in the memory of that couple for the travellers and a stone with their name placed on the entrance of the village. Every person of that village remembered and gave respect to both of them. The place which was dry and barren got an amazing look because of that couple.

A simple question arises in my mind. The question is- What makes an ordinary person great? Do you know the answer? Turn the pages of history. You will get the answer that great people never know that they would become great some day. Their great job made them so. When any person whether he is rich or poor, healthy or sick, male or female, married or unmarried,serves society, the person becomes great. Being a great personality is a virtue which is given to all.

Asstt. Professor, Jind
Himanshujind@yahoo.com

Here comes the sun(set): It puts children to sleep and affects global educational outcomes

Maulik Jagnani

Emerging out of the British Empire in the mid-20th century, India reckoned a single time zone would serve as a unifying force, and adopted the Indian Standard Time across her territorial boundaries. However, India spans roughly 30° longitude, corresponding with a two-hour difference in average solar time from east to west. This article provides evidence that arbitrary clock conventions – by generating long-term differences in sleep – influence the geographic distribution of educational attainment levels.

Each evening the sun sets more than 90 minutes later in west India than in the east of the country. This is because time on clocks across India is set to Indian Standard Time, regardless of location. In China all clocks are set to Beijing Time, which means in western part of the country the sun sets three hours later than the east of the country. The sun sets at least an hour later in Madrid than in Munich because

Franco's Spain switched clocks ahead one hour to be in sync with Nazi Germany in 1940, even though Spain is geographically in line with Britain, not Germany. Similarly, for a range of historical reasons, clocks in large parts of the planet – for example, France, Algeria, Senegal, South Sudan, Russia, and Argentina – are set to be ahead of their (solar) time. Therefore, these places see the sun set later in the day. In my job market paper (Jagnani 2019), I provide the first evidence that these arbitrary clock conventions – by generating large discrepancies in when the sun sets across locations – help determine the geographic distribution of educational attainment levels.

School-age children in locations that experience later sunsets attain fewer years of education due to the negative relationship between sunset time and sleep, and the consequent productivity impacts of sleep deprivation. The non-poor adjust their sleep schedules when the sun sets later; sunset-induced sleep deficits are most pronounced among the poor, especially in periods when households face severe financial constraints. Because education is both a driver of economic growth and a means to reduce income inequality (Barro 2001), these results imply sunset time associated with geographic location may contribute to persistent poverty and worsening inequality.

Sunset time, sleep, and education production

As the sun sets and the sky grows darker, the human brain releases melatonin, a hormone that facilitates sleep (Roenneberg and Merrow 2007). Yet social norms or policy choices at the federal or state level – for example, start times for school and work – may dictate wake-up times that do not covary with sunset time (Hamermesh et al. 2008). As a result, children sleep less in locations exposed to later sunsets. If sleep is productivity-enhancing

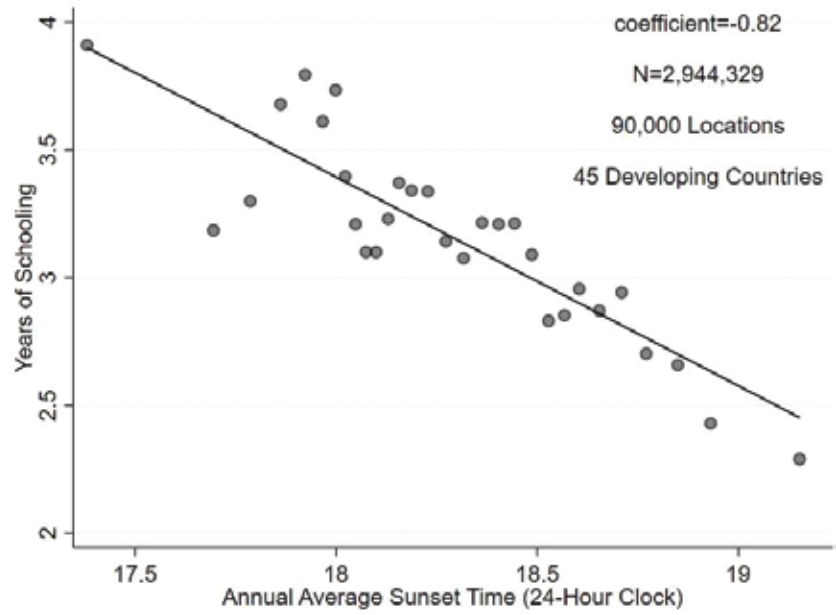

Figure 1. Annual average sunset time and years of schooling for 6-16 year olds across the developing world
Notes: Data on years of schooling is obtained from nationally representative surveys conduted by the Demographic and Health Survey (DHS).

(Lim and Dinges 2010), later sunset may directly, adversely, affect children's learning.

However, the consequent effect of later sunsets on educational attainment is ambiguous; how children trade-off sleep with other time uses may have multiplicative or compensatory effects on education production. If sleep makes study effort more productive, later sunset may not only reduce sleep but also make studying less effective, decreasing study time. Conversely, later sunset (more daylight after school) might make it easier for children to self-study in the evening, especially in lower income countries where electricity access is intermittent. Moreover, child labour is common in lower income countries. Therefore, any complementarities between sleep and study effort may also depend on the marginal increase in children's labour productivity with respect to sleep.`

Children exposed to later sunset sleep less, study less, and attain fewer years of schooling

I use the 1998-99 Indian Time Use Survey (ITUS) to evaluate the effect of later sunset on children's time use (Jagnani 2019). ITUS provides 24-hour time use data, collected with less than a 24-hour recall lapse, allowing me to assign each observation a district-date sunset time. My baseline econometric specification exploits seasonal variation in daily sunset time at the district level, after controlling for fixed district-specific characteristics as well as seasonal confounders common across all districts in the sample.

I show that an hour (approximately two standard deviations)1 delay in sunset time reduces children's sleep by roughly 30 minutes: when the sun sets later, children go to bed later; by con-

trast, wake-up times are not regulated by solar cues. Sleep-deprived children decrease productive effort: later sunset reduces students' time spent on homework or studying, as well as child labourers' time spent on formal and informal work, while increasing time spent on indoor leisure for all children. This result is consistent with a model where sleep is productivity-enhancing and increases the marginal returns of study effort for students and work effort for child labourers.

Next, I examine the consequent 'lifetime' or long-run impacts of later sunset on stock indicators of children's academic outcomes. I use nationally-representative data from the 2015 India Demographic and Health Survey (DHS) to estimate how children's education outcomes co-vary with annual average sunset time across eastern and western locations within a district. I find that an hour (approximately two standard deviations) delay in annual average sunset time reduces years of education by 0.8 years, and children exposed to later sunsets are roughly 25% less likely to complete primary and middle school. I show that an hour delay in annual average sunset time also reduces school enrolment by 20%, and decreases math test scores by 0.6 standard deviations.

Generalisability?

To argue that these results are generalisable, I use data from China and Indonesia. Unlike ITUS, the 2004-2009 China Health and Nutrition Survey collects data on children's time use for a 'typical' day of the year, and not for a particular date. I use cross-sectional2 variation in annual average sunset time across districts within a state. In line with my India estimates, an hour delay in annual average sunset time reduces children's sleep by roughly 30 minutes. To corroborate the effects of later sunset on children's academic outcomes, I use the 2003 Indonesia DHS, employing a sharp regression discontinuity design3 that exploits time zone boundaries in Kalimantan, Indonesia. I find that an hour delay in annual average sunset time reduces years of schooling by 0.7 years, quite similar to my India estimate.

Poverty helps explain why families fail to adjust their sleep schedules on later sunset days

The timing of natural light is determined by time zones and is therefore predictable across locations and seasons. If sleep is important for productivity, why don't households adjust their sleep schedules in response to later sunset, or simply get on a consistent sleep schedule regardless of sunset time, minimising the resulting human capital impacts? Do financial or psychological considerations associated with poverty help explain why families fail to adjust their sleep schedules when the sun sets later?

To test this hypothesis, I examine heterogeneous (diverse) impacts of later sunset on sleep by correlates of poverty (example, education, average monthly expenditure) in India. The negative effect of later sunset on sleep is at least 25% larger among low socioeconomic status (SES) households compared to high SES households.

To evaluate whether this heterogeneity truly reflects the influence of poverty, I restrict the sample to crop cultivator households, and exploit quasi-experimental variation in wealth around the harvest period, comparing the effect of later sunset on sleep in the month before harvest, when crop cultivator households are poorer and typically liquidity constrained, with the month after harvest, when richer and more financially liquid. Because harvest calendars vary across seasons and locations, I also control for all fixed differences between time periods and districts. For individuals with formal morning start time constraints – school-age children from crop cultivator households – pre-harvest poverty explains about a quarter of the effect of later sunset on sleep. But for individuals that don't have formal work start time constraints – adults from crop

cultivator households – the entire effect of later sunset on sleep is driven by the period when the household is poor (pre-harvest).

Policy options: Time zones, later school start times, and social protection programmes

Back of the envelope estimates suggest that India would accrue annual human capital gains of over US$4.2 billion (0.2% of GDP (gross domestic product)) if it switches from the existing time zone policy to the proposed two time zone policy: UTC+5 (Universal Time Coordinated) for western India and UTC+6 for eastern India, where western (eastern) India includes districts to the left (right) of 82.5°E, and the meridian passing through 75°E (90°E) defined as its central meridian.

However, there may be benefits associated with the synchronisation of daily schedules across the country (Stein and Daude 2007), and one must be cautious about proposing changes to the existing time zone policy without a thorough cost-benefit analysis. Therefore, I also explore two other policy interventions that may mitigate the effects of later sunset on children's education outcomes: (i) later school start times, and (ii) social protection programmes. I find suggestive evidence that later school start times allow children to compensate for later bedtimes by waking up later and attenuate the effect of later sunset on schooling outcomes. Meanwhile, each additional year of exposure to a conditional cash transfer programme, MNREGA4 (Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Act), mitigates the effect of later sunset on children's test scores by roughly 5%.

This article first appeared on the World Bank Blog:https://blogs.worldbank.org/impactevaluations/here-comes-sunset-it-puts-children-sleep-and-affects-global-educational-outcomes

Notes:

- Standard deviation is a measure that is used to quantify the amount of variation or dispersion of a set of values from the mean value (average) of that set.
- Cross-section refers to data at a specific point in time.
- Regression discontinuity design is a technique used to estimate the effect of an intervention when the potential beneficiaries can be ordered along a cut-off point. The beneficiaries just above the cut-off point are very similar to those just below the cut off. The outcomes are then compared for units just above and below the cut off to estimate the treatment effect.
- MNREGA guarantees 100 days of wage-employment in a year to a rural household whose adult members are willing to do unskilled manual work at state-level statutory minimum wages.

https://www.ideasforindia.in/topics/human-development/here-comes-the-sunset-it-puts-children-to-sleep-and-affects-global-educational-outcomes.html

"Reprinted with permission from 'I4I' Ideas for India (www.ideasforindia.in)"

Cornell University
mvj22@cornell.edu

Examinations- A part of Life

Shivani

"It's not the stress that kills us, it is our reaction to it" – Hans Salye

Examinations are part and parcel of academic life. Mild examination stress is natural and sustainable, but too much of it certainly reduces effectiveness, hampering performance in examination simultaneously creating health problems among students like depression, phobia, headache, loss or change in sleep, loss of concentration and sense of restlessness etc.

Few of the important predisposing factors for exam stress include family pressure, emotional immaturity, peer pressure, poor self image and negative thoughts. Such a situation definitely effects the family environment and increases the responsibility of parents who have to handle their ward to avoid its effects on health and also to regularly search out remedies to prevent exam stress.

Exam anxiety is experienced by many students and may include excessive worry, fear of being evaluated, apprehension about consequences etc. The major areas that contribute to such anxiety are lifestyle, preparation strategies and psychological factors. The importance of management of exam stress thus becomes significant and needs utmost care and intelligence in exercising the same.

Managing Exam Stress

A systematic, persistent, organised, planned and regular effort from the beginning of the academic session is the best method for any student to prevent anxiety related to exams. Confidence ensured by timely preparation for exams are quite effective ways to prevent exam stress. Certain de-stressing methods may also be adopted which are self help techniques and are straight forward and effective which can go a long way in preventing stress.

Self help Techniques- Breathing techniques, relaxation routine, physical activity, complementary therapies such as yoga and meditation, sound sleep and support groups for discussion on study topics. Avoid too much intake of tea, coffee etc.

Role of Parents- The role of parents is all the more important who should not stress on rank, marks, grade etc. and need to be positive and reassuring with regular emphasis on success. They should invariably appreciate the efforts of the children and avoid negative talks such as comparison. They should not discuss family conflicts in front of the children. A study atmosphere must be made for the child and they should always discuss alternative opportunities of career with the child. They must be caring and receptive to the problems of their child.

Role of Teachers- The teachers should also regularly teach students to treat exams as a routine and as a method of improving the performance of students. They must to suggest students to leave plenty of time to revise, develop a time-table and take short breaks during preparation. They must motivate the children and discuss their mistakes with an effort to improve them.

Some easy things to do for students – The students must know their concentration span, choose a study place with minimum distraction, repeat the learnt work, prioritise the work load and should reach the exam centre on time.

With the above approach by students, parents and teachers exam stress can be definitely prevented.

Subject Expert
SCERT Haryana
Gurugram

A Soldier

The perils that a Soldier must reckon
He knows it all very well.

He keeps our spirits soaring high,
So much so that
Our pride in his beliefs begin to swell.

The morning comes pretty fast,
We aren't prepared for the likelihood
that our Soldier may not return
home today .

Clouds of Doubt precipitate and
colour my consciousness grey Alas !

I want to believe secretly
though in my heart ,
Heart that wishes with
might and strength
He will be back , Sure he will.

And slap that crazy disbelief of the mind
Put it to Rest and hope ...
Hope with all the stars in counting

He will be home safe for
a greater cause ,
To begin again from where he left !!

Our Soldier is unassailable,
He can swallow paper
if that is what is needed
in the hour.

He's not afraid of adversity
He braves notorious elements
undeterred .

Looks at death with grace .
Fearlessly
bound by duty
Bears bullet on his chest
Ensures safety of birds in nest

If there is anything we must
say to a Soldier,
It should be nothing of
praise or of sympathy

He does not need it .

Heart felt gratitude is the least,
We can offer to his being.
He doesn't need flowers
Or songs,

Is it too much to ask for
the price that he pays
not only he puts his
life in jeopardy
there are lives interwoven ,

Let us see and hear with a heart
Not merely eyes and ears .

We all must thank our Soldier
for being that valiant one.
We are very proud here today ,
you did us so .

Anju Kalra Sethi

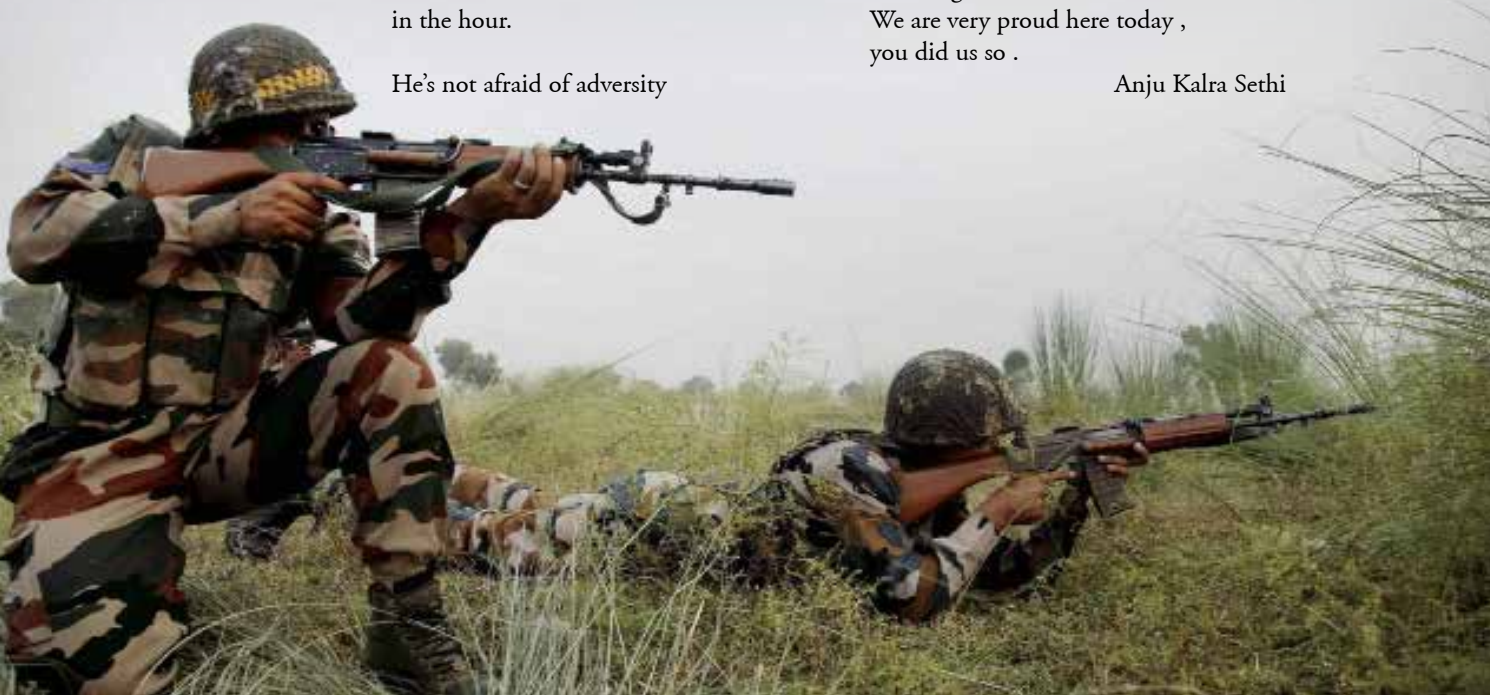

What are the benefits of Soorya Namaskar (Sun Salutation) in Yoga?

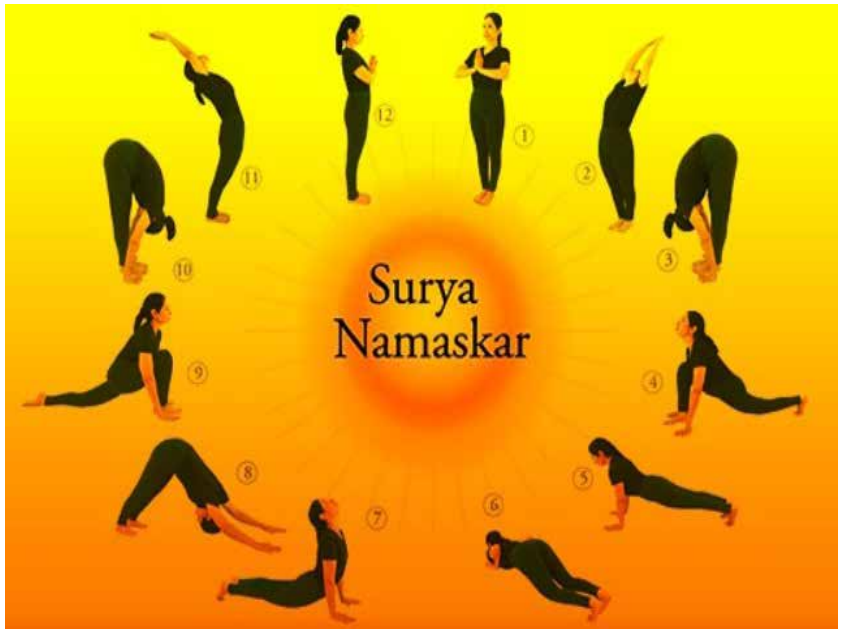

Snigdha Biswas

As quoted in The Bhagwad Gita, "Yoga is the journey of the Self, through the Self, to the self". When a person is practising yoga asanas, or postures, he/she is in a direct connection with the soul. Giving time to your body increases the quality of life you are living. The field of yoga is very vast as there are end number of postures and asanas for end number of body related issues. One such asana or pose is Soorya Namaskar (Sun Saluation). There are various benefits of Soorya Namaskar which can completely transform our body.

Soorya Namaskar: The Basics

Offering prayers and bowing towards the sun is a time old practice in our country. Soorya Namaskar is basically a complete work out for the body. Also, it is the way to offer gratitude towards the sun, our source of life. There are 12 postures in Soorya Namaskar. These postures are well designed to sync the solar cycle with the physical cycle to maintain a level of receptivity and vibrancy.

Soorya Namaskar: Health Benefits

Weight Loss- If you manage to practice all the postures at a fast pace, all the abdominal muscles get stretched out, that aids in losing weight around the belly area. All the abs are toned while practicing Soorya Namaskar

Lower Body- The pranamasana in Soorya Namaskar, which is the first and last pose (prayer pose) works on your lower body as it strengthens legs, feet and ankles. It even reduces flat feet. Also, this pranamamudra asana requires you to fold both your hands in the Namaste position. It has a scientific angle that when you fold both your hands close to your heart, the right and left hemisphere of your brain are connected together.

Fit, Flexible and Fabulous- The 12 diverse poses of Soorya Namaskar is a complete workout that it is beneficial for the entire body. These poses stretch, strengthens and enhance the fitness level of your body, thereby giving you a fit, flexible and a fabulous body; provided you practice on a regular basis.

Glow and Shine- Well not only on our body, but the diverse poses of Soorya Namaskar can also do wonders on your skin and hair as well. The circulation of blood in each and every part of the body helps in making your skin glow and hair shiny, thereby slowing down the ageing process. The reason for this is that as you inhale and exhale actively while performing the asanas, oxygenated fresh blood helps to flush out the toxins which helps in the effective functioning of your entire body.

Cure Thyroid- The entire Soorya Namaskar process helps in curing thyroid levels in your body. If you practice Soorya Namaskar daily, and increasing the number of sets day by day, you will find that your thyroid levels are improving and you are getting more active and energetic.

So, it is quite obvious that saluting the sun first thing first in the morning can cure many body related ailments. Blood sugar, thyroid, functioning of lungs and heart, ageing, upper body, lower body, abs, thighs, and lot more can be cured by performing Soorya Namaskar.

https://careguru.in/article/yoga/what-are-the-benefits-of-soorya-namaskar-in-yoga/5764

Aerial Yoga: The latest way to stay strong, flexible and happy

Madhushree

Aerial Yoga is the latest in the fitness section that is being loved by the majority of the enthusiasts. It involves an entire body workout. In fact, it can be considered as the distant relative of bodyweight training. This is the perfect conglomeration of traditional Yoga, dance, Pilates, hammock, etc. The yoga poses are practised in midair above the ground giving you an edge. You can easily perform certain poses that might be tough when you are on the ground.

About Aerial Yoga

The traditional asana combined with acrobatics and few dance moves performed under the supervision of a yoga trainer. The concept was introduced in New York about a decade ago in order to make the sessions quite enjoyable and more focused. After redefining the postures, the trainers found that there are various poses that can be easily performed when you are hanging in midair. The suspension enables you to reduce the stress on your muscles. You can perform the asanas more prominently.

Benefits of Aerial Yoga

Aerial Yoga is also known as Anti-gravity Yoga. Here is what you can get from the sessions of practicing this particular yoga regularly.

• Entire body workout

As mentioned earlier, Aerial Yoga is a way to avail an entire body workout via the aerial movements. Almost every body part can be stretched and involved. You will also become adept at maintaining your body balance while being suspended midair. The muscles and joints will become stronger and toned due to the defined movements in the asanas.

• Psychological effects

Like all the Yoga genres, aerial yoga is quite enjoyable. You will be able to forget all your stress and negative emotions while hanging in midair. You will also find the fun of suspending and meditating in the air. The combination of poses will also allow you to construct a strong coordination between your body muscles.

• Flexibility

There are a few poses that can be practiced perfectly when you are suspended in the air. The poses will enable you to increase your flexibility. Your core muscles will get stronger every day. The enhanced flexibility will also increase the degree of your endurance. Your spine and shoulders will become really strong as your entire bodyweight will be depending on them.

• Back problems

The desk jobs and all the 'sitting on the couch' activities hurt your back. You will find a great way to remove the stigness from your back. You will find a new strength in your vertebra. The stretching will also reduce the discomforting back issues. The hip joints and the spinal cord will be relaxed due to the easement via suspension. Your bodyweight will be shared by other joints too.

Wrapping up

You will feel that you are levitating in the midair. The midair levitation will also elevate your mood. In regular practice, you will find your inner peace. A great mood and an enthusiasm to workout will be a miracle for your overall health. Improve your strength, balance, flexibility, and endurance via the excellent benefits of Aerial Yoga.

https://careguru.in/article/yoga/aerial-yoga-the-latest-way-to-stay-strong-flexible-and-happy/4924

Amazing Facts

- **For people that are lactose intolerant, chocolate aids in helping milk digest easier.**
- Alexandre Gustave Eiffel, the man who designed the Eiffel Tower, also designed the inner structure of the Statue of Liberty in New York Harbour.
- MS-DOS was originally calle QDOS and was bought of the author by Microsoft for a small fee. The rest is history.
- Marilyn Monroe had six toes.
- The Roman emperor Commodus was at one time going to change the name of Rome to Colonia Commodiana.
- The state of Alaska has almost twice as many caribou as people.
- Another way to say "every 9 years" is Novennial.
- Using recycled aluminum cans and making news cans out of them saves 75% energy compared to making it from new material.
- Althaiophobia is the fear of marshmallows.
- Brazil is the largest producers of oranges in the world.
- 4% of an apples is made up of minerals and vitamins, and over 80% is made up of water.
- From all the oxygen that a human breathes, twenty percent goes to the brain.
- In 1902, the coat hanger was invented Albert Parkhouse who was frustrated at the lack of hooks available to hang up his coat at work. His company thought it was a good idea and patented the invention and unfortunately, Parkhouse never received any money for his idea.
- If a statue in the park of a person on a horse has both front legs in the air, the person died in battle; if the horse has one front leg in the air, the person died as a result of wounds received in battle; if the horse has all four legs on the ground, the person died of natural causes.
- The longest game of Monopoly played underwater is 45 days.
- Peaches were once known as Persian apples.
- Ninety-five percent of tropical fish sold in North America originate from Florida.
- The blackberry bush is also called the "bramble."
- The city of Tokyo was originally called Edo.
- The sun shrinks five feet every hour.
- During World War II, Kit Kat was unavailable due to milk shortages, so the chocolate bar was made without milk.
- The first TV commercial advertisement was by the Bulova Watch company on July 1, 1941. The watch company paid $9.00 for an announcement that was 10 seconds long.
- Rubber bands last longer when refrigerated.
- A common custom in Spain is to eat one grape for each of the last 12 seconds of every year for good luck.
- Bill Gates began programming computers at age 13.
- Sailors once thought that wearing a gold earring would improve their eyesight.
- The smallest bird in the world is the bee hummingbird. The bird is 2.24 inches long.
- A species of earthworm, "Megascolidesaustralis," in Australia can grow up to fifteen feet in length.
- Hannibal, who was a soldier, had only one eye after getting a disease while attacking Rome.
- The full name of the Titanic ship is R.M.S. Titanic, which stands for Royal Mail Steamship.
- Everyday approximately 35 meters of hair fibre is produced on the scalp of an adult.

http://www.greatfacts.com/

- India mines/produces 60% of the world's (what mineral?), used in hi-tech industries for its properties of insulation, transparency, and machining tolerance? **Mica** (specifically mica sheet)
- Dempo, Churchill Brothers, and Salgaocar are famous successful Indian what? **Football clubs** (association football or soccer clubs)
- Chhau, Kathak, Manipuri, Odissi, Sattriya, and Thang Ta are among India's official: Government ministries; Classical dances; Tea species; or National forests? **Classical dances**
- The hugely popular Hum Log was India's first what? **TV Soap Opera** (first broadcast 1984)
- The Indian endangered species Platanista gangetica gangetica is a: Cave bat; River dolphin; Tree spider; or Mountain tiger? **River dolphin** (the Ganges river dolphin)
- Based in Mumbai, abbreviated to RBI, what is India's central banking institution and guardian of the currency? **Reserve Bank of India**
- The oldest Sanskrit literature and Hindu scriptures are called what, meaning 'knowledge' in Sanskrit? **Vedas**
- Dainik Jagran is (at 2014) India's, and perhaps the world's, most popular: Fruit drink; Newspaper; Amusement park; or Toothpaste? **Newspaper** (a Hindi daily broadsheet - the title means loosely 'daily vigil/ watchman/signal')
- What system first emerged in India c.500BC, adopted globally over the next 2,500 years, based on three metals? **Coinage** (or less precisely, money - the three metals were and largely still are [if mainly now only the colour/ color of coins] gold, silver and copper - their relative rarity automatically determined and maintained relative values)
- Name the Indian corporation joint-venture partner in India's Virgin Mobile and Starbucks businesses? **Tata**
- The state-owned corporation re-branded simply 'Indian' (2005-11) was a major operator in which sector: Telephony; Railway; Airline; or Energy? **Airline** (merged into Air India in 2011)
- The CCI, at Dinsha Wacha Road, near Churchgate in Mumbai, established in 1933, stands for what famous sporting institution? **Cricket Club of India**
- What is India's country internet **TLD** (top level domain)? .in
- The first prime minister of India, regarded as architect of the modern Indian state, was? **Jawaharlal Nehru**
- India became independent (of British colonial rule) in: 1923; 1933; 1947; or 1952? **1947**(15 August)
- Sandeep Singh is a famously successful player and ex-national team captain in which sport, in which India traditionally excels? **Hockey** (more precisely Field Hockey)

- Prasar Bharati (at 2014) is India's major: Railway network; Public service broadcaster; National holiday; or Trade union? **Public service broadcaster**
- The modern Indian Rupee comprises 100 what? **Paisa** (plural Paise)
- Aside from English what is the official language of India? **Hindi**
- What commercial organization governed India from 1612-1858 before it became a British colony? **British East India Company**
- What is India's international telephone dialling code? **91**
- In which city is the Bollywood film industry based? **Mumbai**
- The partition of India, creating an independent India and Pakistan, was called the (Who?) Plan, after the last Viceroy of India, later assassinated by the IRA in 1979? **Mountbatten**
- The Harmandir Sahib, the Sikh spiritual/cultural centre, is known popularly in western media as what? **Golden Temple** (in Amritsar)
- What historical Indian figure is fondly called Bapu? **Mahatma Gandhi** (Bapu is Gujarati for father or papa)
- Which four of the following world religions originated in India: Hinduism, Buddhism, Islam, Jainism, Christianity, Sikhism? **Hinduism, Buddhism, Jainism, Sikhism**
- What are the new names for these older Indian city names: Bombay, Madras, Calcutta? **Bombay to Mumbai, Madras to Chennai, Calcutta to Kolkata**

https://www.businessballs.com/quiz/india-quiz/

आदरणीय संपादक जी,

नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का गतांक पढ़ने का अवसर मिला। संपादकीय हर उस विद्यार्थी के लिए प्रेरक है जो परीक्षा को सम्मुख देखकर घबरा जाता है। 'योजनाबद्ध ढंग से हो परीक्षा की तैयारी' शीर्षक के अन्तर्गत माननीय पीके दास जी के विचार हर विद्यार्थी व शिक्षक के लिए प्रेरणास्रोत हैं। परीक्षा की तैयारी के विषय में माननीय प्रधानमंत्री महोदय के विचारों को भी सार रूप में पत्रिका में स्थान दिया गया, जो पाठकों के लिए बहुत उपयोगी हैं। सुदर्शन पुनिया का आलेख ' झज्जर के सक्षम बनने की गौरव गाथा' खूब पसंद आया। सारगर्भित पत्रिका के लिए संपादक मंडल को साधुवाद।

अनिल कुमार
कार्यक्रम अधिकारी
शिक्षक शिक्षा प्रकोष्ठ
निदेशालय विद्यालय शिक्षा हरियाणा

आदरणीय सम्पादक महोदय,

सादर नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' के पिछले अंक की सामग्री, साज-सज्जा देखकर मन मयूर नाच उठा। मुखपृष्ठ से अंत तक पूरी पत्रिका में रोचकता का समावेश है। पाशा राम के लेख 'खेलों के दम पर बदल दी स्कूल की तस्वीर' पढ़कर पता चला कि कुछ कर गुजरने का जज़्बा हो तो सुविधाओं की कमी आड़े नहीं आती। जैसी सुविधाएँ नामी गिरामी निजी विद्यालय मोटी-मोटी फीसें लेकर मुहैया नहीं कराते वैसे एक राजकीय विद्यालय विद्यार्थियों को करवा रहा है। पत्रिका के अन्य लेखों के साथ-साथ लघुकथाएँ, कविताएँ, पहेलियाँ भी खूब पसंद आईं।

घमंडीलाल अग्रवाल
वरिष्ठ लेखक एवं सेवानिवृत्त अध्यापक
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

कितना अच्छा होता

कितना अच्छा होता,
अगर हम होते प्यारे पक्षी,
नील गगन उड़ते फिरते,
वाह! क्या मजा फिर आता।

कितना अच्छा होता,
देश में गंदगी के बदले,
सफाई का डंका होता,
कितना अच्छा होता।

कितना अच्छा होता,
अगर हम होती परियाँ पंखों वाली,
घूमती-फिरती लोकों में हम,
खूब मजा फिर आता।

कितना अच्छा होता,
होती मैं तितली प्यारी,
बगिया-बगिया उड़ती-फिरती,
नजारा प्यारा होता।

कितना अच्छा होता,
टीचर के हाथ में डंडे के बदले,
होता प्यारा तोहफा,
कितना अच्छा होता।

शिवानी
कक्षा-नौवीं
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, कुरुक्षेत्र

RNI NO: HARBIL/2012/52385

POSTAL REGD NO: HR/AB-102/17-19

बसंत

मिटे प्रतीक्षा के दुर्वह क्षण,
अभिवादन करता भू का मन!
दीप्त दिशाओं के वातायन,
प्रीति साँस सा मलय समीरण
चंचल नील नवल भू यौवन,
फिर बसंत की आत्मा आई!

आम्र बौर में गूँथ स्वर्ण कण,
किंशुक को कर ज्वाल वसन तन
देख चुका मन कितने पतझर
ग्रीष्म शरद हिम पावस सुंदर!
ऋतुओं की ऋतु यह कुसुमाकर,
फिर बसंत की आत्मा आई!

-सुमित्रानंदन पंत

If undelivered Please return to c/o Shiksha Saarthi Branch, 3rd Floor, Shiksha Sadan, Sector-5, Panchkula(HR)-134114